वर्ष 28 | वैशाख-आषाढ़ | मई-2023 | अंक 5 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982

पोस्टर मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

मूल्य 10/- रुपये

मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

"शासन ताहरुं अति भलुं, जग नही कोई तस सरीखुं रे,
तिमतिम राग घणो वधे, जिमजिम जुगतिशुं परखुं रे"

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन

उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक

डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय

डॉ.सुभाष जैन

46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)

मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897

1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in

2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय

प्रफुल्लकुमार जैन ''पप्पू''

1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़

इन्दौर-452009 (म.प्र.)

5057087, 5057067

मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

अपने लम्बे जीवन में मैंने कुछ ध्रुवसत्य देखे हैं। पहला यह है कि घृणा, द्वेष और द्रोहको पल-पल पर मरना पड़ता है। दूसरा यह कि सहिष्णुता से बड़ी कोई प्रीति नहीं होती है। तीसरा यह है कि अज्ञान को ही पोषण देने से मनुष्य को आज की कालरात्रि भुगतनी पड़ रही है। ज्ञान के साथ-साथ विवेक को भी पुष्ट करते चलिए, भविष्य की हर सीढ़ी निरामय होगी।

दिव्य आर्शीवाददाता

प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक

परम पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन

अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

माया पिया ण्हुसा भाया, भज्जा पुत्ता या ओरसा।
नालं तेमम ताणाय, लुप्पंतस्स सकम्मुणा॥

विवेकी पुरुष सोचे- ''माता-पिता, पुत्र-वधु, भाई-भार्या तथा पुत्र इनमें से कोई भी अपने कर्मो से दुःख पाते हुए मेरी रक्षा करने में समर्थ नहीं है।

- उत्तरा. सूत्र, 6.3

पाथेय *गहन नीरवता एवं अचल शान्ति में वे शाश्वत प्रभु होते हैं प्रगट। किंचित भी स्वयं को मत होने दो विचलित, और वे तब स्वयंभू होंगे साक्षात उपस्थित! सचमुच तुम्हें खोजने के लिये, हमें नहीं होना चाहिये व्यग्र एवं अधीर, हमें नहीं करनी चाहिए तनावयुक्त प्रयास, क्योंकि तब ये सब बनकर एक घना आवरण ढक लेता है तुम्हारा सहज शीतल प्रकाश। हे प्रभु तुम्हारे दर्शन की लालसा भी है एक मानसिक विचार, जो तुम्हारी नित्य उपस्थिति को कर देती है धुंधला एवं अस्पष्ट! अचल असीम शान्ति में, सहज सतत स्मरण में ''तुम'' हम बन जाते हो- हमसे हो जाते है एक रुप। शीघ्रता मत करो, तनाव मत झेलो, तब वे प्रभु बिन संशय, बिन विश्लेषण स्वयं को करेंगे प्रगट। तब सब कुछ जो जाएगा परिवर्तित पावन शान्ति में। और यही उपस्थिति है विश्व में सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि यही है सभी ध्यान धारणाओं में सर्वोत्कृष्टध्यान।*

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-28 वैशाख-ज्येष्ठ मई 2023 अंक-5

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय	3
2- विषय सूची	4
3- आगमोद्धारक : संस्कृति की संजीवनी (सम्पादकीय)- डॉ. सुभाष जैन	5
4- यह है हमारे गच्छाधिपति...!, एक दानी यशोदा माँ.... कर्म	6
5- पाप की सजा भारी-प. पू. आचार्य श्रीअरुणविजयजी म.सा. परिग्रह : अनर्थों के जड	7-9
6- जिन शासन की स्थापना : मानवमात्र के लिये कल्याणकारी	10
7- श्री गुरु गौतमस्वामी आदि गणधर दीक्षा दिवस एवं चतुर्विध संघ-शासन स्थापना दिवस	11-12
8- गण एवं गणधर	13-14
9- जंबुद्वीप संरक्षक जैनाचार्यश्री अशोकसागर सूरीजी महाराजा-धैर्यचन्द्रसागर	15-16
10-एक अद्भूत श्रुतवीर-मुनिविजयजी महाराज, गुलामी से आजादी की रचना	17-19
11-पीपल को क्यों पूजा जाता है, इसके औषधीय गुण.... धर्म बीज	20
12-श्री सुनक्षत्र मुनि का दृष्टांत, सफलता का सूत्र : धैर्य	21-22
13-कर्मो का खेल-राजगढ़	23
14-श्री वर्धमान विद्या साधना की कुछ बातें....	24
15-अपने माता-पिता का सम्मान करने के 35 तरीकें, लक्ष्य की स्थिरता	25
16-ताश के पत्तों का गणित...!, सिद्धशिला के स्वामी सिद्ध भगवान.... अजर अमर निरंजन निराकार....	26
17-जीवन की कुछ सच्चाईयां....!	27
18-तीर्थो की तारणहारता बनाये रखें.... - नैनमल सुराणा	28
19-ताड़ पत्र पर जैन ग्रंथों को हजार वर्ष तक सहेजने का काम चल रहा है जैन भंडार नासिक में- शान्तिलाल सगरावत , अच्छे मेहमान, सार में सार	29
20-वर्गपहेली- 336 - जयंतीलाल जैन,रतलाम	30
21-ज्ञान गंगोत्री- 336-आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा.	31
22-शासन-समाचार	32-41
23-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है	42

संपादकीय

आगमोद्धारक : संस्कृति की संजीवनी

वर्तमान *में जब शक्ति सत्ता और अहंकार का खुला खेल खेला जा रहा है, पापकर्मो की अभव्यता और प्रभागिता सिद्ध हो रही है, भौतिक एषणाओं के यज्ञ आयोजित हो रहे है। तात्कालिक लाभ के लिये घनिष्ठ से घनिष्ठ संबंधों को भी ताक पर रखकर अपना मतलब साधने की कला का चारों ओर विस्तार दिखाई देता है। पाश्चात्य सभ्यता के प्रति दिवानगी और अन्धानुसरण करने की होड़ सी लगी हुई है, तुमसे ज्यादा मैं की तर्ज पर कहने के स्थान पर करने का युवाओं ने बिड़ा उठा रखा है। विनाश काले विपरीत बुद्धि के अर्थ को न समझने वाले लोग किस ओर भागे चले जा रहे है, इसका उन्हें भी अंदाज नहीं है और जब समझ आती है तब समय और सब कुछ बीत चुका होता है।* ***ऐसी विपरीत परिस्थति हमारे मनोमस्तिष्क के द्वार पर सत्य को समझने की शक्ति देने और अध्यात्म की दस्तक के द्वारा गलत सोच विचार और व्यवहार को रोकने का काम आगमोद्धारक पत्रिका करती है। आगमोद्धारक कलुषित आत्मा को परिवर्तित करने का एक वैचारिक आंदोलन है।***

आगमोद्धारक श्रीसागरजी महाराजा जैसे आलोक पुरुषार्थ पुंज महापुरुष, महर्षि के नाम को सार्थकता प्रदान करने में प्रयासरत है आगमोद्धारक धर्म के प्रति रुचिवान और ज्ञान के इच्छुक पाठक के साथ उन सबके लिये अधिक उपयोगी और पठनीय है जो विपरीत विचारधारा के प्रति आकृषित होते है, ऐसे अनेक युवाओं के जीवन के लिये आगमोद्धारक,आत्मोद्धारक बन गई है। यह निष्कर्ष आगमोद्धारक का अध्ययन करनेवालों से प्रतिक्रिया में हमें प्राप्त होते रहते हैं। सत्यशोधक के रुप में आगमोद्धारक संस्कृति के लिये संजीवनी का कार्य ही नहीं कर रही है अपितु क्या बालक, क्या युवा, क्या श्राविका, क्या श्रावक सभी के लिये विध्वंस होते जीवन और धर्म मूल्यों के प्रति गहरी आस्था और विश्वास जाग्रत करने का महत्ता काम कर रही है, यही कारण है कि आगमोद्धारक में प्रकाशित सारस्वत लेखनी लोगों को सही मार्गदर्शन प्रदान कर जीवन संवारने का काम भी कर रही है।

आगमोद्धारक के माध्यम से हम जीवन को उत्कर्ष्ता की ओर ले जाने के साथ चिंतन की मौलिक अभिव्यक्ति को प्रकट करने का काम भी कर रहे है हम विज्ञापन से पृष्ठ काले करने के स्थान पर आगमोद्धारक को पाठकों की मदद से वर्तमान और भावी पीढ़ी के लिये भी शब्दों के माध्यम से उज्जवल आध्यात्मिक और धर्म ज्ञान के सात्विक स्पर्श का आनंद प्रदान करवाना चाहते है। संबंध क्षरण के वातावरण, आधुनिकता का आड़ में, समय के अभाव का बहाना बनाकर अपने धर्म-संस्कृति और परिवार की कीमत नहीं समझने की विपरीत परिस्थितियों जब जीवन में युवाओं और वृद्ध सम्मानित लोगों के जीवन में जहर जैसा घुल गया है तब आगमोद्धारक एकता जुड़ाव, समर्पण और सहदयता का संदेश देकर आपके लिये एक मार्गदर्शक और प्रेरणा प्रदान करनेवाली शब्दों की आवाज है। कहा गया है कि- यह दुनिया स्वर्ग बनाने के लिए रची गई है लेकिन हम है कि इसे नर्क बनाने से नहीं चुकते है, पृथ्वी पर जन्म लेनेवाले प्रत्येक व्यक्ति का यह दायित्व है कि- वह उसे जन्नत बनाये यह दुनिया जन्नत बन सकती है, यदि हमने सात्विक विचारों का पोषण किया और उनको जीवन से आचरित किया तो पृथ्वी स्वर्ग बन सकती है। आगमोद्धारक इन्हीं सात्विक विचारों के प्रचार प्रसार के माध्यम से अपना योगदान धर्म और समाज को देने के लिये तत्पर बनी है।

भारत भर से लोगों के पत्र आते है और मैं लोगों से सुनता भी रहता हूं, आगमोद्धारक की प्रशंसा के बारे में, जैन जगत के लिये आगमोद्धारक एक प्रेरणा स्त्रोत पत्रिका बन गई है, हम शुद्ध सात्विक धार्मिक और जीवन निर्माण करने वाले आलेखों के माध्यम से टीवी वाट्सअप और इन्टरनेट के युग में भी एक मिशन के रुप में आप तक आगमोद्धारक को पहुंचा रहे है। *उच्च आदर्श और सिद्धांतों का प्रतिपादन कर प्रत्येक माह एक अंक पूर्ण होते ही दूसरे की तैयारी आरंभ हो जाती है, कड़ी मेहनत कर आप तक आगमोद्धारक पहुंचे इसमें हमारे गुरु भगवंतों का मंगल आर्शीवाद काम कर रहा है।*

वैचारिक पत्रिका के रुप में सांस्कृतिक मूल्यों को स्थापित करना एक बड़ा कठिन काम होने के साथ पाठकों के दिलों में स्थान बनाना और भी कठिन है, अच्छे लेखों आगमोद्धारक से लोगों का जुड़ाव बढ़ा है, इसका कारण यह है कि हम सकारात्मक एवं सृजनात्मक लेखों से ऊंचाईयों पर चढ़ रहे है। विरोधात्मक व्यक्तिगत व्यंगात्मक कटाक्ष आलोचना और नकारात्मक विचारों को स्थान नहीं देते है, हर व्यक्ति में अच्छी छवि देखने से हमारा नजरिया भी अच्छा होता है, यह सोच आगमोद्धारक की लोकप्रियता व पसंद का कारण है, हर माह आगमोद्धारक का पाठकों को इन्तजार रहता है, यह परिवार का अंग बन गई है, हम चाहते है कि आप भी आगमोद्धारक को आपके परिवार का सदस्य बना ले, यह कर लेने के बाद आपको अहसास होगा कि आगमोद्धारक से मित्राता बहुत पहले हो जानी चाहिये थी।

आईये ! एक ज्ञानवान व्यक्ति बनने के लिये और परिवार का वातावरण धर्म और शांतिमय बनाने के लिये, ऊर्जावान महसूस करने के लिये आगमोद्धारक को अपने जीवन का अंग बनाये। यही शुभेच्छा !

-डॉ.सुभाष जैन

यह है हमारे गच्छाधिपति...!

ये एकमात्र ऐसे महापुरुष है जिनकी दीक्षा मध्यरात्रि को 1.30 बजे हुई थी। यही महापुरुष है जो जन्म से पटेल होने के कारण 14 वें वर्ष में पहली बार नवकार सुना, 18 वें वर्ष में पहली बार गुरु भगवंत के दर्शन किये और 19 वें वर्ष में दीक्षा लेने के लिए वैराग्यवासित बने। यही एकमात्र महापुरुष (वर्तमान में) है जिन्हें रजोहरण आगमोद्धारक श्री आनंदसागरजी महाराज ने प्रदान किया था।

यही एक मात्र महापुरुष है जिन्होंने दीक्षा के बाद प्रथम बार राई प्रतिक्रमण किया था। ये अकेले ऐसे महापुरुष है जिन्होंने आधी रात में भागकर दीक्षा ली और आधी रात में अकेले ही 67 किलोमीटर का पहला विहार तुरन्त किया। यह एक मात्र महापुरुष है जिन्हें दीक्षा से लेकर बड़ी दीक्षा तक कई दिनों तक उपाश्रय में छिपा कर रखा गया था क्योंकि पटेल समुदाय का दीक्षा का घोर विरोध था। यही एक मात्र महापुरुष है जो दीक्षित होने पर केवल नवकार मंत्र और करेमि भंते इन दो सूत्रों को जानते थे और दीक्षा के बाद सामान्य ज्ञान और क्रिया के बारे में सब कुछ सीख लिया। यह एक मात्र महापुरुष है जिन्होंने 12 दिन में पंचप्रतिक्रमण, 6 दिन में 6 कर्मग्रंथ, 1 दिन में दशवैकालिक सूत्र, 6 दिन में उत्तराध्यन सूत्र, 8 दिन में आचरंग सूत्र, 36 घंटे में नवस्मरण, एक दिन में वीतराग स्त्रोत जैसे कंठस्थ कर लिए थे। यह एकमात्र महापुरुष (वर्तमान में) है जिन्होंने 45 आगमों को कंठस्थ किया था। यह एक मात्र महापुरुष है जिन्होंने जीवन भर विषमलैंगिक (साध्वीजी/बहन) का नाम शुद्ध नहीं लिखा। यही एक मात्र महापुरुष है कि जिन्होंने छट्ठ के पारणे छट्ठ पाँच विगई का त्याग कर वर्षीतप किया। यह एकमात्र ऐसे महापुरुष है जिन्होंने दीक्षा से 37 वर्षो तक प्रतिदिन खड़े-खड़े 1008 लोगस्स का काउसग्ग किया और 1008 खमासमणे दिये। 102 वर्षो के यह महान गुरुदेव आज भी जीवित हैं और हमें आर्शीवाद दे रहे है। पूज्यश्री वर्तमान में कात्रज तीर्थ- पूना में विराजमान है। पूज्य श्री सागर समुदाय के 900 साधु-साध्वी भगवंत से अधिक के गणनायक है। मुझे नाज है ऐसे सागरगच्छ में जन्म पाकर।

एक दानी यशोदा माँ....

शायद आप लोग इन्हें नहीं जानते लेकिन बहुत शीघ्र ही पूरा भारत वर्ष इन्हें जाना जाएगा.... धर्म के प्रति इनकी भक्ति -वहां त्याग के आगे हमारी सभी पूजा अर्चना छोटी रह जाती है.... मथुरा में श्री बांके बिहारी मंदिर के बाहर पिछले 30 वर्षो से मंदिर में आने वाले श्रद्धालुओं के जूते चप्पलों की रखवाली करने वाली इन माता का नाम यशोदा है.... मात्र 20 वर्ष की आयु में इनके पति की मृत्यु हो गई थी, आज माताजी 50 साल की हो चुकी है इस दौरान माताजी ने श्रद्धालुओं के जूते-चप्पलों की रखवाली करके 51 लाख 10 हजार 25 रुपये 50 पैसे इकट्ठा करके 40 लाख रुपये की रकम से एक गौशाला, मंदिर धर्मशाला का निर्माण करवा दिया ....

धर्म क्या है यह इन यशोदा माँ से जानिए....

पैसों के पीछे भागने वाले फिल्मी सितारों, नेताओं तथा खेल सेलिब्रिटिस को तो हम हमेशा शेयर करके बहुत फेम्स करते आये हैं। आईए आज हम सब मिलकर इन यशोदा माँ को भी प्रसिद्ध करते हैं ताकि सही धर्म भाव की महत्ता को सम्मान दिला सकें। धन्यवाद !

कर्म- *परिणाम की फिक्र या कल की चिंता मत करो। मन को खेद या पीड़ा हो तो वह स्वयं की कमियों का ही हो, और ये कमियां कैसे दूर हो इस ओर ही अपना ध्यान केन्द्रित करो। यह सीधी सी बात ध्यान में रखो कि -बुराई में से कभी अच्छाई निष्पन्न होने वाली नहीं और अच्छे वर्तमान में से बुरे भविष्य का निर्माण संभव नहीं। तुम केवल धर्म के धनी हो। कल के सुख या दुःख, आज किये हुए कर्म पर ही निर्भर है। तो फिर अपने मनोव्यापार और क्रिया का ही तुम विचार करो। क्या मिलेगा, और क्या नहीं, यह विचार गौण है। सत्कृत्य करते रहनेवाले मनुष्य उसके फल के संबंध में नहीं सोचते, इसलिए भविष्य की बुरी संभावनाओं के भय से वे मुक्त रहते हैं।*

पाप की सजा भारी...!

*प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

किन-पापस्थानों से कौन से कर्म बंधते है ? :-

नवतत्वकार ने पापबंध के 18 भेद प्राणातिपातादि ही बताए हैं । अतः वे ही 18 प्रकार के पापस्थान कहलाते हैं । जो अब तक पीछे वर्णन किये जा चुके हैं वे । और जो हम रोज प्रतिक्रमण में बोलते हैं वे । इन्हीं 18 प्रकार के पापस्थानों के सेवन से जिन-जिन पाप कर्मो का बंध होता है वे कर्म मुख्यरुप से 8 प्रकार के है। पापकर्म 82 रुप से उदय में आकर जीवों को दुःख देते हैं। पाप की सजा देते हैं। यद्यपि पहले बताए गए हैं तथापि पुनः स्मृति पटल पर आए इसलिए संक्षेप में तालिका से पुनः सिर्फ भेद दिखाता हूंः-

कर्मः-

चार घाती कर्म- ज्ञाना- 5, दर्शना- 9, मोहनीय- 26, अंतराय- 5, पाप प्रकृति ''सभी-सभी'' + पाप कर्म की कुल प्रकृति- 45, पुण्य की कुल प्रकृति- 45।

चार अघाती कर्म- नाम-103, गोत्र- 2, वेदनीय- 2 आयुष्य-4,

34+1+1+1=37, 37=82, 37-1+1+3=42

इस प्रकार 8 कर्म में पुण्य की सिर्फ 42 प्रकृतियां है जो सुखरुप है। जिसका परिणाम अच्छा है। जबकि इधर पाप की प्रकृतियां 82 है। इसमें चारों घाती कर्म की सभी 45 कर्म प्रकृतियां सर्व पाप प्रकृतियां है। एक भी अच्छी नहीं है। और 45 ये सभी सर्वघाती प्रकृतियां है। अतः एक बात तो निश्चित हो ही गई है कि जो भी जीव कोई भी पाप करेगा तो ये 45 पाप प्रकृतियां तो बाधेगा ही लेकिन पाप की प्रवृत्ति करनेवाला अघाती कर्म की सभी प्रकृतियां नहीं बांधेगा। क्योंकि अघाती कर्म में जो 42 जो पुण्य की प्रकृतियां है वे नहीं बांधेगा। क्योंकि अघाती कर्म में 42 जो पुण्य की प्रकृतियां है वे नहीं बांधेगा। अब रही बात पाप कर्म की। और अघाती कर्म में पाप की 37 कर्म प्रकृतियां है ये अशुभ है। नाम कर्म की 34, गोत्र की-1, वेदनीय की 1 और आयुष्य की 1 इस तरह इन 37 पाप कर्म की प्रकृतियों का उदय दुःखदायी होगा।

✻ गया हुआ एक क्षण भी वापस नहीं आता, और वह अमूल्य है, तो फिर समस्त आयुष्य-स्थिति की तो बात ही क्या है ?

कर्म-बंध-उदयः-

शुभ पुण्य कर्म-बंध 9 प्रकार से,उदय 42 प्रकार से।

अशुभ पाप कर्म-बंध 18 प्रकार से, उदय 82 प्रकार से।

इस तरह 9 प्रकार से बांधे हुए पुण्य कर्म का उदय फल रुप से जीव 42 प्रकार से पाता है और पाप कर्म बंध जीव 18 प्रकार से करके 82 प्रकार से उसका फल पाता है। अतः 18 प्रकार पापस्थानों के सेवन से, पाप प्रकृति से जीव यद्यपि आठों ही प्रकार के कर्मो का बंध करता है फिर भी किस पाप से विशेष रुप से किस कर्म का बंध होता है वह भी यहां पर देखेंः-

18 पाप स्थानक- से-	- कर्म बंध
1-प्राणातिपात (हिंसा) से-	आशाता वेदनीय, अंतराय कर्म, मोहनीय कर्म, ज्ञाना, दर्शना, नीच गोत्र, अशुभ नाम कर्म आदि नरकगति आयु।
2- मृषावाद- (झूठ) से-	ज्ञाना, दर्शना, मोह, अंतराय, अशुभ नाम कर्म, नीच गोत्र, नरक ति.आयु.गति.अशाता. वेदनीय।
3- अदत्तादान (चोरी) से-	मोहनीय, नीच गोत्र, अशाता वे. नरक-ति-गति, आयु.ज्ञाना.दर्शना. अंतराय आदि।
4-मैथुन (विषय-काम) से-	वेद. मो., मोह.... नीच गोत्र, अशुभ, नाम कर्म, अंतराय. ज्ञाना. दर्शना. आदि।
5- परिग्रह (मूर्छा) से-	मोहनीय, नीच गोत्र, दुर्गति अशुभ नाम. अंतराय, ज्ञाना. दर्शना. नरक.ति. गति और आयु. आदि.

6- क्रोध से-	कषाय मो.,अंतराय, ज्ञाना.,दर्शना, दुर्गति-अशुभ,नाम, कर्म, अशात., वेद. दुर्गति-अशुभ आयुष्य, नीचगोत्र				
7- मान से-	''	''	''	''	
	''	''	''	''	
8- माया से-	''	''	''	''	
	''	''	''	''	
9- लोभ से-	''	''	''	''	
	''	''	''	''	
10-राग से-	मोहनीय आदि आठों ही कर्म				
11-द्वेष से-	''	''	''	''	
12-कलह	क.मोहनीय कर्म, नीचगोत्र, अज्ञाता वेद				
(झगड़े) से-	क. मोहनीय, नीचगोत्र, अज्ञाता वेद, अंतराय, अशुभ नाम कर्म, दुर्गति, आशुभ आयु. ज्ञाना. दर्शना. आदि।				
13-अभ्याख्यान- (आरोप कलंक)	कषाय. मोहनीयादि सभी, ज्ञाना, दर्शना अंतराय, नीच-गोत्र, अशाता वे. दुर्गति, अशुभ आयु तथा नाम कर्म आदि।				
14-पैशून्य	''	''	''	''	
(चुगली) से-	''	''	''	''	
15- रति-अरति- (हर्ष-शोक) से	चारित्र मोह.ज्ञाना., दर्शना. नीचगोत्र				
16- परपरिवाद- (परनिंदा) से-	मोहनीय ज्ञाना. दर्शना., अंतराय, नीच-गोत्र, अशाता, वेद., दुर्गति, अशुभ, नाम और आयु. आदि।				
17- माया मृषा- वाद (दंभ) से-	कषाय, मोहनीय आदि मोह., अंतराय नीचगोत्र, अशुभ नाम तथा आयु. ज्ञाना. दर्शना, आशाता वे. आदि।				
18- मिथ्यात्व- शल्य (अश्रद्धा) से-	ज्ञाना., दर्शना. मोह.अंतराय, नीचगोत्र अशाता वेद., अशुभ नाम कर्म और दुर्गति, अशुभ आयुष्यादि आठों ही कर्म.				

इस तरह संक्षेप में आप देखेंगे कि- इन 18 ही प्रकार के पापस्थानों के सेवन से, पापाचार की इस प्रवृत्ति से जीव 8 कर्मों में से अशुभ पाप कर्म की मुख्य प्रकृतियां बांधता है। इनमें सबसे ज्यादा बंधने वाली कर्म की प्रकृतियों में यद्यपि आठों ही अशुभ कर्म की प्रकृतियों का बंध होता है फिर भी मोहनीय कर्म, का विशेष बंध सभी पापस्थान के सेवन से होता है। चारों घाती कर्म में 45 सभी घाती कर्म की प्रकृतियां जो पाप की ही प्रकृतियां है उनका बंध तो जरुर होगा और 4 अघाती कर्म की प्रकृतियों में से पुण्यकर्म की शुभ-अच्छी प्रकृतियों को छोड़कर अशुभ पाप की प्रकृतियों का बंध पापस्थान का सेवन करनेवाला अवश्य ही अवश्य ही करता है। हां कभी कौन सी ज्यादा और कोई कम, इसी तरह किसी कर्म की प्रकृति कम तो कोई ज्यादा इस तरह बंध होता है।

पाप कर्म का उदय 82 प्रकार से-

18 प्रकार से बांधे हुए पाप कर्मों की जो अशुभ प्रकृतियां बांधी है उनका जो स्थिति बंध पड़ा है उसके बीच का अबाधाकाल निकलते ही उन प्रकृतियों का उदय होगा ही और वे अशुभ कर्म की पाप प्रकृतियां अपने आप उदय में आने पर अपना फल दिखाएगी ही। ऐसी 82 प्रकार की अशुभ पाप प्रकृतियां जो 18 प्रकार के पापों के सेवन से बंधी है अतः उनका अशुभ उदय भी 82 प्रकार से ही होगा। वे इस प्रकार हैः-

नाणंतराय दसगं, नव बीए नीअसाय मिच्छत्त।
थावरदस निरयतिगं, कसायपणवीस तिरिय दुगं॥
इग बि-ति चउ जाइओ कुखगइ उवधाय हुंति पावस्स।
अपसत्थं बन्न चउ, अपढ्म संघयण संठाणा॥

- ज्ञानावरणीय कर्म की 5, दर्शनावरणीय कर्म की 9, अंतराय कर्म की 5, नीच गोत्र, अशाता वेदनीय, मिथ्यात्व मोहनीय कर्म, स्थावरदशक 10, नरकत्रिक-3, 25 कषाय, तिर्यचद्विक, ये कुल 62 प्रकृतियां और एकेन्द्रिय, दोइन्द्रियपना तीन इन्द्रियपना, चउरिन्द्रियपना, ये चार जातियां, अशुभ विहायोगति, उपघात नाम कर्म, अशुभ वर्णादि-4, प्रथम के सिवाय 5 संघयणा और 5 संस्थान इस तरह ये 20 और ऊपर की 62 (62+20=82)- ये 82 प्रकृतियां पाप की अशुभ गिनी जाती है। अर्थात् 18 प्रकार से प्राणातिपात (हिंसा) आदि से बांधे हुए पापों का फल जो दुःख कारक-दुःख रुप मिलता है वह इन 82 तरीके से मिलता है। बांधी हुई इन 82 प्रकृतियों में से भिन्न-भिन्न जीवों ने जिसने जितनी बांधी हो उसको उतनी उदय में आती है और उदय में आने के पश्चात जीव को उसका दुःख सहन करना पड़ता है, क्योंकि इन 82 में एक भी प्रकृति शुभ नहीं है। पुण्य-कारक नहीं है। उदाहरणार्थ-आप ही सोचिए क्या पांचों इन्द्रियां जीव को पूरी न मिले और उसके बदले 1, 2 कम मिले-अर्थात् दो इन्द्रियपना या तीन इन्द्रियपना मिले जहां चिंटी-मकोड़े का

जन्म हो तो क्या वह सुखकारक होगा ? कभी नहीं। वैसे नरक गति मिले या तिर्यंच की, पशु-पक्षी की गति मिले तो क्या सुख रुप अच्छा होगा ? नहीं यह भी संभव नहीं है ! क्या अज्ञान का उदय हो यह अच्छा है ? या व्याख्यान श्रवण करते समय नींद आवे क्या यह अच्छा सुखरुप मानोगें ? उसी तरह से क्या क्रोधादि कषायों का उदय ज्यादा हो यह अच्छा है ? नहीं इन 82 कर्म प्रकृतियों में से एक भी कर्म की प्रकृति अच्छी नहीं है। जीव के लिए सुखकारक शुभ नहीं है। अतः ये सब पाप की प्रकृतियां है। दुःखदायी कष्टदायी अशुभ है।

ज्ञानावरणीय कर्म की 5 प्रकृतियां:-

ज्ञान तथा ज्ञानी की विराधना करने से ज्ञानावरणीय कर्म का बंध होता है। मति, श्रुत, अवधि, मनः पर्यव और केवलज्ञान इन पांचों ज्ञानों का ज्ञानावरणीय कर्म उदय में आना और जीव का अज्ञानी बनना, अल्पज्ञ बनना यह अशुभ पापकर्म ही है।

अंतराय कर्म की 5 प्रकृतियां:-

अंतराय कर्म विघ्न रुप है। दान-लाभ-भोग-उपभोग और वीर्य शक्ति इन पांचों लब्धियों-शक्तियों का विघ्न हो, ये न मिले और इनका उदय हो यह अशुभ दुःखदायी है।

दर्शनावरणीय कर्म की 9 प्रकृतियां:-

चक्षु-अचक्षु-अवधि और केवलदर्शनावरणीय ये चार और निद्रा, निद्रानिद्रा, प्रचला, प्रचलाप्रचला तथा थीणाद्धि ये पांच प्रकार निद्रा के हैं। इस तरह ये 9 प्रकृतियां अशुभ है। कम दिखे, पूरा न दिखाई न दे, पूरा सुनाई न दे, इन्द्रियां पूरी न मिले, इन्द्रियां कमजोर हो, तथा चलते-फिरते नींद आवे, अभ्यास पाठ में, व्याख्यान में नींद आवे इत्यादि ये 9 प्रकार से अशुभ दुःखरुप ही जीव को प्राप्त होता है।

नीच गोत्र कर्म:-

इस कर्म के उदय से जीव को नीच कुल में, हल्के कुल में जन्म मिले, हरिजन, भंगी, चमार, चण्डाल, कसाई, मच्छीमार, वेश्या के कुल में जन्म मिलना यह सुखदायी अच्छा कभी हो ही नहीं सकता है। अतः ऐसे कुल में जन्म यह किए हुए पाप की सजा है। दुःखदायी है।

अशाता वेदनीय कर्म:- शाता का अर्थ है सुख और इससे विपरीत अशाता का अर्थ है दुःख। वेदनीय में वेद का अर्थ है जानना, अनुभवना, वेदना का अर्थ है दुःख पीड़ा और इससे बना है अशाता वेदनीय कर्म। अर्थात् आदि-व्याधि-उपाधि। शारीरिक रोगों की स्थिति, रोगी शरीर, कई रोगों से घीरा हुआ शरीर हो तो समझीए यह भी पाप की ही सजा है। अतः प्राणातिपात हिंसादि पापों को करने वाला सुन्दर निरोगी स्वस्थ शरीर नहीं पा सकता। उसे किये हुए पापों के अनुसार दुःखदायी रोगों से घिरा हुआ शरीर ही मिलता है। यहां भी पाप की सजा बड़ी भारी है। कई ऐसे बिचारे ऐसे भयंकर रोगों की वेदना अनुभवते हैं जैसे मानो नरक की पीड़ा भोग रहे हो। कितनी तीव्र वेदना ? कितने भयंकर रोग है ? और उसमें भी एक साथ 4-6 रोग, 8-10 रोग भी भोगते है। यह किये हुए पाप कर्मो का ही फल है।

(आगे और भी है....!)

**** जहां कोई उपाय नहीं वहां खेद करना योग्य नहीं है। ईश्वरेच्छा के अनुसार जो होता है उसमें समता रखना ही योग्य है और उसके उपाय का यदि कोई विचार सूझ पड़े तो उसे किये जाना, केवल यही हमारा उपाय है।***

परिग्रह : अनर्थों की जड़

निःसंदेह संतोष सहित भक्ति प्राप्त करना परम लाभदायक है, क्योंकि यह निश्चित है कि न हम इस जगत में कुछ लाये हैं और न यहां से कुछ ले जा सकते है। हमारे पास खाने और पहनने का हो तो हमें उतने पर ही संतोष करना चाहिये। जो धनी होना चाहते है, वे ऐसी परीक्षा, फंदे और बहुतेरी व्यर्थ एवं हानिकारक वासनाओं में फंसते है। वे मनुष्य को बिगाड़ते हैं और विनाश की ओर धकेलते हैं। धन-संपत्ति, लोभ सब बुराईयों की जड़ है। इसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितने लोगों ने श्रद्धा से भटक कर अपने-अपने नाना प्रकार के दुःखों से छलनी बना दिया है। हे मनुष्य- तू इन बातों से भाग और धर्म, भक्ति, श्रद्धा, प्रेम, धीरज और नम्रता का अनुसरण कर। भलाई करें, भले कामों में धनी बनें, उतार एवं सहायता देने में तत्पर हों और आगे के लिए अच्छी नींव डाले रखें, ताकि सत्य जीवन को वश में कर लें।

जिन शासन की स्थापना:मानवमात्र के लिये कल्याणकारी

इस माह जैन जगत के सबसे महत्वपूर्ण दिन का आगमन होने जा रहा है। इतनी महत्वपूर्ण तिथि होने के बाद न तो अधिकांश जैन इस तिथि के बारे में जानते है और नहीं जानने वाले इस तिथि को कोई महत्व देते हैं। यह कितने आश्चर्य और अचंभे की बात है। जिस तिथि ने हमारे जीवन को कल्याण का मार्ग दिखाया हम उसे ही भूल जाते है, उसके लिये न स्मरण न उत्सव, न प्रवचन न अन्य कोई कार्यक्रम? कितने कमबख्त हो गये है कि उपकारी दिवस को ही भूल जाते है, हाँ। मैं वैशाख सुदी-११ (दिनांक १३ मई २०११ शुक्रवार) याने शासन स्थापना तिथि की बात कर रहा हूं। परमात्मा ने इस तिथि को शासन स्थापना के लिये चुना होगा तो निश्चित ही कोई बात होगी? जो याद रखने लायक नहीं है,वह तो हमारे दिमाग में कचरे की तरह ठूंस-ठूंस कर भरा होता है और जिसे सहज कर संभाल कर रखना है, उसे ही विस्मृत कर देते है। आसानी से मिली वस्तु को पाकर हम उसके महत्व को समझ नहीं पाते है, यह मानवीय जीवन की सबसे बड़ी भूल है। परमात्मा ने शासन की स्थापना अपने लिये नहीं की थी, प्रभु की तो इसमें मानव मात्र के कल्याण की भावना थी। शासन की स्थापना के लिये प्रभु ने सैकड़ों वर्ष पूर्व सिर्फ हमारे बारे में ही सोचा था शासन के माध्यम से हमारा कल्याण हो यह भाव ही इसमें सन्निहित था।

भारतीय संस्कृति के इतिहास में जैन दर्शन की अपनी एक विशिष्ट पहचान और महत्व है, जैन दर्शन अनेक दर्शनों का जनक और संरक्षक करने वाला है जब भी भारतीय संस्कृति के प्राचीनतम स्वरूप पर मंथन होता है तो विचारक, आश्चर्यचकित और विस्मित हो जाते हैं कि विश्व की प्राचीनतम अध्यात्म संस्कृति का मेरूदण्ड और जीवन रेखा (Life Line) अगर कोई है तो वह जैन दर्शन है। ऐसा नहीं है कि जैन दर्शन ने विश्व के अन्य धर्मों की विशिष्टताओं को छोड़ दिया या उन्हें अपनाया नहीं जैन दर्शन में तो उन सभी विशिष्टता को अपनाने के साथ उनका और परिमार्जित स्वरूप विश्व के सामने देखा है,आदि तीर्थंकर परमात्मा श्री ऋषभदेवजी से लेकर प्रभु श्री पार्श्वनाथ दादा और परमात्मा भगवान श्री महावीर स्वामीजी तक यह प्रक्रिया निरंतर विकासशील रही है।

परमात्मा प्रभुवीर के द्वारा शासन की स्थापना के साथ सबसे महत्वपूर्ण भेंट मानव को यह दी है कि हम भी प्रभु के समान तीर्थंकर बन सकते हैं। यह कितनी बढ़ी बात है कि प्रभु अपना पद भी हमें प्रदान करने को तत्पर है। इस भ्रष्टाचारी और स्वार्थ से भरे पूंजीवादी संसार को सीख देने के लिये परमात्मा अपने जैसा सबको बनाने के लिये नि:स्वार्थ रूप से यहां हमारे लिये ही खड़े दिखाई देते हैं। परमात्मा का इस धरा पर जन्म मानव ही नहीं प्राणीमात्र के कल्याण के लिये ही हुआ था। जब चोरी और हिंसा और संघर्ष चल रहा था मानव जाति उत्थान के स्थान पर पतन की ओर बढ़ रही थी तब अज्ञानता के अंधकार को विछिन्न करते हुए भारतीय संस्कृति को उज्जवलता प्रदान करने के लिये प्रभुवीर का उद्‌भव हुआ था। श्री महावीर आज २१ वीं सदी में फिर से संसार की आवश्यकता बने दिखाई दे रहे है। परमात्मा के द्वारा शासन की स्थापना मात्र जैन कहलाने वालों के लिये नहीं की है। बल्कि यह उन सबके लिये है, जो सबका ही कल्याण चाहते है। यह न मनभेद है न मतभेद है, यहां तो प्राणीमात्र के लिये दया, करूणा, सौहार्द, मैत्रीभाव, भ्रातत्व और अहिंसा की अमृत प्रभावना की भावना का साम्राज्य है।

परमात्मा के द्वारा शासन की स्थापना कोई संस्था या दल बनाने के लिये नहीं की गई थी, इसके मूल में समता और सर्वोदय का भाव छिपा हुआ है। अनुदाद, सकीर्ण और दुराग्रह जैसे विचारों में मानव को ऊपर उठाने के लिये परमात्मा ने शासन का स्वरूप हमारे सामने रखा है, इसके लिये किसी सदस्यता फार्म का प्रावधान नहीं,जो चाहे सो शासन से जुड़कर कार्य कर सकता है न जाति बंधन है न कोई सामाजिक रोक। परमात्मा की सोच कितनी गहराई वाली होगी कि प्रभु ने शासन स्थापना में किसी भी सर्कीणता को कोई स्थान नहीं दिया है।

परमात्मा ने शासन चलाने के लिये हमारे सामने जो स्वरूप रखा है वह भी अद्‌भूत है। गणधरों के द्वारा विरचित शास्त्र सम्मत् विधि विधानों के साथ बगैर कोई कमी और बगैर कोई गलती के परमात्मा ने जो अकाट्य तथ्य दिये है जो आज हमारे लिये परमात्मा की आज्ञा है, उसके अनुरूप शासन के आधार के लिये चार स्तम्भ हमें प्रदान किये है। हम सब जानते है यह चार स्तंभ साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका है। इन चार स्तंभ में शामिल होने के लिये सभी के लिये द्वार खुला है। क्या अद्‌भूत व्यवस्था है। परमात्मा की। पर फिर भी हम कहां सिखते हैं। यह देखकर तो मैनेजमेंट के सभी सिद्धांत अधूरे दिखाई देते हैं। क्या अद्‌भूत सामजंस्य है कि पार्टी के फेल होने का भी कोई खतरा नहीं दिखाई देता है। परमात्मा ने पहले ही बतला दिया कि यह शासन रूपी यह संस्था २० हजार वर्ष तक निर्बाध चलेगी। इसके बाद पुन: नवसर्जन होगा।

हमें गर्व और अभिमान होना चाहिये कि हम परमात्मा के द्वारा स्थापित शासन के अंग है। इस संस्थान को चलाने का दायित्व प्रभु ने हमें प्रदान किया है।

तो आईये परमात्मा के शासन को चलाने में हम अपनी भूमिका की पहचान करें। और शासन को सुचारू रूप से चलाने में सहायक बने, यही अभिलाषा हम सब धारण करें, इसी शुभेच्छा से!

श्री गुरु गौतमस्वामी आदि गणधर दीक्षा दिवस एवं चतुर्विध संघ- शासन स्थापना दिवस वैशाख सुद-11सोमवार 1-5-2023 पर विशेष आलेख

चतुर्विध संघ की स्थापना

भगवान श्रीमहावीर की तपाराधना निरन्तर चल रही थी। कभी छह माह तो कभी चार माह, कभी पन्द्रह दिन तो कभी एक माह। बेले से पहले तो एक भी पारणा नहीं हुआ। करीब साढ़े बारह वर्ष होते आए थे। कर्मों की निर्जरा हो रही थी। जन्म जन्मांतर के कर्म शिथिल हो रहे थे। कर्मों की कड़ियां टूट रही थी शरीर कृश जरूर हो रहा था। किन्तु तेज और बढ़ रहा था। चेहरे पर शान्ति सौम्यता थी। उनकी आत्मा निर्मलता की और बढ़ रही थी। मुखमंडल पर प्रसन्नता थी। भावों में विशुद्धता थी। अंतर में धीरे-धीरे वीतरागता का तेज उभर रहा था। मानो पत्थर से प्रतिभा प्रगट हो रही हो। कभी अस्त न होने वाला साहस्रों किरणोंवाले भानू के उदय के पूर्व आभा प्रगट हो रही हो। कर्मों के काले बादल बिखर रहे थे। तपश्चर्या की प्रचंड अग्नि में कर्म मलिनता जलकर भस्म हो रही थी। आत्मा पर जो ज्ञानावरणीय आदि कर्मों का आच्छादन था वह हट रहा था। दुध और पानी की तरह भेद विज्ञान द्वारा कर्म और आत्मा अलग हो रही थी। वीतरागता की प्रकृति तेज गति से अग्रसर हो रही थी। घाती कर्मों का क्षय हो रहा था। उनमें एक परम आल्हाद का अनुभव हो रहा था। चारों और एक अपूर्व आध्यात्मिक घटा छायी हुई थी। अखण्ड ज्योति प्रगट हो रही थी। वर्धमान निस्तब्ध थे। अतीत के कलुषित कर्म वर्तमान में विसर्जित हो रहे थे। उज्जवलता, शुभ्रता निर्मलता आत्मा में प्रगट हो रही थी। अनुकम्पा, वीतरागता, समत्व आदि द्रवीभूत होकर कैवल्य के सांचे में शुभाकार ढल रहे थे। कितना वैभवशाली था वह क्षण जो कर्म शत्रुओं ने आत्म समर्पण कर दिया था। ज्योतिर्धर महावीर ने पर ज्योति का मुकुट पहन लिया था। चरम निर्मल ज्ञान की प्राची में कैवल्य का भानू प्रगटता की ओर था। जन्म मरण से मुक्ति देने वाले अमरत्व की पदचाप सुनाई दे रही थी। संवर सक्रीय था। मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय आदि आश्रव निस्तब्धता की ओर अग्रसर हो रही थी। निर्जरा भी अंतिम दौर पर थी। कैवल्य ज्ञान का सूरज उदाचल की ओर झांक रहा था। महावीर की तेजस्विता बढ़ रही थी। क्योंकि इस उत्सर्पिणी काल के अंतिम के साथ तीर्थंकर भगवान महावीर का पर ज्योतिर्धर धर्मचक्र अपने संपूर्ण प्रभाव के साथ प्रवर्तित होने को तैयार बैठा हुआ था। आत्म शुद्धि के अंतिम चरण करते हुए ऋजुवालीका नदी का वह सुखद तट जहां जम्बू वृक्ष श्रेणियों में खड़े थे। अनेक विहंग पक्षी कलह कर रहे थे। आकाश निर्मल था। सूरज अस्तांचल की ओट में थे। वातावरण में एक मौन निस्तब्धता थी। मधुर मंद मस्त हवा चल रही थी। पवन झोंके से वृक्ष की हरी-हरी पत्तियां आपस में कलह कर रही थी। फूलों से मधुर सुगंध आ रही थी। प्राकृतिक सौंदर्य से छटा निराली बनी हुई थी। ऋतु कुल नदी के तट पर शाल वृक्ष के पास गाय और सिंह एक साथ पानी पीते थे। महायोगी वृक्ष के नीचे गौधुम आसन में ध्यान में आत्मलीन हो गये थे। ध्यानस्थ होकर आत्मचिंतन कर रहे थे। ध्यान की ऊंचाई बढ़ गई थी। क्षपक श्रेणी में आरोहण हो गया। भेद विज्ञान की गति बढ़ गयी थी। चट्टान की तरह दुर्भेद मोहनीय कर्म चकनाचूर होने लगे। बारहवें गुण स्थान पर (क्षीण मोहनीय) पहुंच कर चारित्र मोहनीय की प्रकृतियां पराजित होने लगी। आत्मविशुद्धि वीतरागता की ओर अग्रसर होने लगी। आत्मा के ऊपर से कर्मों के आवरण हटने लगे। ज्ञान की ज्योति प्रगट होने लगी। तेरहवें गुणस्थान में संयोगी केवली के परिणामों की शुक्लता और अधिक सघन हुई। बारह वर्ष पांच माह पंद्रह दिन की कठोर तप इच्छा के अनन्तर भगवान महावीर के चार घातीय कर्मों का क्षय हुआ। पूर्ण अरिहंत बने। वैशाख शुक्ल दशमी का वह पावन पवित्र दिन था। सूर्य अस्ताचल की ओर अपने पैर फैला रहा था। अज्ञान अंधकार समाप्त होकर ज्ञान का सूर्य जो कभी अस्त न होगा ऐसा कैवल्य ज्ञान रूपी भानु वर्धमान महावीर की आत्मा में उदित हुआ। ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होने से अनन्त ज्ञान की प्राप्ति हुई। दर्शनावरणीय के क्षय होने से केवल दर्शन की प्राप्ति हुई। वेदनीय कर्म के क्षय होते ही अनन्त क्षायिक सम्यकत्व की प्राप्ति हुई। अब वे अतुल आत्मवैभव से युक्त बन गये। ऋजुवालीका के तट पर घाती कर्मों से मुक्त हुए। अनिर्वचनीय, शब्दातीत आत्मानंद में रमन करने लगे। सौधर्म इन्द्र का आसन चलायमान हुआ। उसके हर्ष की सीमा न रही। उसने कुबेर को बुलाया और विशाल सभा मंडप बनाने का आदेश दिया। क्षणों में मंडत तैयार हुआ। अशोक वृक्ष के नीचे

सिंहासन पर भगवान महावीर आरूढ़ हुए थे। समवसरण में देव ही पहुंचे थे। धर्म की उपजाऊ भूमि से मानव एक ही नहीं पहुंचा था।

देवता वीतराग की दिव्यवाणी का श्रवण तो कर सकते हैं। किन्तु त्याग संयम नहीं ले सकते। अतः अर्हन्त भगवान महावीर की प्रथम वाणी, प्रथम देशना खाली गयी यह आश्चर्य था। कैवल्य ज्ञान होने पर चतुर्विध संघ की स्थापना जब तक नहीं होती वहां वह तीर्थंकर नहीं बन सकते। अतः उसी समय भगवान चल पड़े उन व्यक्तियों की खोज में। प्रातःकाल अपापा नगर के उद्यान में पहुंच गये। उसी नगर में सोमशर्मा ने विशाल यज्ञ का आयोजन रखा हुआ था। उस आयोजन में उस समय के वेदान्त के दिग्गज पण्डित इन्द्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति आदि ग्यारह विद्वान पहुंच गये थे। ग्यारह विद्वानों के चवालीस सौ (4400) शिष्य भी थे। चारो ओर रिचा की उच्च ध्वनि में हवन हो रहा था। बहुमूल्य खाद्य सामग्री की आहुतियां दी जा रही थी। देवी देवताओं को आव्हान किया जा रहा था। उसी समय चारों ओर से जनता के झुण्ड के झुण्ड एवं देवताएं वहां न पहुंच कर जहां भगवान महावीर का समवरण लगा हुआ था उधर तेजी से जा रहे थे। इन्द्रभूति आदि को बड़ा आश्चर्य हुआ। यह कौन है। देव-देवीताओं के साथ जनता को भी अपनी और खींच रही है। सभी चुंबक की तरह खींचे जा रहे है। अभी जाता हूं। शास्त्रार्थ कर उसे पराजित करता हूं। आज तक मेरे सामने कोई टिका नहीं। पांच सौ शिष्य इन्द्रभूति के जयजयकार के नारे लगा रहे थे। समवसरण दूर से नजर आ रहा था। अशोक वृक्ष के नीचे शान्त गंभीर तेजस्वी अर्हन्त भगवान महावीर को दूर से घमण्ड दर्प घट रहा था। फ्रि भी अभिमान उसे आगे बढ़ा रहा था। नजदीक पहुंचते ही गोयम गोयम तुम मेरे चिरपरिचित हो। तुम्हारे मन में आत्मा के विषय में संशय है। इन्द्रभूति गौतम आश्चर्यचकित थे। मेरा नाम यह जानते है। मेरे मन के द्वंद्व को भी यह जानते है जिसे मैंने आज तक किसी के सामने प्रगट नहीं होने दिया था। भगवान समाधान करते जा रहे थे।

इन्द्रभूति तुम भ्रम में हो। आत्मा स्वसंवेदना से प्रत्यक्ष है। मैं सुखी हूं, मैं दुखी हूं, यह कहनेवाला देह नहीं वह आत्मा ही है। यदि देह होता तो मृतक देह को भी यह अनुभव होता। दूसरी बात आत्मा है या नहीं ऐसी शंका जो आपकी हुई है यही आत्मा को सिद्धि करा देता है। जो विद्यमान वस्तु होती है, शंका उसी की ही होती है। जग में जिसका अस्तित्व नहीं उसकी शंका भी नहीं होती जैसे आकाश में कुसुम के सामान। इसी तरह भूतकाल में देखी हुई सुनी हुई वस्तु का स्मरण होता है। स्मरण द्वारा भी आत्मसिद्धि हो सकती है, अनुमान द्वारा आत्मसिद्धि होती है। जैसे किसी मकान की बारियां खुली हुई देखकर अनुमान लगा लिया जाता है कि इस मकान में कोई रहता है। उसी प्रकार जब पांचों इन्द्रियाँ अपना-अपना कार्य कर रही है तो अनुमान कर सकते है। पांच इन्द्रिय की अधिष्ठाता कोई न कोई अवश्य है और वह आत्मा। शेष पुण्य-पाप लोक परलोक आत्मा को है। यह सभी देह के संयोग से होता है। किंतु शुभाशुभ कर्म आत्मा को भोगने पड़ते है। आत्मा तो स्वयंशुद्ध एवं पूर्ण है। यह ज्ञान दर्शन चारित्र एवं पुरूषार्थ से युक्त है। यह आत्मा के लक्षण है। सुख-दुःख का भोक्ता तो आत्मा स्वयं है। इस प्रकार प्रभु ने इन्द्रभूति को जीव के विषय में समझाया।

प्रभो! आपके पूर्ण ज्ञान की प्रभा से मेरा अज्ञान नष्ट हो गया। मेरा पूर्ण समाधान हो गया है। कृपया अब मुझे अपने चरणों में स्वीकार कर लो। इन्द्रभूति का अभिमान गल गया था। विनीत होकर के सामने खड़ा हुआ। प्रभु ने इन्द्रभूति को करेमि भन्ते सावद्य जोग का जीवन पर्यंत के प्रत्याख्यान करा कर शिष्य बना लिया उनके पांच सौ शिष्यों ने समर्पण कर दिया। गौतम को गणधर बना दिया। गौतम स्वामी का सारा जीवन आश्चर्य से भरा है। उनका अहंकार भी बोधरूप बना। बोध को प्राप्त कर प्रभु के शिष्य बन गये। प्रभु के प्रति राम, गुरू-भक्ति का निमित्त बना। सम्पूर्ण संघ के गणधर होने पर हजारों केवलियों तथा साधुओं के गुरू होने पर भी गुरू-भक्ति करते रहे। उनका विषाद भी केवलज्ञान की भेंट देनेवाला बन गया। दीक्षा लेने के बाद भी बेले करने लगे। अनेक लब्धियों के निधान होने पर भी उनका उपयोग नहीं किया।

प्रभु के आज्ञाकारी शिष्य गौतम स्वामी का जीवन चिंतन करके हृदय नतमस्तक हो जाता है। हाथ स्वयं अंजली बद्ध हो जाते हैं। गौतम गुरू जैसे गुण हमारे जीवन में आए यही मंगल कामना करनी चाहिये। एक के बाद दूसरे विद्वान सेवा में आते गये और धीरे-धीरे ग्यारह ही विद्वान अपने शिष्यों के साथ पहुंच चुके। सभी की शंकाओं का समाधान होता गया। सभी अपना आत्मसमर्पण करते गए। एक दिन में चवांलीस सौ ग्यारह शिष्य दीक्षित हुए। वह वैशाख सुदी-11 का शुभ दिन था जिस दिन चतुर्विध संघ की स्थापना हुई थी।

गण एवं गणधर

गण अर्थात् समान बाचना एवं समान आचार, क्रिया के पालक मुनियों का समुदाय। गणधर अर्थात् उस उस गण-मुनि समुदाय के नायक गुरू भगवंत। प्रत्येक गणधर भगवंत अनुतर ज्ञान, दर्शन चारित्रादि स्वरूप धर्मगुणों के गुण-समूह को धारण करने वाले होते हैं। तीर्थंकर भगवंत अर्थकथन करते हैं तो गणधर भगवंत अर्थ को सूत्र के रूप में गूंथते हैं। तीर्थंकर परमात्मा से तत्व के रूप में तीन-उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य-स्वरूप पदों को प्राप्त कर प्रत्येक गणधर भगवंत मात्र मुहूर्त भर समय में ही द्वादशांगी श्री आचारांग, सूत्रकृतागादि बारह अंग सूत्रों की तथा दृष्टिवाद के अंतर्गत चौदह-उत्पादपूर्व, अग्रायणीयादि पूर्व शास्त्रों की संरचना कर लेते हैं अतः गणधर भगवंत द्वादशांगी रूप प्रवचन के प्रवाचक माने जाते हैं। ज्यों तीर्थंकर भगवंतों का अर्थकथन पूर्णतः यथार्थ माना जाता है त्यों ही गणधर भगवंतों की द्वादशांगी पूर्णतः यथार्थ मानी जाती है। तीर्थंकर भगवंत द्वारा प्रमाणित मानी जाती है। द्वादशांगी की संरचना के पश्चात ही स्वयं तीर्थंकर भगवंत गणधरों के मस्तिष्क पर इंद्र द्वारा रत्नमय स्थाल में लाया गया सुवासित चूर्ण मुट्ठी-मुट्ठी भरकर डालते हैं और देवता लोग भी उसके बाद प्रत्येक गणधर पर सुवासित चूर्ण, सुगंधित पुष्पों की बरसात करते हैं। प्रत्येक गणधर भगवंत का देह वज्रऋषभ नाराण संहनन एवं समचतुरस्र संस्थान वाला ही होता है। प्रत्येक गणधर सभी लब्धियों से सम्पन्न होते हैं, गणधर लब्धि से सम्पन्न होते हैं और एक भवावतारी ही होते हैं। प्रत्येक तीर्थंकरों के गणधरों की संख्या भिन्न-भिन्न उपलब्ध है।

ग्यारहवें गणधर भगवंतों का सामान्य परिचय- चरम तीर्थंकर देवाधिदेव श्रमण भगवान महावीर स्वामीजी के गणधर तो ग्यारह थे मगर गण नौ ही थे। कारण केवल इतना ही कि दो- श्री अंकपित और श्री अचलभ्राता गणधर भगवंतों की तथा दो-श्रीमेतार्थ और श्रीप्रभास गणधर भगवंतों की वाचना एक एक जैसी थी।

ग्यारहवें गणधर- भगवंतों के क्रमशः नाम- 1 पंडित श्री इन्द्रभूतिजी, 2- पंडित श्री अग्निभूतिजी, 3- पंडित श्री वायुभूतिजी 4- पंडित श्री व्यक्तजी 5- पंडित श्री सुधर्माजी 6- पंडित श्री मण्डितजी 7- पंडित श्री मौर्यपुत्रजी 8- पंडित श्री अकम्पितजी 9- अचलभ्राताजी 10- पंडित श्री मेतार्यजी 11- पंडित श्री प्रभासजी। ये 11 पंडित वेदादि शास्त्रों के पारगामी विद्वान थे एवं यज्ञ-यागादि विधि-विधान करने करवाने में परम निष्णात थे। ये स्वयं को सर्वज्ञ ही मानते थे मगर मन में किसी एक विषय में गहरी शंका थी इन्हें एवं अन्य कई-कई पंडितों को अपने-अपने छात्रगण के साथ यज्ञ करवाने के लिये श्री सोमिल नामक श्रेष्ठीजी ने मध्यमा अपापा नगरी में आमंत्रित किया था।

प्रथम के गौतम गौत्रीय तीन गणधर भगवंत परस्पर भाई थे। इनका जन्म मगधदेश के गोबर नामक गांव में हुआ था। इनकी माता का नाम श्री पृथ्वीदेवी और पिता का नाम श्री वसुभूति था। भारद्वाजगोत्रीय श्री व्यक्त पंडितजी का जन्म कोल्लाक सन्निवेश में हुआ था। इनकी माता का नाम श्री वारूणी देवी एवं पिता का नाम श्री धनुर्मित्र था। अग्निवैश्यायागोत्रीय श्री सुधर्मा स्वामीजी का जन्म भी कोल्लाक सन्निवेश में ही हुआ था। इनकी माता का नाम श्री भद्दिला देवी एवं पिता का नाम श्री चम्मिल्लजी था।

मौर्य नामक गांव में धनदेव और मौर्य नामक दो मौसेरे भाई रहते थे। धनदेव की पत्नी का नाम विजयादेवी। इनके पुत्र का नाम था मंडिक। मगर वासिष्ठगोत्रीय मंडिक के जन्म लेते ही श्री धनदेवजी की मृत्यु हो गई थी अतः उस समय देशाचार, लोकाचार संबंधी नियम के अंतर्गत अविवाहित श्री मौर्यजी ने विजयादेवी के साथ विवाह किया और इनका जो पुत्र जन्मा उसका नाम रखा गया मौर्यपुत्र। मौर्यपुत्रजी काश्यप गोत्रीय थे।

गौतमगोत्रीय श्री अंकपित गणधर भगवंतजी का जन्म विमलापुरी नामक नगरी में हुआ था। इनके पिताजी का नाम श्री देव एवं इनकी माता का नाम श्री जयंतीदेवी था। हारितगोत्रीय श्री अचलभ्राता नामक गणधर भगवंत का जन्म कोशला नगरी में हुआ था। इनकी माता का नाम नंदा देवी एवं पिता का नाम श्री वसुजी था। श्री मेतार्य गणधर भगवंत का जन्म वत्स देश के तुंगिर नामक गांव में हुआ था। इनकी माताजी का नाम करूणादेवी एवं पिताजी का नाम श्री दत्त था। श्री प्रभास गणधर भगवंत का जन्म राजगृह नामक नगर में हुआ था। इनकी माताजी का नाम

श्री अतिभद्रा देवी एवं पिताजी का नाम श्री बलजी था। श्री मेतार्य एवं श्री प्रभास गणधर भगवंत कौंडिन्यगोत्रीय थेगौतम गोत्रीय गणधर भगवंत श्री इन्द्रभूतिजी के मस्तक पर वासक्षेप डालते हुए परमात्मा ने द्रव्य, गुण और पर्याय से तीर्थ को संभालने की अनुज्ञा दी और गणधर श्री सुधर्मास्वामीजी को गण को संभालने की अनुज्ञा दी।

इन्द्रभूति-गौतम स्वामीजी की पूर्ण आयु 92 वर्ष, उन्होंने 50 वर्षों तक गृहस्थ अवस्था, तीस वर्षों तक छद्मस्थ अवस्था, एवं बारह वर्षों तक केवली पर्याय का पालन किया था। श्री अग्निभूति गणधरजी की कुल आयु 74 वर्ष, उन्होंने 46 वर्ष गृहस्थ अवस्था, बारह वर्ष छद्मस्थ अवस्था और सोलह वर्ष तक केवलीपर्याय का पालन किया था। श्री वायुभूति गणधरजी कुल आयु 70 वर्ष उन्होंने 42 वर्ष तक गृहस्थ अवस्था, 10 वर्ष छद्मस्थ अवस्था और 18 वर्ष तक केवली पर्याय का पालन किया था। श्री व्यक्त गणधरजी कुल आयु 80 वर्ष, उन्होंने 50 वर्ष गृहस्थ अवस्था, बारह वर्ष छद्मस्थ अवस्था, और 18 वर्ष तक केवलीपर्याय का पालन किया था। श्री सुधर्मा गणधरजी कुल आयु 100 वर्ष उन्होंने 50 वर्ष गृहस्थ अवस्था, 42 वर्ष छद्मस्थ अवस्था और 8 वर्ष तक केवलीपर्याय का पालन किया था, श्री मण्डिक गणधरजी की कुल आयु 95 वर्ष, उन्होंने 65 वर्ष गृहस्थ अवस्था, 14 वर्ष छद्मस्थ अवस्था, और सोलह वर्ष तक केवलीपर्याय का पालन किया था। श्री मौर्यपुत्र गणधरजी कुल आयु 80 वर्ष, उन्होंने 52 वर्ष गृहस्थ अवस्था, 14 छद्मस्थ अवस्था और सोलह वर्ष तक केवली पर्याय का पालन किया था। श्री अकंपित गणधरजी की कुल आयु 78 वर्ष, उन्होंने 48 वर्ष गृहस्थ अवस्था 9 वर्ष छद्मस्थ अवस्था और 21 वर्ष तक केवली पर्याय का पालन किया था। श्री अचलभ्राता गणधरजी की कुल आयु 72 वर्ष उन्होंने 46 वर्ष गृहस्थ अवस्था, 14 वर्ष छद्मस्थ अवस्था, और 14 वर्ष तक केवली पर्याय का पालन किया था। श्री मेतार्य गणधरजी कुल आयु 62 वर्ष उन्होंने 36 वर्ष गृहस्थ अवस्था, 10 वर्ष छद्मस्थ अवस्था और सोलह वर्ष तक केवलीपर्याय का पालन किया था। श्री प्रभास गणधरजी कुल आयु 40 वर्ष उन्होंने 16 वर्ष गृहस्थ अवस्था, 8 वर्ष छद्मस्थ अवस्था और सोलह वर्ष तक केवलीपर्याय का पालन किया था।

पहले पांच गणधर भगवंत अपने 500-500 विद्यार्थियों के समुह के साथ छट्ठे और सातवें गणधर अपने 350-350 विद्यार्थियों के समुह के साथ, और शेष चार गणधर भगवंतों ने 300-300 विद्यार्थियों का गण था। सभी गणधर भगवंत अपने-अपने विद्यार्थीगण के साथ ही परमात्मा के पास क्रमशः एक के बाद दूसरे, दूसरे के बाद तीसरे, इस क्रम से आये थे। इन्होंने परमात्मा से अपने संशय का पूर्णरूपेण निराकरण पाकर ही अपने विद्यार्थीगण के साथ दीक्षा ली थी। श्री कुबेरदेव ने ही सभी गणधर भगवंतों एवं मुनि भगवंतों को निरवद्यरूप से चारित्र धर्म के पालन के लिये उपयोगी वस्त्र, पात्रादि धर्मोपकरण वहोराए थे और सबने स्वीकारे थे।

गणधर भगवंतों की शंकाएं-

श्री इन्द्रभूति-गौतम गणधर भगवंतजी के मन में शंका थी-जीव है या नहीं...? श्री अग्निभूति गणधर भगवंतजी के मन में- कर्म है या नहीं...? श्री वायुभूति गणधर भगवंतजी के मन में.... जीव और शरीर के आपसी संबंध कैसे, क्यों...? श्री व्यक्त गणधर भगवंतजी के मन में-पृथ्वी आदि पांच भूत हैं...? श्री सुधर्मा गणधर भगवंतजी के मन में- इस भव में जीव की जो पर्याय है वही पर्याय परभव में...? श्री मण्डिक गणधर भगवंतजी के मन में- बंध और मोक्ष है भी या नहीं? श्री मौर्यपुत्र गणधर भगवंतजी के मन में देवता है या नहीं? श्री अकंपति गणधर भगवंतजी के मन में- नारकी जीव है या नहीं? श्री अचलभ्राता गणधर भगवंतजी के मन में-पुण्य, पाप है या नहीं? श्री मेतार्य गणधर भगवंतजी के मन में-परलोक है या नहीं? और श्री प्रभास गणधर भगवंतजी के मन में- मोक्ष है या नहीं?

परमात्मा के जीवनकाल में ही श्री इंद्रभूति-गौतम स्वामीजी और श्री सुधर्मा स्वामीजी के सिवाय शेष नौ गणधर भगवंतों ने अपनी अंतिम अवस्था में एक मास पर्यंत पादपोपगमन अनशन कर निर्वाण को पाया था।

❊ किसी भी तरह पहले तो जीव को अपनी अर्हता दूर करना योग्य है। देहाभिमान जिसका गलित हुआ है उसे सब कुछ सुखरुप ही है। जिसे भेद नहीं उसे खेद का संभव नहीं। हरि-इच्छा के प्रति विश्वास दृढ़ रख कर बरतते हो, यह भी साक्षेप सुखरुप है।

जबुंद्वीप संरक्षक जैनाचार्यश्री
श्री अशोकसागरसूरीजी महाराजा

✻ धैर्यचन्द्रसागर

गौरवशाली गुजरात बड़ौदा के छाणी जैसे पवित्र गांव में वि.सं. 2000 वैशाख शुक्ल बीज (2) याने सन् 1944 में सेठ शांतिलाल धर्मपत्नी मंगुबेन की कुक्षी से देवविमान के स्वप्न सूचित जन्म हुआ। स्वप्नानुसार नाम रखा गया अरुण कुमार....

बचपन से अरुण बालसूर्य की तरह चमकने लगा, धर्म प्रति अति लगाव होने से जैन धार्मिक पाठशाला में लगातार पांच वर्ष अभ्यास किया और संसार के भौतिक सुख पानी बुलबुल जैसे क्षणिक एवं नाशवंत है, ऐसा स्वभाव जानकर वैराग्य प्राप्त हुए प्रकाण्ड विद्वान पूज्यपाद पंन्यास श्री अभयसागरजी म.सा. के सानिध्य में भागवती दीक्षा अंगीकार की। नाम रखा मुनिश्री अशोकसागरजी म.।

पश्चात शास्त्र अध्ययन-अध्यापन करते-कराते शास्त्रज्ञ बने। प्रवचन पीठ पर से धाराप्रवाह एवं जोशीला वाणी द्वारा धर्मसभा मंत्रमुग्ध बनने लगी जिससे अल्पावधि में प्रभावक प्रवचनकार बने.... तब से शासन प्रभावना का सिलसिला जारी हुआ....

पालीताना जंबुद्वीप संस्था है जो पृथ्वी घूमती नहीं, पृथ्वी फिरती नहीं और एपोलो चांद पर पहुंचा नहीं ऐसे त्रिसूत्री अभियान को अनेक सेमिनारों द्वारा प्रचार-प्रसार किया और बुद्धि जीवों लोकों को सत्य का मार्ग दिखलाया। प्रेक्टिकल प्रयोगात्मक बनाने के लिए विज्ञान भवन का निर्माण करवाया जिसका उद्घाटन तत्कालीन गृहमंत्री श्री लालकृष्ण अडवानी के करकमलों से हुआ।

इस दौरान उज्जैन श्री माणिभद्र तीर्थ, बिबड़ौद तीर्थ-करमदी रतलाम आर्य रक्षित सूरितीर्थ धाम, अजित शांति तीर्थ धाम आदि के जीर्णोद्धार प्रेरक बने और श्री नागेश्वर तीर्थ, मांडवगढ़ सेमलिया, श्री जंबूद्वीप तीर्थ के मार्गदर्शक बने और अनेक छोटे-बड़े जिनालय, उपाश्रय के प्रेरणादाता, प्रतिष्ठाकारक बने।

आपकी जोशीली वाणी और संयम सुवास से आकर्षित होकर परिवार के छः व्यक्ति तथा अन्य अनेक मुमुक्षु ने भागवती दीक्षा स्वीकार की जिससे वे बाद में सागर समुदाय में प्रतिभा सम्पन्न आचार्य प्रतिष्ठित बने।

विश्व में एक मात्र सुवर्ण आगम मंदिर ब्राह्मणवाडजी तीर्थ में निर्माण करवाकर सागर समुदाय की मोनोपाली बरकरार रखी।

गुजरात महुवा में कथाकार मोरारी बापू द्वारा आयोजित सर्वधर्म सम्मेलन में वरिष्ठजैनाचार्य के रुप में आप आमंत्रित हुए। सभा में धाराप्रवाह प्रवचन शैली सुनकर बापू रहित सभाजन आचार्य चकित हो उठे ऐसी आपकी वाणी का जादू रहा है। महुवा श्री संघ ने बहुमान पत्र अर्पित किया।

अंत में आपकी एक खासियत कहो के पुण्याई कहो, कोई भी जैन धार्मिक संस्था आर्थिक राजकीय, पारिवारिक-सामुदायिक असमंजस या मतभेद का शिकार बनी हो तो उसमें संस्था को कैसे बाहर निकालना उसमें आप अच्छे माहिर है। इसी वजह से आज कितनी ही संस्था के उद्धारक प्रेरक, जीवनदाता, बने.... जो सदैव स्मरणीय रहेगा।

इस प्रकार जिनशासन की अनेक प्रकार से प्रभावना करने की वजह से आप जिनशासन प्रभावक पूज्यपाद आ.श्री अशोक सागर सूरीश्वरजी म.सा. बने।

जिनशासन की अपूर्व प्रभावनाः -

✻ 135 प्राचीन/ अप्राचीन जिनालय जिर्णोद्धार प्रतिष्ठा करवाई।

✻ 7 तीर्थो का जीर्णोद्धार सेमलियाजी, उज्जैन श्री माणिभद्र यक्षराज धाम।

✻ 5 शिखरीय महाप्रसाद मांडवगढ़ महातीर्थ शत्रुजंय धाम करमदी रतलाम, ब्राह्मणवाडा (राज.)

✻ बिंबड़ैद अजित शांतितीर्थ ऊंझा (गुजरात)।

✻ आर्यरक्षित तीर्थं मंदसौर (म.प्र.)

✻ 45 आगमोद्धारक श्री सागरानंद सूरीजी म.सा., गुरु मंदिर मूर्ति-चरण पादुका की स्थापना करवाई।

✻ 21 जैन संघों की स्थापना।

✻ 26 ज्ञान दर्शन चारित्र के उपकरणवाले अनेक छोड़े सहित उजमणे।

✻ 50 उपाश्रय, आराधना भवन के प्रेरणादाता-उद्घाटक।

✻ 45 जिनमंदिरों की अंजनशलाका।

✻ 32 बार श्रावक की विरति स्वरुप उपधान तप की आराधना।

✻ 18 बार श्रीशत्रुजंय महातीर्थ की 99 यात्रा

✻ 25 बार समूह नवपद ओली की आराधना।

✻ 70 तपस्वियों को 100 ओली पारणे करवाये।

✻ 30 गुरु भगवंतों को पदवी प्रदान की।

✻ पू.सा. नवरत्नाश्री म. महोत्सवपूव 200 ओली का पारणा।

✻ 250/500 ओली पारणोत्सव पू.सा. कल्पबोध श्रीजी म.सा. पालीताना/सूरत में।

✻ 108 उपवास के पू.कलासुंदर वि.म., पू.सा. गिरांशु श्रीजी म., किंजलबेन, वीणा बेन दुग्गड़ केपारणोत्सव में निश्रा।

✻ पाली चार्तुमास दौरान 22 पू.आचार्य का सम्मेलन में निश्रा।

✻ पालीताना जम्बूद्वीप में विश्व विराट 108 फीट दादा श्रीआदिनाथ प्रभु प्रतिमा का प्रतिष्ठा महोत्सव एवं सर्वप्रथम बार दादा श्रीआदिनाथ के 13 भव को ''ऋषभ सप्ताह'' के माध्यम से प्रस्तुति (रामायण जैसी) करवाया।

✻ आगमोद्धारकश्री की वाणी याने 15 वर्ष के श्री सिद्धचक्र मासिक का पुनः प्रकाशन करवाया।

✻ शासन प्रभावना पू.आ.श्री चन्द्रसागर सूरिजी म.सा. प्रेरित श्री सिद्धचक्र समाज का उद्धार पुनः समूह ओली प्रारंभ।

✻ विश्व में एक मात्र सुवर्णाक्षरीय आगम मंदिर निर्माण ब्राह्मणवाड़ (राज.) में करवाया।

✻ 45 आगम आराधना विधि के लिए सर्वप्रथम बार पुस्तक संकलन एवं आराधना आरंभ करवाई पालीताना आगम मंदिर में।

✻ साधर्मिक भक्ति फण्ड के लिये सौभाग्यशाली पेथड़शाह धन्ना शाह के तैल चित्रावली का निर्माण।

✻ पू.सागरजी म.सा. के गुरु पू. झवेरसागरसूरीजी म.के हस्तलिखित पत्रावली खजाना भंडार बनवाया।

✻ रतलाम देवसूर तपागच्छ श्री संघ रक्षण संर्वधन के लिये अनेक प्रयास एवं गुजराती उपाश्रय के लिये प्रयास जारी।

✻ जीवन में तपस्या- 2 वर्षीतप, वर्धमान तप की 52 वीं ओली, 1 अट्ठाई, नवपद ओली 70, अट्ठम 25,आदि छोटीबडी अनेक बड़ी तपस्या, 25 बुक लेखन।

✻ वर्तमान में श्री नागेश्वर तीर्थ, उज्जैन श्रीमाणिभद्र तीर्थधाम, अंजित शांति तीर्थ धाम, मांडवगढ़तीर्थ, करमदी तीर्थ के मार्गदर्शक है।

बंधु त्रिपुटी की निश्रा में आगर में वर्षीतप पारणा के बाद सुनेल में प्रतिष्ठा महोत्सव

नागेश्वर- जैनाचार्य अपूर्व मंगल रत्नसागरसूरीजी महाराजा के गुरुकुल के बंधु त्रिपुटीमुनि भगवंत श्री आगम-प्रशम-व्रजरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा बंधु त्रिपुटी नागेश्वर से विहार इन्दौर होते हुए पिपलोन पधारे। यहां से आगर विहार किया जहां आपकी निश्रा में 16 से 24 अप्रेल तक वर्षीतप पारणा महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। यहां से प्रतिष्ठा हेतु सुनेल पधारेगे। 29 अप्रेल से 4 मई तक प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित है।

गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी की निश्रा में महिदपुर में वर्षीतप पारणा का यादगार कार्यक्रम हुआ

महिदपुर- गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागरजी म.सा. साध्वी श्री मुक्तिदर्शना श्रीजी आदि ठाणा की निश्रा में यहां वर्षीतप पारणा का आयोजन 23 अप्रेल को अक्षय तृतीया पर किया गया। वर्षीतप भी आपकी प्रेरणा से आरंभ हुआ था इसके पूर्व आप उज्जैन में नवपद ओली आराधना में निश्रा प्रदान कर महिदपुर पधारे थे जहां आपकी जोरदार अगवानी हुई थी। वर्षीतप पारणा महोत्सव में पूजन महापूजन प्रभावना आदि के साथ अच्छा रहा।

मुनिराज श्री ज्ञानेशतत्नसागरजी म.सा. को वर्षीतप पारणा

भरुच-श्रीजैन श्रीसंघ भरुच में युवा मुनिराज श्री ज्ञानेशतत्नसागरजी म.सा. का वर्षीतप पारणा निमित्त शक्रस्तव अभिषेक का आयोजन किया गया। पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीजी महाराज 266 ओली आराधक श्री आचार्य श्रीचन्द्ररत्नसागरसूरीजी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनि श्री चैत्यरत्न सागरजी, मुनि श्री गोयमसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में दिनांक 23 अप्रेल को आयोजित तप पारणा महोत्सव में तपोवंदना, गुणानुवाद सभा हुई श्रीसंघ ने तपस्वी मुनिराज श्री ज्ञानेशतत्नसागरजी म.सा. का वर्षीतप पारणा करवाया।

एक अद्‌भूत श्रुतवीर-मुनि जिनविजयजी महाराज

1917 में पूना में भंडारकर विद्या शोध संस्थान की स्थापना हुई थी। देश-विदेश के विद्वान का यहां आगमन होने लगा। राजस्थान में जैन समाज का एक शिष्टमंडल इस संस्थान के संस्थापक से भेंट करने के लिये आता है, मुंबई के मंडलों ने यहां स्थिरता करने वाले श्रुतवीर मुनिराज जिनविजयजी को आमंत्रित किया। मुनिश्री मुंबई में चार्तुमास के लिये विराजित थे। शिखर मंडलों के आमंत्रण मिलने के बाद मुनिश्री ने मुंबई से पूना के लिये विहार किया।

भण्डार का संस्थान को पूज्यश्री का मित्र मंडल मुनिश्री से मिलने के लिये बहुत उत्सुक था, चलते-चलते मुनिश्री को अपने आयुष्य की घंटी वापस भविष्य की ओर ले जाते दिख रही थी।

मुनिश्री जिनविजयजी मूलतः उदयपुर (राज.) के रुपहेली गांव के रहने वाले थे। आपका संसारी नाम श्री किशनसिंह परमार था। बचपन में ही आपके माता-पिता का निधान हो गया था। माता-पिता के निधन के बाद आपके जीवन में भटकाव शुरु हो गया आप घूमते-फिरते गुजरात के अहमदाबाद नगर पहुंचे। यहां आपका कोई नहीं था। रात्री में एक दुकान की सीढ़ियों पर सो रहे थे कि पुलिस ने चोर समझ कर पकड़ लिया, पुलिस स्टेशन लाकर उनसे पूछताछ की गई, सच्चाई जान लेने पर पुलिस ने उन्हें छोड़ दिया। मन में पढ़ने लिखने के भाव थे, बहुत ही लगन थी, जीवन चलाने और पढ़ने के लिए पैसे की आवश्यकता होती है, आप एक होटल में मजदूरी करने लगे, यहां आप झूठे बर्तन मांजने का काम करते थे, दिनभर के काम के बाद आपको चार आने मिलते थे, शिक्षा प्राप्त करने इच्छा से आपने अनेक जैन व्यापारी और साधुओं से भेंट की, अहमदाबाद से आप पालनपुर आये, पालनपुर आने पर आपको यह स्थिरता कर रहे मुनि सुन्दर विजयजी से मिलना हुआ, मुनिश्री ने आपके पढ़ने-लिखने की उत्सुकता को जानकर आपको खर्च की व्यवस्था का भार उठा लिया।

1903 के मार्गशीर्ष महिने में आपने श्वेतांबर जैन मंदिर में दीक्षा ग्रहण कर ली। किशनसिंह परमार मुनि जिनविजय जी बन गये, इसके बाद मुनिश्री विजय वल्लभ सूरीजी और मुनि श्री कांतिविजयजी के सानिध्य में रहते हुए आपने संस्कृत, प्राकृत के साथ जैन तत्वों का गहराई से अध्ययन किया इसमें आपश्री ने बहुत गहन अध्ययन किया। मुंबई समाचार पत्र और अनेक पत्रिका में आपश्री के आलेख छपना शुरु हुए, आपके आलेख बहुत ही ज्ञान और शोध प्रेरक होने से आपकी प्रसिद्धि बढ़ने लगी। विहार यात्रा चल रही थी, भंडार का शोध संस्थान में अध्ययन करते हुए अनेक मित्रों से आपका मिलना हुआ परन्तु पूना में अधिक समय तक रहना संभव नहीं लग रहा था, यहां आपके आलेख राजस्थान, कांग्रेस के नेता पंडित अर्जुनलाल ने भी पढ़े और उनसे भेंट हुई। आपने लोकमान्य तिलक के भाषणों को समय-समय पर सुना। भंडार का शोध संस्थान् के ग्रंथालय में सम्पादित पुस्तकों, ग्रंथों, शास्त्र को देखा। धार्मिक शिक्षण प्राप्त करने के बाद डॉ. भंडारकर ने समाज क्षेत्र में काम करना आरंभ कर दिया था, गांधीजी के व्याख्यान सुनकर मुनिश्री का मन बहुत बैचेन अस्वस्थ हो गया। एक ओर देश की पराधीनता और दूसरी और लोगों के जीवन की कठिनाईयां थी, मुनिश्री जिनविजयजी को निष्क्रिय संन्यासी और त्यागी जीवन असहज लगने लगा, मन में अंतर द्वन्द चल रहा था, मन में अनेक प्रकार के विचार आ-जा रहे थे, बहुत सोच विचार कर आपने संन्यासी जीवन छोड़कर सार्वजनिक जीवन में आने का निर्णय ले लिया। लेकिन इसके बाद क्या ? जीवन में क्या करना यह भी एक बड़ा प्रश्न था। इस प्रश्न का उत्तर उन्हें प्राप्त हो गया। अब वापस शोध कार्य करने का निश्चय किया। मुनिश्री फर्ग्युसन कॉलेज के होस्टल में रहने लगे, यहां के अनेक विद्यार्थी उनके मित्र बन गये थे। एक दिन काम करते हुए उन्हें पता चला कि- पोस्टमेन उनके नाम का तार लेकर आया है। जब तार देखा तो पता चला कि तार महात्मा गांधी ने भेजा है, तार में लिखा था कि **''तुरन्त ही मुंबई आओ''** तार देखकर मन में हलचल मच गई, क्या कारण है ? क्यों बुलवाया है, एक परिचित विद्यार्थी को बोलकर मुंबई की टिकिट बनवाई। ट्रेन में बैठने के बाद से मन की बैचेनी दूर नहीं हुई, विचार करने लगे कि- लगता यह यात्रा जीवन में कोई बड़ा बदलाव लाने वाली बनने वाली है। मन में अनेक कल्पना चलने लगी। मुंबई पहुंचने पर सेठ जमनालालजी बजाज के यहां महात्मा गांधीजी से मिलना हुआ। महात्मा गांधी ने आपसे बात करते हुए अवगत कराया कि- अहमदाबाद में गुजरात विद्यापीठ की स्थापना करने का विचार चल रहा है।

ब्रिटिश सरकार से इस काम के लिये एक भी पैसा नहीं लिया जायेगा, सब पैसे की व्यवस्था मैं स्वयं करुंगा, ऐसी भावना महात्मा गांधी ने व्यक्त की। सरदार पटेल ने गांधीजी के इस प्रस्ताव की अनुमोदना की। अहमदाबाद के दयाभाई मेहता के बंगले में विद्यापीठ में स्थापना करने का निर्णय लिया गया। श्री इन्द्रलाल याग्दनिक पंडित सुखलाल संघवी, आचार्य जे.बी. कृपलानी, नानाभाई भट्ट, रामनारायण पाठक, काका कालेलकर, दीनबंधु सी.एफ. एन्थ्रुज और रसीकलाल पारिख को गांधी जी ने प्राध्यापक पद पर नियुक्त किया गया। महात्मा गांधी को कुलगुरु (कुलपति) बनाया गया और मुनिश्री जिनविजयजी को पुरातत्व विभाग का प्रमुख नियुक्त किया गया और गुजरात पुरातत्व संस्था या कहे मंदिर का प्राचार्य भी बनाया गया। सभी विद्वानों को मुंबई से अहमदाबाद जाने के लिये महात्मा गांधीजी ने टिकिट बनवाई। सभी एकीकृत होकर गुजरात विद्यापीठ शुरु करने के लिये तैयार हो गये। मुनिश्री का गुजरात में रहने के लिये अपना कोई घर नहीं था, महात्मा गांधीजी ने आपको साबरमती आश्रम में रहने का प्रबंध किया। वहां से कमरा साफ करवाया गया। कस्तुबा गांधी भी यही रहती थी, मुनिश्री कंदमूल नहीं खाते थे, आप अपना भोजन स्वयं तैयार करते थे और पानी गर्म करके पीते थे, उस समय कोई सेवक था नहीं। मुनिश्री आठ दिन महात्मा गांधीजी आश्रम में रहे। आपकी जीवन शैली दिनों दिन बदल रही थी, रात्री में सब मिलकर बातचीत करते और दिनभर कड़ी मेहनत कर गुजरात विद्यापीठ स्थापना और विद्यापीठ की प्रगति का काम चलता रहता था पर आपके कार्य विचार अलग-अलग चल रहे थे। गुजरात विद्यापीठ में 8 वर्ष तक 1928 तक कार्य करने के बाद आपने इस कार्य से मुक्त होने का निर्णय लिया। गांधीजी को अपनी अपनी आगे की सब कल्पनाओं और कार्यों से अवगत कराया। पुरातत्व विभाग के प्रमुख पद पर कार्य करते समय पुरातत्व शास्त्र और भारत विद्या (Indology) इस विषय पर व्यापक कार्य करने की इच्छा बतलाई, गांधीजी समिति ने आपकी इच्छा के अनुसार जर्मनी जाने और प्राचीन भारतीय इतिहास पर शोध कार्य करने की सहमति दे दी आप जर्मन रवाना हुए।

जर्मनी में प्राचीन भारतीय इतिहास पर शोध-संशोधन करने की परम्परा बहुत प्राचीन है। हर्मन ओल्डनबर्ग, रिचर्ड पिस्वेंल आदि शोधकर्ता इस क्षेत्र में प्रसिद्ध थे, जर्मन विद्यापीठ में इस विषय पर विस्तार से कार्य हुआ है, राजा विलियम के मार्गदर्शन में एवं उनके दिये अनुदान से अनुसंधान शोध का काम आगे बढ़ाया। मुनिश्री हॅमबर्ग और लियझीग इन दो विद्यापीठ में शोध करते रहे। इसके साथ ही राजधानी बर्लिन में अनेक ऐसे विद्वानों से भी भेंट की जो विविध विचारधारावाले थे। जर्मन में रहते हुए आपश्री के ज्ञान बहुत विकास हुआ। जर्मन में शाकाहारी भोजन प्राप्त करने में बहुत कठिनाई थी इतने वर्षो बाद ऐसी कोई समस्या 1928 वर्ष के बाद बनेगी, ऐसा मुनिश्री ने सोचा भी नहीं था, इसकी कल्पना भी नहीं थी। जैन धर्म में शाकाहार पद्धति है इस बारे में एक गोष्ठी में उल्लेख किया। बर्लिन में रहनेवाले अनिवासी भारतीयों को एकत्र कर हिन्दुस्थान एसोसिएशन की स्थापना की कालांतर में इस संस्था के अंतर्गत शुद्ध शाकाहारी भोजन मिलने की व्यवस्था आरंभ की, अनेक भारतीय विद्यार्थी शाकाहार भोजन का स्वाद लेने लगे। देश विदेश में इसकी चर्चा होने लगी और स्वतंत्रता की कल्पना साकार होते देखने लगे, मुनिश्री वर्ष 1929 तक जर्मन में रहे।

जर्मन से आने के बाद आपने लाहौर अधिवेशन में भाग लिया, इसमें पूर्ण स्वराज्य को स्वीकार किया गया। दांडी सत्याग्रह में भाग लिया और नासिक की जेल में कारावास हुआ। यहां आपकी भेंट विख्यात हिन्दी लेखक कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी से हुई। एक साथ रहते हुए समय प्रसार किया। गुरुदेव रविन्द्रनाथ टैगोर के आमंत्रण का मान रखकर शांति निकेतन में 10 वर्षा तक जैन तत्वज्ञान और संस्कृति विषय के प्राध्यापक के रुप में काम किया। 1947 में भारत आजाद हो गया। भाषा के आधार पर प्रांतों की, राज्य की, स्थापना के अंतर्गत, राजस्थान राज्य की स्थापना हुई। मुनिश्री भी राजस्थान से थे, यहां आपने भण्डारकर संस्थान के आधार पर राजस्थान ओरियटंल रिसर्च इंस्टिट्यूट की स्थापना की, राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्रप्रसाद ने इसका भूमि पूजन करने के साथ आर्थिक संवर्धन भी करवाया। इस संस्था के अंतर्गत रहते हुए मुनिश्री जिनविजयश्री ने अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों का सम्पादन किया, राजस्थान राज्य की संस्कृति और प्राकृत हस्तलिखित ग्रंथों को एकत्र करने के साथ दो खंडों का कोश का निर्माण भी किया। इसके साथ ही राजशेखर सूरीजी के द्वारा लिखित प्रबंध कोश, मेरुतुंग लिखित प्रबंध चिंतामणी, आहदमान लिखित संदेशशासक राजाधिराज भोजदेव विरचित शहंगार मंजिरी कथ, कुंभकर्ण नृपती विदचित

नृत्यरत्नकोश, राजस्थान हस्तलिखित ग्रंथों की ग्रंथ सूची चार भागों में तैयार की। प्रख्यात जैन चिंतक और संशोधन विश्वकोश (चार खंडों में) जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों का सम्पादन और प्रकाशन का महत्ता कार्य आपके वरदहस्ते हुआ। इस कार्य के गौरवपूर्ण योगदान के लिये भारत सरकार के साथ भारत के राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के द्वारा मुनिश्री को ''पुरातत्वाचार्य'' की उपाधि के साथ पद्मश्री की उपाधि से विभूषित किया गया। संशोधन किये गये ग्रंथों के आधार पर आपने अनेक ललित लेखों की रचना भी की। आपके सभी आलेख समय-समय पर विविध मासिक पत्रिका, समाचार पत्रों में प्रसिद्ध हुए इसका आपका अपार साधुवाद मिला। ''मेरे कुछ दिवंगत मित्रों के पत्र'', ''मुनिश्री जिनविजयजी की कहानी, पत्र व्यवहार की जुबानी'' आपके इन दोनों ग्रंथों का प्रकाशन बहुत प्रसिद्ध हुआ।

मुनिश्री जिन विजयजी महाराज और राहुल सांस्कृत्यायन का आपस में बहुत गहरा सम्बन्ध और मित्राता थी। उड़िसा राज्य के खंडगिरी पर्वतमाला पर राजा खारवेल के द्वारा लिखित प्राचीन शिलालेख की खोजबीन की, यह शिलालेख मुनिश्री के ''प्राचीन शिलालेख संग्रह'' नाम से प्रकाशित ग्रंथ में छपा इसे भी बहुत प्रसिद्धी मिली। महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन के द्वारा एक प्रतिष्ठित संगोष्ठी में इसके बारे में एक वाक्य बोले- **मुनिश्री ''यह ठीक है पर भारत का इतिहास एक बार पुनः लिखने की आवश्यकता है''** आपने बिहार राज्य में जैन साहित्य प्रकाशन संस्था आरंभ की। आपके निधन के बाद मुनिश्री के स्मरण में बौद्ध प्रकाशन संस्था का शुभारंभ किया गया परन्तु मुनिश्री जिनविजय महाराज के जीवन को देखने से पता चलता है कि- आप सम्पूर्ण जीवन सतत् कार्यरत रहे, 75 वर्ष की अवस्था में भी जब आंखों से दिखता नहीं था, हाथ पैर काम नहीं करते थे तब भी आप काम में लगे रहते थे। एक परिचित ने अपने पत्र में आपके बारे में लिखा है कि **'' हाथ दुखते थे, आंखों से दिखता नहीं था, माथा दुखता था तो भी काम करते थे। उन्हें दूसरे का किया गया काम पसंद नहीं आता था।** आपश्री कर कहना थाकि -कुंठाग्रस्त धर्म, समाज, द्वेष करनेवालों की भावना का मैं समर्थक नहीं हूं, मैं तो गुणत्यागी हूं, सम्पूर्ण जगत को एक समान दृष्टि से देखता हूं, यही ऐतिहासिक दृष्टि मनुष्य को समृद्ध करती है, सम्यक ज्ञान प्राप्त करवा देती है। साम्प्रदायिक मोह, असत्य की ओर ले जाता है।सिर्फ आयुष्दान होना यह प्रमाणिक नहीं है बल्कि कलात्मक जीवन अनेक गुणा के साथ निर्माण होता है ऐसी बातें लोगों की अच्छी नहीं लगती है। आज मुनिश्री को जाने को चार दशक हो गये है, जैन धर्म के त्याग और तत्व पर आपने जन्मभर काम किया, वर्धमान श्री महावीर स्वामीजी भी त्याग की मूर्ति थे पर आज भारती पुरातत्व संशोधन की स्थिति अच्छी नहीं है, मुनिश्री जिनविजयजी के आदर्श पर चलना चाहिए, उन्होंने एक क्रांति की है, इस इतिहास में सब अंतरद्वेष नष्ट हो इसी भावना से !

गुलामी से आजादी की रचना

अमर लेखिका हैरियट एलिजबेथ स्टो ने अपनी विश्व विख्यात पुस्तक -टाम काका की कुटिया- किन जटिल परिस्थितियों के बीच रहते हुए लिखी, यह बहुत कम लोगों जानते हैं। आम जानकारी तो इतनी ही है कि इस क्रांतिकारी ग्रंथ ने अमेरिका से दासत्व की प्रथा उठा देने में अनुपम भूमिका का निर्वाह किया।

उन्होंने अपनी भाभी के पत्र का उत्तर देते हुए लिखा था- चुल्हा, चौका, कपड़े धौना, सिलाई, जूते गांठना आदि की व्यस्तता बनी ही रहती है। बच्चों के लिए तैयारी, दिन भर सिपाही की तरह ड्यूटी देनी पड़ती है। छोटा बच्चा मेरे पास ही सोता है। वह जब तक सो नहीं जाता, कुछ भी लिख नहीं सकती। गरीबी और काम का दबाव बहुत है, फिर भी भाभी, सच मानना, मेरे मन में गुलामी के प्रति तेज आग धधक रही है, सो जिंदा रही तो कुछ ऐसा जरुर लिखूंगी, जो अमेरिका के सिर पर से मानवीय दासता को लादे रहने का कलंक छुड़ा सके।

गरीबी और कठिनाईयों से घिरा रहकर भी मनुष्य इस अंत-प्रेरणा से प्रेरित हो तो इतना कुछ कर गुजर सकता है, जो उस व्यक्ति को अमर बनाने और समय को बदल देने की भूमिका निभाने के लिए पर्याप्त कहा जा सके। दुनिया जानती है कि श्रीमती स्टो ने जो साहित्य घोर विपन्न परिस्थितियों में रहते हुए लिखा, वह करोड़ों दासों को गुलामी से मुक्ति दिलाने और अमेरिका के सिर पर से कलंक का टीका छुड़ाने में कितना महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है।

पीपल को क्यों पूजा जाता है, इसके औषधीय गुण...

✻ ''पीपल'' अकेला ऐसा पौधा है जो दिन रात 24 घंटे ऑक्सीजन देता है ।

✻ ''पीपल''के ताजा 6-7 पत्ते लेकर 400 ग्राम पानी में डालकर 100 ग्राम रहने तक उबालें, ठंडा होने पर पीए, बर्तन स्टील और एल्युमिनियम का नहीं हो, आपका हृदय एक ही दिन में ठीक होना शुरु जो जाएगा।

✻ ''पीपल'' के पत्तों पर भोजन करने से लीवर ठीक हो जाता है।

✻ ''पीपल'' के सूखे पत्तों का पावडर बनाकर आधा चम्मच गुड़ में मिलाकर सुबह, दोपहर, शाम खाये, कितना भी पुराना दमा हो ठीक कर देता है।

✻ ''पीपल'' के ताजा 4-5 पत्ते लेकर पीसकर पानी में मिलाकर पिलायें, 1-2 बार में पीलिया में आराम देना शुरु कर देता है।

✻ ''पीपल'' की छाल को गंगाजल में घीसकर घाव पर लगायें तुरन्त आराम देता है।

✻ ''पीपल'' की छाल को खांड (चीनी) में मिलाकर दिन में 5-6 बार चूसे, कोई भी नशा छूट जाता है।

✻ ''पीपल'' के पत्तों का काढ़ा पीयें, फेफड़े, दिल, अमाशय और लीवर के सभी रोग ठीक कर देता है।

✻ ''पीपल'' के पत्तों का काढ़ा बनाकर पीयें, किड़्नी के रोग ठीक कर देता है व पथरी को तोड़्कर बाहर करता है।

✻ ''पीपल का पेड़'' कितना भी डिप्रेशन हो, पीपल के पेड़के नीचे जाकर रोज 30 मिनिट बैठिए डिप्रेशन खत्म कर देता है।

✻ ''पीपल'' का फल और ताजा कोपलें लेकर बराबर मात्रा में लेकर पीसकर सुखाकर खांड मिलाकर दिन में दो बार लें, महिलाओं के गर्भाशय और मासिक समय के सभी रोग ठीक करता है।

✻ ''पीपल'' का फल और ताजा कोपले लेकर बराबर मात्रा में लेकर पीसकर सुखाकर खांड मिलाकर दिन में दो बार लें, बच्चों का तुतलाना ठीक कर देता है और दिमाग बहुत तेज करता है।

✻ ''पीपल का पेड़'' जिन बच्चों में हाइपर एक्टिविटी होती है, जो बच्चे दिन रात दौड़ते भागते है, सोते कम है, पीपल के पेड़ के नीचे बैठाइएं सब ठीक कर देता है।

✻ ''पीपल का पेड़'' कितना भी पुराना घुटनों का दर्द हो, पीपल के नीचे बैठें 30 से 45 दिन में सब ठीक हो जाएगा।

✻ ''पीपल'' शरीर में कहीं से भी खून आये, महिलाओं को मासिक समय में रक्त अधिक आता हो, बावासीर में रक्त आता हो, दांत निकलवाने पर रक्त आये, चोंट लग जाये, 8-10 पत्ते पीसकर, छानकर पी जाएं, तुरन्त रक्त का बहना बंद कर देता है।

✻ ''पीपल'' शरीर में कहीं भी सूजन हो, दर्द हो, पीपल के पत्तों को गर्म करके बांध दें ठीक हो जायेगा।

धर्म-बीज

उस किसान ने कहा- मैंने खेत खोदा, बहुत खाद भी डाला, पानी का सिंचन भी बहुत किया, जमीन भी अच्छी थी फिर भी फसल क्यों नहीं उगती ? कुछ भी समझ में नहीं आता। सुननेवाला विचार करने लगा, ऐसा क्यों ? **''खेड, खातर ने पाणी नशीबने लावे ताणी''** यह कहावत क्या झूठ होगी ? जरुर बुनियाद में ही भूल होनी चाहिये। अचानक उसे याद आया और पूछा- हं.... किसानभाई ! आपकी सब बात सही है.... आपने पूरी मेहनत की यह भी बराबर है, लेकिन आपने बीज बोये थे ?

किसान ने सिर खूजलाते हुए कहा- अरे...! यह तो मैं बिलकुल भूल ही गया ! अभी आपने पूछा तो याद आया।

हमारी धर्मक्रिया भी शायद इसीलिए फलीभूत नहीं है क्योंकि बीजाधान नहीं हुआ।

धर्म का बीज है : धर्म की प्रशंसा। धर्म को देखकर मन में प्रमोद होना और वह प्रशंसारुप से बाहर आये वही धर्म प्रशंसा है, धर्म का बीज है।

हमें जन्म से ही जैन कुल मिला, देव और गुरु मिले, धर्म की सामग्री मिली, परन्तु हमारा हृदय अंकुरित क्यों नहीं होता ? लगता है हमने धर्म की प्रशंसा नहीं की, उस किसान की तरह हमने भी बीज नहीं बोये है। एक बार बीज बोने के बाद फिर जिनवाणी की वर्षा होती है तो, फिर देखो मजा।

हमारी समग्र अस्मिता बदल जायेगी और हृदय नंदन-वन बन जायेगा।

श्री सुनक्षत्र मुनि का दृष्टांत

एक समय श्रमण भगवान श्रीमहावीर स्वामी श्रावस्ती नगरी में पधारें। गोशालक भी उसी नगरी में आया। नगरी में यह अफवाह फैली कि ''आज नगर में दो सर्वज्ञ पधारें हैं। एक श्रमण भगवान् श्रीमहावीर और दूसरे मंखलीपुत्र गोशालक।'' गौचरी के लिये गये हुए श्री गौतमस्वामी ने यह बात सुनी तो आते ही उन्होंने भगवान् से पूछा- ''गुरुदेव ! यह गोशालक कौन है ? जिसकी मनुष्यों ने सर्वज्ञ के नाम से चर्चा हो रही है।'' भगवान् ने कहा- गौतम ! सुनो, सरवण नाम के गांव में मंख जाति का एक पुरुष रहता था। उसके भद्रा नाम की पत्नी थी। उसकी कुक्षि में इसका जन्म हुआ है। बहुतसी गायों के रखाने वाले एक ब्राह्मण की गौशाला में जन्म होने से इसका नाम गोशालक रखा गया था। जब यह जवान हुआ, उस समय छद्‌मस्थावस्था में मेरा राजगृही चार्तुमास था। वह भी घूमता हुआ वहां आ पहुंचा। वहां मेरा चार महीने के उपवासों का पारणा खीर से हुआ। उसकी महिमा देख उसने विचार किया कि ''यदि मैं भी इनका शिष्य हो जाऊं तो मुझे भी सदा मिष्टान्न खाने को मिलेंगे। अतः मुझ से कुछ भी पहले परामर्श किये बिना ''मैं आपका शिष्य हूं'' कहकर यह मेरे साथ चल पड़ा। 6 वर्ष तक मेरे साथ रहा। एक समय किसी तापस को देखकर इसने उसकी मजाक उड़ाई ''यह तो जुंओं का घर है।'' ऐसा कहकर यह ठहाका मारकर हंसने लगा। इससे तापस ने क्रोधित होकर गोशालक पर तेजोलेश्या छोड़ी। मैंने उस पर फौरन शीतलेश्या छोड़ी, जिससे इसकी रक्षा हुई। तब इसने तेजोलेश्या उत्पन्न करने का उपाय पूछा। मैंने भी भवितव्यता जानकर इसे तेजोलेश्या की विधि बताई। अतः मुझसे अलग होकर छह महीने तक कष्ट सहकर उसने तेजोलेश्या की साधना की और अष्टांग निमित्त का भी किसी से ज्ञान प्राप्त किया। इस तरह से अब यह लोगों के सामने अपने आपको सर्वज्ञ बताता फिरता है; परन्तु यह झूठा है। यह जिन नहीं है और न ही सर्वज्ञ है।

भगवान् की बात सुनकर त्रिक (तिराहे-जहां तीन मार्ग इकटठे होते हैं उस जगह) और राजमार्ग में सभी लोग चर्चा करने लगे ''यह गोशालक सर्वज्ञ नहीं है ? यह सर्व वृत्तांत किसी मुर्ख से गोशालक ने सुना तो वह क्रोध से आगबबूला हो उठा। उस समय आनंद नाम का एक साधु गौचरी के लिए जाता हुआ उसने देखा। उसे बुलाकर गोशालक ने कहा- ''आनंद ! मैं तुम्हें एक दृष्टांत सुनाता हूं, सुनो ! कई व्यापारी मिलकर अनेक प्रकार का माल गाड़ियो में भरकर धन कमाने चलें। जब उन्होंने अटवी में प्रवेश किया तब उन्हें वहां बड़ेजोर की प्यास लगी। पानी की खोज करते-करते एक जगह उन्होंने चार बांबियाँ देखी। उसमें से एक बांबी के शिखर को फोड़ा तो उसमें से गंगाजल जैसा निर्मल पानी निकला। सभी ने प्यास बुझाई और रास्ते के लिये जलपात्र भर लिये। जब दूसरा शिखर तोड़ने लगे तो साथ में चल रहे एक वृद्ध वणिक् ने कहा- ''भाईयों ! हमारा काम हो गया है, अब दूसरी बांबी के शिखर को फोड़ने की आवश्यकता नहीं है।'' इसके बावजूद भी उन्होंने दूसरी बांबी फोड़ डाली। उसमें से बहुत-सा सोना मिला। वृद्ध के मना करने पर भी उन्होंने तीसरा शिखर फोड़ा। उसमें से बहुत से रत्न निकले। बूढ़े बनिये के रोकने की परवाह न करके उन्होंने चौथी बांबी भी फोड़ डाली। उसमें से एक अतिभयंकर दृष्टिविष सर्प निकला। उसने सूर्य के सामने देखा और उनके ऊपर दृष्टि फेंककर हितोपदेशक बूढ़े बनिये को छोड़कर सभी को मौत के घाट उतार दिया। इसीलिये हे आनंद ! तुम्हारे धर्माचार्य को ऋद्धि प्राप्त होने पर भी संतोष नहीं है, वह मुझसे ईर्ष्या करता है। मैं अपने तप-तेज से उसे भस्म कर डालूंगा। परन्तु उस वृद्ध वणिक् के समान हितोपदेशक समझकर मैं तेरी रक्षा करुंगा। यह बात सुनकर आनंद भयभीत हुआ और भगवान् के पास जाकर उसने सारा वृत्तांत कहा। भगवान् बोले- ''आनंद ! तू शीघ्र ही गौतमादि मुनियों से जाकर कह कि वह गोशालक यहां आ रहा है; अतः उसके साथ कोई भी संभाषण न करें और तुम सब यहां से इधर-उधर चले जाओ।'' आनंद ने भगवान् की आज्ञानुसार वैसा ही किया।

इतने में गोशालक वहां आ धमका और भगवान् से कहने लगा- ''अरे काश्यप ! तुम मुझे अपना शिष्य बताते हो; लेकिन यह असत्य है। जो तुम्हारा शिष्य था वह तो मर चुका है। मैं तो और ही हूँ। मैं तो उसके शरीर को बलवान जानकर उसमें प्रविष्ट होकर रह रहा हूं।'' किन्तु गोशालक द्वारा किया जा रहा प्रभु का तिरस्कार न सह सकने से तथा गुरु-भक्तिवश सुनक्षत्र नाम के साधु ने गोशालक से कहा- '' अरे ! तुम हमारे धर्माचार्य की निंदा क्यों करते हो ? तुम वही गोशालक

हो, दूसरे नहीं'' यह सुनते ही गोशालक ने क्रोधित होकर तेजोलेश्या का प्रयोग करके सुनक्षत्रमुनि को भस्म कर दिया। वह समाधियुक्त मरकर आठवें देवलोक में देवरुप में उत्पन्न हुआ। उस समय सर्वानुभूति नाम का एक दूसरा साधु भी सर्व जीवों से क्षमायाचना करके अनशन ग्रहण कर गोशालक के सामने आया और बोला- ''जानते हो, हमारे धर्माचार्य की निंदा करने का क्या फल मिलेगा ?'' दुष्ट गोशालक ने उसको भी जला दिया। वह मरकर बारहवें देवलोक में उत्पन्न हुआ। इसके पश्चात भगवान् ने उससे कहा- ''गोशालक! तूं वही गोशालक है, फिर क्यों अपने आपको छिपाता है ? जैसे कोई चोर कोटवाल की नजर में आ जाने पर अपने आपको एक तिनके या अंगुली से छिपाने का प्रयत्न करें तो क्या वह छिप सकता है ? इस तरह तू भी मुझ से सीखकर बहुश्रुत हुआ है, और मेरे ही सामने बकवास करता है।'' मगर प्रभु के इन हितकारी वचनों से शांत होने के बजाय गोशालक और उत्तेजित हो गया और अपने परम-उपकारी प्रभु पर उस दुरात्मा ने तेजोलेश्या फैंकी। मगर वह

सफलता का सूत्र : धैर्य

प्रत्येक व्यक्ति सुगति चाहता है। सुगति, प्रगति व्यक्ति के आचरण पर निर्भर करती है। जीवन को स्वस्थ और आचरण को उन्नत बनाने के लिये तत्वदर्शन को जानना जरुरी है। अकर्मवाद की जीवन-शैली व्यक्ति को निठल्ला बना देती है। भगवान श्रीमहावीर ने पुरुषार्थवाद को अधिक महत्व दिया। भाग्य का योग भी होता है, पर किसी को एकान्त मानकर चलनेवाला कुछ नहीं कर सकता। पुरुषार्थवादी पर किसी को एकान्त मानकर चलनेवाला कुछ नहीं कर सकता। पुरुषार्थ वादी धारणा के आधार पर चलनेवाला जैसी चाहे, वैसी सफलता प्राप्त कर सकता है। जीवन में सफल होने के लिए धैर्यवान होना बहुत जरुरी है। धैर्य जीवन-शैली का अनिवार्य अंग है। टालस्टाय के शब्दों में- चलनी में पानी है, जब तक वह बर्फ न बन जाय, तब तक धैर्य को खंडित नहीं होने दो। यही सफलता का सूत्र है।

तेजोलेश्या भगवान् के चारों ओर तीन बार प्रदक्षिणा देकर वापिस गोशाले के ही शरीर में जा घुसी। गोशालक भभककर बोला- ''हे काश्यप ! तुम आज से सातवें दिन मर जाओगे।'' तब भगवान् ने कहा- मैं तो सोलह वर्ष तक केवली अवस्था में इस भूमण्डल पर विचरण करुंगा। मगर तू तो आज से सातवें दिन असह्य वेदना सहकर इस दुनिया से चला जायेगा।'' गोशालक सीधा अपने स्थान पर आया। सातवें दिन गोशालक के उग्रपरिणाम शांत हो गये। इसलिए उसे सम्यक्त्व का स्पर्श हुआ, जिससे वह विचार करने लगा- ''अहो! मैंने अत्यंत विरुद्ध आचरण किया है। मैंने जिनेश्वर भगवान की आज्ञा का लोप किया। मैंने साधुओं का घात किया। इसके फल स्वरुप अगले जन्म में मेरी क्या गति होगी ?'' उसने तुरन्त शिष्यों को अपने पास बुलाया। उनको खासतौर से कहा- ''आयुष्यमंतो! मेरे मरने के बाद मेरे शब को पैर से बांधकर श्रावस्ती नगरी में चारों तरफ घूमाना, क्योंकि मैंने जिन नहीं होते हुए भी ''मैं जिन हूं'' ? ऐसा संसार में प्रकट किया है।'' इस तरह आत्म निंदा करता हुआ मरकर गोशालक बारहवें देवलोक में उत्पन्न हुआ। शिष्यों ने गुरु की आज्ञा का पालन करने के लिए उपाश्रय के अंदर ही श्रावस्ती नगरी की स्थापना की और दरवाजे बंद करके शब के पैर पर रस्सी बांधकर उसे चारों तरफ घूमाया।

इस कथा का सारभूत उपदेश यह है कि सुनक्षत्र मुनि की तरह अन्य साधुओं को भी गुरुभक्ति में रत रहना चाहिये।

❊ अनंतकाल पूर्व ऊपर खगोल में एक आवाज गूंज उठी- ''तू कौन है ?'' सारा जीव संसार चकित होकर ऊपर की ओर देखने लगा। आवाज फिर गूंजी- ''तू कौन है ?'' अबकी बार सारे प्राणी खगोल की ओर देखकर कुछ सोचने लगे। खगोल ने फिर प्रश्न किया-''तू कौन है ?'' संसार प्रश्न को अनसुना कर अपना काम करता रहा, किंतु मनुष्य चिंतित हो उठा। विचार करने लगा- ''मैं कौन हूं ?'' एक दूसरे की ओर देखते और प्रश्न करते- ''मैं कौन हूं ?'' ने अनेकता से प्रभावित होकर अपना मौलिक रुप खो दिया। कितना अच्छा होता, आकाश के ''तू कौन है ?'' जैसे साधारण प्रश्न का साधारण उत्तर देकर मनुष्य निश्चिंत हो जाता- ''जो तू है, वही में हूं।''

कर्मो का खेल *राजगढ

कर्म राजा कब राजा को रंक और रंक को राजा बना देता है पता नहीं लगता ! कहानी आज से करीब 40 वर्ष पहले की है ! मेरा जन्म एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ। मेरे माता पिता अरिहंत परमात्मा को मानने वाले सरल स्वभाव, ईमानदार और धार्मिक है ! मेरे पिता ने कभी भी अनीति से एक रुपए भी हमारे घर में नहीं लाते थे ! उनके मन में कभी भाव ये थे ही नहीं ! उन्होंने कभी भी भगवान से शिकायत नहीं की जो था, जैसा था उसमें खुश थे ! उस समय हमारे घर के हालात कुछ ठीक नहीं थे ! मेरी मम्मी बहुत तपस्या की, पर उन्होंने कभी वर्षीतप नहीं किया, उनके बहुत भाव थे ! उन्होंने यह बात हम सबको बताइए ! हमने भी उनके भाव देखकर वर्षीतप लेने के लिए हां कर दी ! उस समय सामूहिक पारणे की व्यवस्था नहीं थी ! मम्मी का तपस्या निर्विघ्न चल रही थी ! एक तरफ खुशी थी, चिंता भी, कैसे हम पारणे के लिए पालीताना ले जाए, इतना पैसा था नहीं ! वह समय मैं और मेरी बहन ने पेपर में गृह उद्योग के लिए एक विज्ञापन पढ़ा ! हम दोनों ने सोचा क्यों न हम गृह उद्योग के लिए लोन लेकर लोन के पैसे से मम्मी को पारणा करवाने पालीताना ले जाए ! यह बात जब हमने घर पर बताएं तो, पापा ने साफ मना कर दिया कि झूठ बोलकर पैसा नहीं लाना ! पर हमारे समझाने पर पापा ने हां की, हम दोनों बहनें पैदल कई बैंकों के चक्कर काटे, हम कभी बैंक गए नहीं, ना हमें अधिकारी से बात करना आती थी ! फिर भी हौंसला बुलंद था ! भगवान ने राह बताई और हमें वह बैंक जहां मैं लोन लेना था मिल गई ! दसवीं की मार्कशीट के ऊपर हमने लोन लिया, पापड़-बड़ी बनाने का लोन मिला, हम खुश थे ! पर अब चिंता यह थी ! अधिकारी जांच करने घर आएंगे तो उन्हें सामान क्या बताना ! यह परेशानी हमारे पड़ोसियों को पता थी ! उन्होंने घर के पापड़-पापड़ के डिब्बे हमारे घर पर लाकर रख दिये ! अधिकारी आए और वह संतुष्ट होकर गए। हमने उन पैसों से मम्मी को पालीताना ले गए। हमें मन में संतोष था कि हम कुछ कर पाए ! हमने बैंक का सारा पैसा किस्तों में चुकाया ! जब हम लोन की आखरी किस्त देने जा रहे थे ! तब मेरे पिता ने हम दोनों बहनों को रोककर कहा, तुम दोनों आखरी पैसा जमा करवाने के बाद अधिकारी से माफी मांगना किस परिस्थिति में हमने लोन लिया और आपसे गलत कहा, उसके लिये माफी मांगना ! पिता ने जैसा कहा वैसा ही हमने किया ! जब हमने अधिकारी से यह सारी बात कहीं तो अधिकारी की आंखों में आंसू छलक आए, उन्होंने हमें कहा -जब तुम्हारे माता-पिता ने तुम्हारे ऊपर इतना विश्वास करते हैं तो तुम भी कभी उनका विश्वास मत तोड़ना ! उस समय हम कुछ उनसे कहे नहीं पाये। हमने घर आकर सबको यह बात बताई, सबकी आंखें नम हो चली थी ! एक बात हमने सीखी कि जहां 100 दरवाजे बंद हो जाते हैं, तो भगवान एक दरवाजा जरुर खुला रखता है ! यदि हौंसला बुलंद हो तो कोई काम असंभव नहीं होता ! यह एक सत्य घटना है उन दो बहनों में से एक मैं खुद !

माधुर्य ....

दर्शन से विचार माधुर्य प्रकट होता है !
ज्ञान से उच्चार माधुर्य प्रकट होता है !
चारित्र से आचार माधुर्य प्रकट होता है !
तप से संतोष माधुर्य प्रकट होता है !

आगमोद्धारक की सदस्यता एवं श्रुतभक्ति में दान देने के लिये ऑन लाईन बैंक की जानकारी

महोदय,

आगमोद्धारक की सदस्यता प्राप्त करने के लिये सदस्यता शुल्क एवं श्रुतभक्ति दान आप ऑन लाईन जमा कर सकते है। आपकी धनराशि भेजने के लिये:-

बैंक का नामः- इण्डियन ओवरसीज बैंक, शाखा नईसड़क उज्जैन (म.प्र.)
खाताः- श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, 46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)
खाता क्रं.:- 068002000001425 IFSC Code:- IOBA0000680

श्री वर्धमान विद्या साधना की कुछ बातें....

श्रमण जीवन को साधना से सुगंधमय करती साधना- वर्धमान विद्या है।

वर्धमान स्वामी के प्रति बेहद प्रीति-भक्ति जागृत करने वाली साधना- वर्धमान विद्या है।

साधक जब साधना की पगदण्डी पर एक के बाद एक कदम रखता है, तब उसका स्तर दिन-प्रतिदिन वृद्धिगत होता है।

गुरुकुलवास में रहने वाला साधक अल्प समय में अतिशय योग्यता को प्राप्त करता है। विशेष अध्ययन-अध्यापन करते हुए, आगम ग्रंथों का योगोद्वहन करते हुए आगम शुद्धि प्रगटते ही गुरु भगवंत शिष्य को श्री भगवती सूत्र-महानिशिथ सूत्र के योगोद्वहन करवाते हैं।

श्री भगवती सूत्र के योगोद्वहन के बाद योगोद्वहन करने वाले साधक को गुरु भगवंत श्री लघु वर्धमान विद्या मंत्र की साधना प्रदान करते हैं।

श्री भगवती सूत्र के जोग के 4.5-5.5 महीने की पूर्णाहुति के मध्य में श्री गणि पद प्रदान करते हुए श्री वर्धमान विद्यामंत्र तथा उपविद्या मंत्र प्रदान किया जाता है। चौदह पूर्व सारे विद्याओं के भण्डार है। परन्तु स्थूलिभद्रजी ने चमत्कार बताया उससे पूर्वधारों के काल तक मात्रा आध्यात्मिक साधना धारा चली। आगमों में मुनि को तंत्र-मंत्र-औषधि-ज्योतिष वि. का निषेध है। परन्तु अन्धर्मीयों द्वारा हमारे संघ पर आक्रमण शुरु होने के पश्चात अपवाद मार्ग के रुप में संघ रक्षा एवं शासन प्रभावना के लिये पूर्वग्रत श्रुत में से उधृत मंत्रों का उपयोग प्रारंभ हुआ। पूर्व महार्षियों ने दो अद्भूत मंत्रों को प्रगट किया। वर्धमान विद्या प्रभु महावीरदेव की परम ऊर्जा को धारण करता है तथा सूरिमंत्र गौतमस्वामी की ऊर्जा को धारण करता है। सूरी मंत्र के अधिकारी मात्रा आचार्य भगवंत है तथा वर्धमान विद्या के अधिकारी श्रमण, गणधर, पंन्यास एवं पाठक है।

वर्धमान विद्या का मूल श्री महानिशिथ सूत्र नाम के छेदसूत्र से मिलता है। इस आगम ग्रन्थ के अध्ययन 1,3,8 द्वि. चूलिका इस तरह तीन स्थानों पर अवर्धमान विद्या प्ररुपित है।

छेदसूत्र में वर्णित वर्धमान विद्या के प्रभाव:-

✻ **सव्वगओ नित्थारपारगो होई**-सर्वज्ञ एवं भव का निस्तार करनेवाला।

✻ **आराहगो भवई-** आराधक बनानेवाला।

✻ **विग्ध विनायगा उवसमंती**-विघ्नों के कारण को शांत करनेवाला।

✻ **अपराजिओ भवई-** अपराजित बनानेवाला।

वर्धमान विद्या को पंचाननी विद्या कहा गया है। पंचाननी का अर्थ है पंचमुखी, जिसके पदों के उत्तरार्ध में ''वीर'' शब्द पांच बार आता है। ''वीर'' शब्द को मुख माना हुआ होगा एवं पंचननी का अर्थ सिंह के जैसे अडग-कभी पीछे नहीं हटनेवाला- इस तरह इसका अर्थ करना चाहिए।

एषा पंचाननी विद्या सूरिविद्या समा मता- (श्लोक,10) पू.आ. श्रीमद् सिंहतिलकसूरीश्वरजी म. ने षट्कोण तक श्री वर्धमान विद्या को सूरिमंत्र के तुल्य गिनाया है। अपेक्षा से सूरिमंत्र से भी वर्धमान विद्या अधिक महत्वपूर्ण है।

सूरिमंत्र प्रभावकता एवं शासन प्रभावना के लिए महत्वपूर्ण है। जिनशासन के मूलभूत अंग स्वरुप दीक्षा, बड़ी दीक्षा, प्रतिष्ठा, तप वहन, उपधान, तीर्थमाला तथा मरणसमाधि जैसे कार्यों में वर्धमान विद्या से वासचूर्ण को अभिमांत्रित कर उसका उपयोग किया जाता है।

मंगलवाहिणी, खेमवाहिणी- मंगल एवं क्षेम को वहां करने वाली अत्यंत महत्वपूर्ण यह विद्याए है।

श्री सूरिमंत्र एवं श्री वर्धमान विद्या मंत्र स्वयं परम शक्ति पूंज है।

श्री वर्धमान विद्या में जो मंत्र पदों का प्रयोग किया गया है वो आज्ञाचक्र एवं सहस्रारचक्र की शक्ति को प्रगट करने के संकेत रुप है।

गुरुप्रदत्त विशिष्ट मंत्र पद शिष्य के शरीर में रही हुई भिन्न-भिन्न शक्ति केन्द्रों को उजागर करती है व साधक को परम समर्थ बनाती है।

वर्धमान विद्या के साधक चारित्र संपन्न मुनि, पदस्थ इसकी आराधना के प्रभाव से असाधारण कार्य कर सकते है। आज के काल में भी इसके अनुभव एवं चमत्कार देखे जा चुके हैं।

सिद्ध गिरिराज पर छः गाउ की यात्रा में आनेवाली चन्दन तलावड़ी भी इस विद्या के प्रभाव का प्रतीक है।

- (वर्धमान विद्या कल्प) ग्रन्थ में से उधृत

✻ किसी के भी दोष न देख। जो कुछ होता है, तेरे अपने दोष से होता है, ऐसा मान।

अपने माता-पिता का सम्मान करने के 35 तरीके

1- उनकी उपस्थिति में अपने फोन को दूर रखो।
2- वे क्या कह रहे हैं इस पर ध्यान दो।
3- उनकी राय स्वीकारें।
4- उनकी बातचीत में सम्मिलित हों।
5- उन्हें सम्मान के साथ देखें।
6- हमेशा उनकी प्रशंसा करें।
7- उनको अच्छा समाचार जरुर बताएं।
8- उनके साथ बुरा समाचार साझा करने से बचें।
9- उनके दोस्तों और प्रियजनों से अच्छी तरह से बोलें।
10-उनके द्वारा किये गये अच्छे काम सदैव याद रखें।

लक्ष्य की स्थिरता- मनुष्य! कुछ करने से पहले अपना लक्ष्य स्थिर कर ले। तुझे कहां जाना है- कहां नहीं जाना है, क्या करना है- क्या नहीं करना है, क्या बनना है, क्या नहीं बनना है, जब तक तू इस प्रश्न का निर्णयात्मक उत्तर न दे सकेगा, तब तक तू कुछ भी नहीं कर सकेगा, कुछ भी न बन सकेगा! एक चित्रकार, जब अपनी तूलिका को हाथ में लेकर कोई सुन्दर चित्र अंकित करना चाहता है, तो वह पहले से ही अपने मन में कल्पना कर लेता है कि मुझे अमुक आकार को इस-इस प्रकार मूर्त रुप देना है ! कोई भी मूर्तिकार हथौड़ी और छैनी उठाकर ज्यों ही पत्थर के टुकड़ेको हाथ में लेता है, त्यों ही वह पहले से की गई कल्पना की भाव-भंगिमा उसमें देखने लगता है। गांव का अनपढ़ कुम्हार भी पात्र बनाने के पूर्व मन में यह धारणा स्थिर कर लेता है कि इस मिट्टी के गोल-मटोल पिंड को अमुक पात्र-विशेष के आकार में ढालना है ! जीवन भी एक कला है। अत: वह भी अपेक्षा करता है कि आप उसे क्या रुप देना चाहते है ? लक्ष्य बांधकर ही तीर फेंकिए। बिना लक्ष्य के यों ही शून्य-चित्त से तीर फेंकते जाइए, लक्ष्य-वेद नहीं हो सकेगा, धनुर्विद्या का पण्डित नहीं बना जा सकेगा।

11-वे यदि एक ही कहानी दोहरायें तो भी ऐसे सुने जैसे पहली बार सुन रहे हो।
12-अतीत की दर्दनाक यादों को मत दोहरायें।
13-उनकी उपस्थिति में कानाफूसी न करें।
14-उनके साथ तमीज से बैठे।
15-उनके विचारों को न तो घटिया बताये न ही उनकी आलोचना करें।
16-उनकी बात काटने से बचे।
17-उनकी उम्र का सम्मान करें।
18-उनके आसपास उनके पोते/पोतियों को अनुशासित करने अथवा मारने से बचें।
19-उनकी सलाह और निर्देश स्वीकारें।
20-उनका नेतृत्व स्वीकार करें।
21-उनके साथ ऊंची आवाज में बात न करें।
22-उनके आगे अथवा सामने से न चलें।
23-उनसे पहले खाने से बचे।
24-उन्हें घूरें नहीं।
25-उन्हें तब भी गौरवान्वित प्रतीत करायें जब कि वे अपने को इसके लायक न समझें।
26-उनके सामने अपने पैर करके या उनकी ओर अपनी पीठ कर के बैठने से बचें।
27-न तो उनकी बुराई करें और न ही किसी अन्य द्वारा की गई उनकी बुराई का वर्णन करें।
28-उन्हें अपनी प्रार्थनाओं में शामिल करें।
29-उनकी उपस्थिति में ऊबने या अपनी थकान का प्रदर्शन न करें
30-उनकी गलतियों अथवा अनभिज्ञता पर हंसने से बचें।
31-कहने से पहले उनके काम करें।
32-नियमित रुप से उनके पास जायें।
33-उनके साथ वार्तालाप में अपने शब्दों को ध्यान से चुनें।
34-उन्हें उसी संबोधन से सम्मानित करें जो वे पसन्द करते हैं।
35-अपने किसी भी विषय की अपेक्षा उन्हें प्राथमिकता दें...!!

ताश के पत्तों का गणित...!

हम खेलते है, अपना मनोरंजन करते हैं। पर शायद कुछ ही लोग जानते होंगे कि ताश का आधार वैज्ञानिक है व साथ साथ प्राकृति से भी जुड़ा हुआ है:-

आयाताकार मोटे कागज से बने पत्ते चार प्रकार के.... ईंट, पान, चिड़ी और हुक्म, प्रत्येक 13 पत्तों को मिलाकर कुल 52 पत्ते होते हैं। पत्ते.... एक्का से दस्सा, गुलाम, रानी एवं राजा।

1- 52 पत्ते.... 52 सप्ताह।

2- 4 प्रकार के पत्ते.... 4 ऋतु।

3- प्रत्येक रंग के 13 पत्ते.... प्रत्येक ऋतु में 13 सप्ताह।

4- सभी पत्तों का जोड़....1 से 13=91द4=364।

5- एक जोकर.... 364+1=365 दिन...1 वर्ष।

6- दूसरा जोकर गिने....365+1=366 दिन.... लीप वर्ष।

7- 52 पत्तों में 12 चित्र वाले पत्ते- 12 महिने।

8- लाल और काला रंग.... दिन और रात।

पत्तों का अर्थ:-

1- **दुक्की-** पृथ्वी और आकाश।

2- **तिक्की-** दर्शन+ज्ञान+चारित्र।

3- **चौकी-** चार दिशा।

4- **पंजी-** पंच प्राण (प्राण, अपान, व्यान, उदान, समान)।

5- **छक्की-** षड रिपू (काम, क्रोध, मद, मोह, मत्सर, लोभ)।

6- **सत्ती-** सात सागर।

7- **अट्ठी-** आठ सिद्धी।

8- **नव्वा-** नौ ग्रह

9- **दस्सी-** दस इंद्रियां

10-**गुलाम-** मन की वासना।

11-**रानी-** माया।

12-**राजा-** सबका शासक।

13- **एक्का-** मनुष्य का विवेक।

सिद्धशिला के स्वामी सिद्ध भगवान.... अजर अमर निरंजन निराकार....

✻ ''श्री आर्यरत्न''

संसार से संतप्त आत्मा को सच्ची शांति देनेवाले नवपद भगवान की भव्यतम साधना सत्र के दूसरे दिन निरंजन-निराकार जैसे सिद्ध भगवंतों की उपासना होती है। चौदह राजलोक के अग्रभाग पर 45 लाख योजन की विराट् चंद्राकार सिद्धशिला है। जहां अनेक सिद्ध भगवान विराजित हैं। सिद्धात्मा की अभी नजर-कृपा वर्षा से समूचा संसार यथोचित सुखोपभोग पा रहा है। आठ गुणों से युक्त सिद्ध भगवान की आराधना करनी चाहिये। भारत वर्ष में ''नवपदाराधना'' सत्र भव्य रुप से मनाया जाता है। आराधना के लिये विराजित जगत्वंदनीय पूजनीय आचार्य देवादि साधुवृंद रोचक प्रवचनों के माध्यम से नवपद महिमा बताते है उपासना साधना में सभी श्रद्धालु तन्मय बना जाते है। संसार में मानव जन्म प्राप्त कर श्रद्धालु आत्मा विविध धर्म किया, तप-जप भाव से करता है। सच्ची साधना संयम (चारित्र) की करते क्रमशः अनुपम केवलज्ञान को पाकर आयुष्य क्षय होने से सिद्धात्मा बनता है। अनंतकाल तक सिद्धपद में रहते वो पुण्यात्मा धन्यातिधन्य बन जाता है। भूतकाल में ऐसे असंख्य आत्मा हुए जिन्होंने साधक-अवस्था में कई मरणांत कष्ट-उपसर्ग आये उनको समभाव के साथ सहन किया तो सर्वज्ञ बन गये। जैन इतिहास के सुवर्ण पृष्ठों पर एक से एक बढ़कर प्रसंग है जो हम कुछ अलौकिक संदेश देते महान बनने की प्रेरणा के स्रोत बने हैं। गजसुकुमाल मुनिवर, खंदकसूरि, ढंढणमुनि, मेतारज मुनिवर, खंधक मुनिवर, अर्णिकापुत्र आचार्य, प्रसन्नचंद्र राजर्षि, इलायचि मुनिवर, चिलातीपुत्र मुनिवर एवं अनेक आचार्य देवादि साधु-साध्वीवृंद को याद करते है तो अनुभव होगा कि वो कैसा समय होगा। जब आत्मा ''कुम्मेशुरा-सो धम्मेशुरा'' वाक्य के अनुसार प्राणांत परिषह को सहर्ष स्वीकार करते अंतकृत केवली बन मोक्ष में पधारे। अति झड़प से चली जाति ट्रेन को लाल सिग्नल दिखाते ही रोकना पड़ता है। गार्ड जानता है कि आगे जाने में खतरा है वैसे ही संसार में हमारे जीवन की गाड़ी भी ''नॉन स्टॉप'' दौड़ी-दौड़ी न करने जैसे कार्य करते दुर्गति की ओर जा रही है। सिद्ध भगवान का लाल वर्ण हमें दुर्गतिमां जाने से रोकने के लिये ''सिग्नल'' का काम करता है। सावधान होकर स्थिरमन से तारक श्री सिद्धपद की आयंबिल तपादि से आराधना करना चाहिये.... **''ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं''**इस मंत्र का दिन में बीस नवकारवाली का विधिपूर्वक शुद्ध वस्त्र परिधान के साथ करना चाहिये। भूत-भविष्य वर्तमान के असंख्याता सिद्ध भगवंतों को हमारा भाव से नमन-स्मरण हो....

जीवन की कुछ सच्चाईयां

''बरसात'' गिरी
और ''कानों'' में इतना कह गई कि...!
''गर्मी'' हमेशा किसी की भी नहीं रहती

रिश्तों को निभाने के लिये,
कभी ''अंधा'',
कभी ''गूंगा''
और कभी ''बहरा''
होना ही पड़ता है॥

✻ व्यावहारिक प्रसंगों की नित्य चित्र-विचित्रता है। केवल कल्पना से उनमें सुख और कल्पना से दुःख ऐसी उनकी स्थिति है। अनुकूल कल्पना से वे अनुकूल लगते है और प्रतिकूल कल्पना से वे प्रतिकूल लगते है; और ज्ञानी पुरुषों ने उन दोनों कल्पना करने का निषेध किया है। विचारवान को शोक करना ठीक नहीं, ऐसा श्री तीर्थकर कहते थे।

✻ मुमुक्षु जीव को इस काल में संसार की प्रतिकूल दशाएं प्राप्त होना यह उसके लिए संसार से पार होने के बराबर है। अनंतकाल से जिस संसार का अभ्यास हुआ है उसे स्पष्ट रुप से सोचने का प्रसंग प्रतिकूल संजोगों में विशेष होता है; यह बात निश्चित रुप से मानने योग्य

✻ संसार का स्वरुप कारागृह जैसा है- आत्मा को ऐसा बार-बार और प्रतिक्षण लगा करें, यह मुमुक्षुता का मुख्य लक्षण है।

बात पर गौर करना....
''पत्तों'' सी होती है
कई रिश्तों की उम्र,
आज हरे...!
कल सूखे...!
क्यों न हम,
जड़ों से;
रिश्ते निभाना सीखें॥

जो कह दिया वह ''शब्द'' थे;
जो नहीं कह सके
वो ''अनुभूति'' थी।
और,
जो कहना है मगर;
कह नहीं सकते,
वो ''मर्यादा'' है॥

✻ जो धर्म संसार को परिक्षीण कराने में सबसे उत्तम हो, और निज स्वभाव में स्थिति कराने में बलवान हो, वही धर्म उत्तम और वही बलवान है।

✻ जिंदगी को समझना बेहद मुश्किल हैं....
यहां कभी सपनों के लिए अपनों को छोड़ना पड़ता है
और कभी अपनों के खातिर सपनों को छोड़ना पड़ता है।

तीर्थों की तारणहारता बनाये रखें....

* नैनमल सुराणा

जैन धर्म को हानि पहुंचाने वालों में अजैनों की अपेक्षा जैन ही अधिक है। इस प्रकार की आलोचना के कटू वाक्यों में कई बार सत्यता की झंकार सुनाई देती है, गत जून 95 में आबू, देलवाड़, कुंभारियाजी आदि स्थानों पर यात्रार्थ जाने का अवसर मिला था।

देलवाड़ के जिन-प्रसाद, कला-स्थापत्य एवं कोतरनी की दृष्टिसे भी अवर्णनीय है, अनन्य हैं। गगनचुम्बी शिखरों, पवित्रतम वातावरण, अद्भूत निर्माण-कार्य एवं विशेषतः प्रशान्त मुद्रा युक्त भक्तजनों के हृदयों को उद्वेलित करनेवाले भव्यतम जिन-बिम्बों आदि का शब्दों में कदापि वर्णन नहीं किया जा सकता। परमात्मा के साथ वार्तालाप करने की अभिलाषा हो जाये, हर्षातिरेक का अनुभव ही जीवन की श्रेष्ठ धन्यता के क्षणों की अनुभूति हो, ऐसे परम पावन वातावरण को अब पर्यटकों के दल के दल कुलषित कर रहे हैं। तीर्थ यात्रियों की अपेक्षा पर्यटक अधिक दृष्टिगोचर होते हैं। विवेक रहित वस्त्र पहने, झूठे मुंह से, ऋतुधर्म वाली अजैन स्त्रियों को भगवान में कोई रुचि नहीं है, वे तो कला-कारीगरी की ही प्रशंसा करती है। इससे ही वे आश्चर्य चकित होती हैं, दो-चार चक्कर लगाती हैं। अनेक बार कुछ व्यक्तियों को ज्ञात नहीं हो तो वे गंभारे में भी प्रविष्टहो जाते हैं। पवित्र जिनालयों के बाहर बढ़िया सुन्दर वस्तुओं, मौज-शौक की वस्तुओं तथा अभक्ष्य खानपान की ढेर सारी दुकानें प्रारम्भ हो गई हैं। पर्यटकों के चले जाने के पश्चात जिनालय पूर्णतः सूने-सूने प्रतीत होते हैं। पूजा करने वाले तो उंगलियों पर गिने जा सकें उतने होते हैं। अचलगढ़ पर तो अकेले-दुकेले जाने वालों को विचार करना पड़ता है। कुंभारियाजी के भव्य जिनालयों में मूलनायक भगवान के अतिरिक्त सब खाली पड़ेहैं। जैन संघ की बसों में अथवा वाहनों में आते हैं, दर्शन करते हैं और लौट जाते हैं।

पालीताना, शंखेश्वरजी जैसे कुछ तीर्थो में यात्रियों का आवागमन निरन्तर होता रहता है, परन्तु जिन तीर्थो में यात्रियों का आवागमन दिन-प्रतिदिन निरन्तर घट रहा है, उस संबंध में क्या चिन्ता करने की बात नहीं है ? किसी भी तीर्थ का महत्व कम नहीं है। तीर्थो में जो कर्मक्षय हो सकते है, मन की परिणति ऊर्ध्वगामी हो सकती है, परमात्मा के साथ जिस प्रकार एक रुप बना जा सकता है, ऐसा अन्यत्र कहां होगा ? कतिपय तीर्थो में अनेक लघु प्रतिमाजी खण्डित हैं, कई स्थानों पर प्रतिमाजी के चक्षु निकल चुके हैं, विलेपन उखड़ गया है, चक्षुओं को लगाने की परवाह नहीं की गई, स्वच्छता नहीं रखी जाती और अगणित प्रतिमाओं के लिए एक ही पुजारी होने के कारण आशातना-विराधना आदि होती है। क्या इस सब के निवारणार्थ कुछ नहीं हो सकता ? जिन मनुष्यों को कुछ करना नहीं है, वे पेढ़ियों, कार्यकर्त्ताओं एवं पुजारियों का दोष निकालते है। सत्य बात तो यह है कि तीर्थो में जैनों के प्रवाह में वृद्धि होनी चाहिये। हवा खाने के और मौज-शौक के स्थानों पर अड्डे जमाने की अपेक्षा प्राचीन, भव्य जैन संघ की अमूल्य धरोहर तुल्य तीर्थो में सपरिवार, मित्र-मण्डली सहित, संघ के रुप में भक्ति करने के उद्देश्य से ही जानेवालों का तांता लगना चाहिये। अधिकाधिक संख्या में मनुष्य इन पावन तीर्थो की स्पर्शना करेंगे, भक्ति के लिये वहां रुकेंगे, आराधना करेंगे, उतना उत्साह उन तीर्थों के कार्यकर्त्ताओं का बढ़ेगा। युवकों एवं छोटे बालकों का इन अद्भूत तीर्थस्थानों के प्रति आकर्षण बढ़ेगा। यदि प्राचीन तीर्थो की अस्मिता बनाये रखनी हो, यदि धर्म के प्रति आपके मन में खुमारी हो, यदि पूर्वजों द्वारा विश्वास से हमें सौंपी हुई धरोहर की प्रामाणिकता बनाये रखनी हो, तो भारत वर्ष के प्राचीन तीर्थोमें जैनों को जाने में वृद्धि करनी ही पड़ेगी। केवल मुलाकात लेने की अपेक्षा वहां ठहर कर विविध आराधनाएं सम्पन्न करनी होंगी। यदि पूज्य गुरु भगवंत भी इस संबंध में अधिक प्रमाण में प्रेरणा करें तो मनचाहा परिणाम आ सकता है।

जमानावाद, भौतिकवाद, नास्तिकता एवं भ्रष्ट तर्क-शक्ति ने आज आत्मा को परमात्मा के साथ-साथ जोड़ने के अभिलाषी विशुद्ध लघु कर्मी आत्माओं के लिये अनेक विघ्न उत्पन्न किये हैं। शहरी जीवन एवं नैतिक मूल्यों को अर्थहीन सिद्ध करनेवाली शिक्षा-प्रणाली ने आज धर्म एवं धर्म-क्रियाओं को वर्तमान जीवन पद्धति के साथ असंगत ठहराने के प्रयत्न प्रारम्भ कर दिये हैं। निरन्तर बढ़ते हुए अभक्ष्य-आहार के प्रचार, चल-चित्रों, टीवी, अश्लील साहित्य, विचार विकृतियों आदि से हमें बचना होगा तो प्राचीन पावन तीर्थो की निरन्तर स्पर्शना करनी ही होगी। सैकड़ों वर्षो पूर्व हमारे लिए उस समय व्यय किये गये करोड़ों रुपयों, अत्यन्त भव्य जिनालयों के निर्माण, भवोदधितारक, करुणासिन्धु जिन प्रतिमाओं की स्थापना आदि की हम अपनी स्वयं की ही आध्यात्मिक उन्नति के लिए उपयोगिता यदि नहीं समझें तो हमारा भविष्य तो अन्धकारमय ही होगा, परन्तु भावी पीढ़ी के लिए हम अपराधी सिद्ध होंगे।

ताड़ पत्र पर जैन ग्रंथों को हजार वर्ष तक सहेजने का काम चल रहा है, जैन भंडार नासिक में

✻ शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर

अल्पाक्षरमसंदिग्धं, सारस्नत् विश्वतो मुखं।
अस्तोभमनवधं च, सूत्रं सूत्रविदो विदुः॥

जिसमें बहुत कम अक्षरों में विराट अर्थ छिपा हो, जो संदेह रहित होकर सारभूतल का तो प्रतिपादक हो किन्तु विश्वतोमुख व्यापक अर्थ गाम्भीर्य से युक्त हो, जो सभी प्रकार के दोष से मुक्त हो उसे ''सूत्र'' कहते हैं। जैनागमों की शैली ऐसी ही सूत्रात्मक है। जैनागमों का अपर नाम आगम सूत्र या आगम शास्त्र अंग सूत्र-उपांग सूत्र से विख्यात है।

जैन आगम ज्ञान का अर्थात् महासागर इतना विशाल, विस्तृत और सुव्यवस्थित ज्ञान भंडार मौलिक स्वरुप में अन्य किसी धर्म-दर्शन के पास नहीं होना प्रतीत होता है। इस पूरे चौदह पूर्वो के ज्ञान को यदि लिपिबद्ध किया जाये तो 16383 विशाल हाथियों के डूब जाने से जितनी सूखी स्याही को गीला करके उस पूरी स्याही से जितने ग्रंथ लिखे जाते है उतने विशाल ज्ञान भण्डार का खजाना भरा है-चौदह पूर्वो के ज्ञान में।

महान तथ्यपूर्ण यह आश्चर्य वाला तथ्य है कि यह संपूर्ण ज्ञान सर्वज्ञ-सर्व दृष्टा तीर्थंकर भगवानों के प्रथम शिल्पों को केवल तीन शब्दों- **''उप्पन्ते इ वा, विगमे इ वा धुवे इ वा''** के उच्चारण मात्र से हो जाता है। इस पूरे ज्ञान का परावर्तन वे लब्धि सम्पन्न महामुनि भगवंत अन्तमुर्हूत अड़तालीस मिनिट के अन्दर कर लेते थे।

लेकिन हमारे दुर्भाग्य से आज पूर्वो का ज्ञान लुप्त हो गया है, तथापि आज भी आगमों और आगमोत्तर साहित्य के रुप में लाखों पृष्ठोंवाले हजारों ग्रंथ का सुविस्तृत ज्ञान भण्डार जर्मनी के एक ग्रंथागारवाले दो आलमारियां ग्रंथों के सूचि पत्रों से भरी पड़ी होने की बात प्रकाश में आई है।

इतिहास साक्षी है कि मुगल आक्रताओं ने अनेक विशाल भण्डारों को आग या पानी की भेंट चढ़ा दिया था। इसके बावजूद भी हजारों हजार दुर्लभ ग्रंथरत्न जो चमत्कारिक जानकारियों से भरे पड़ेहैं, वे हमारे पास उपलब्ध है और उन्हें हजार वर्ष तक सुरक्षित रखाने के ताड़पत्र पर लिखे जा रहे हैं। कागज पर लिखे ग्रंथ 400 वर्ष तक, जबकि ताड़ पत्र पर हजार साल तक सहेज कर सुरक्षित रखने के लिए 2500 वर्ष पुराने जैन ग्रंथों पर मुंबई, सूरत, अहमदाबाद में सन् 1998 से काम चल रहा है।

आने वाली पीढ़ियों के लिये जैन ग्रंथों को सुरक्षा प्रदान करने को उन्हें कंक्रीट से मजबूत और हजार साल से ज्यादा टिक सकेवाला स्ट्रक्चर युक्त देश का पहला जैन ज्ञान भण्डार नाशिक वणी में अंतिम दौर में है। यह कार्य 25 साल पुरानी जैन संस्था सन्मार्ग परिवार के मार्गदर्शन में हो रहा है। यह जानकारी संस्था सदस्य धनेश संघवी ने प्रदान की है।

अच्छा मेहमान- *मेहमान कितने भी शानदार मकान में ठहरें, उनकी उस मकान के प्रति आसक्ति नहीं होगी, क्योंकि वह समझाता है कि मैं यहां कुछ दिनों के लिये ही ठहरने वाला हूं, आगे या पीछे मुझे यह स्थान छोड़ना ही पड़ेगा। ठीक इसी प्रकार हमें भी सोचना चाहिये कि हम इस दुनिया में एक मेहमान की भांति आते हैं और मेहमान की तरह ही इसे छोड़ जानेवाले हैं, जाना न चाहें, तो भी हमें जाना पड़ेगा।*

अच्छा मेहमान कौन है ? वह जो अपने मेजबान को तकलीफ न दें। ठीक यही गुण हमें भी अपने जीवन में उतारना चाहिये। हम भी दुनिया के किसी प्राणी को कोई कष्टन दें और इस तरह दुनिया के एक अच्छे मेहमान बनने की कोशिश करें।

-: सार में सार:-

*असार संसार में क्या सार है? **''जिनशासन''***
*विशाल जिनशासन में सार क्या ? **''सिद्धचक्र''***
*सिद्धचक्र में सार क्या है ? **''नवपद''***
*नवपद में सार क्या है ? **''अरिहंत''***
*अरिहंत में सार क्या है ? **''करुणा''***

वर्ग पहेली क्रमांक-336

म

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

1	2		■	3	4		■	5
■		■	6			■	7	
8		9	■	■	10			
	■		■	11	■	■		■
12	13		■		■	14		15
■		■	16		17		■	
18			■	■	19		20	
21		■	22	23		■		■
	■	24			■	25		

बाएं से दाएं:-

1- प्रथम विश्व धर्म संसद सन 1893 में जैन धर्म का प्रतिनिधित्व करने वाले श्री वी---राघव गांधी (3)
3- रतलाम में श्री ऋषभदेव प्रभु का प्राचीन तीर्थ--- द (3)
6- जहां श्री जिनेश्वर देव की पूजा करते है--- य (3)
7- चौबीस तीर्थंकरों के शासन की सोलह सतियों में से एक---वती (2)
8- महासती चंदना को यह नाम जिसने दिया उस सेठ का नाम था--- ह सेठ (3)
10-आबू रोड़ के निकट वीर प्रभु का प्राचीन तीर्थ --- (4)
12-फालना के निकट पार्श्वप्रभु का तीर्थ--- (3)
14-नमन, नमस्कार का पर्याय--- (3)
16-हिरण लांछन वाले तीर्थंकर प्रभु श्री--- (4)
18-राजा सुदर्शन व रानी महादेवी के तीर्थंकर पुत्र का नाम--- था (3)
19-नागपुर जिले में स्थित एक जैन तीर्थ जहां शांतिनाथ प्रभु की सुनहले वर्ण की 10 फीट ऊंची कायोत्सर्ग प्रतिमाजी है--- (4)
21-हिमाचल की पांच प्रमुख नदियों में से एक---(2)
22-बाइसवें तीर्थंकर के पिता का नाम समुद्र---(3)
24-भगवान अजीतनाथ की माता का नाम---(3)
25-नौ प्रति वासुदेव में से एक--- (3)

वर्ग पहेली क्रमांक-335 का परिणाम

ज	मा	ली	■	जै	स	ल	मे	र
न्म	■	दा	न	■	म	■	घ	■
क	टा	स	■	स	र	ती	■	■
ल्या	■	■	दा	म	■	स	म	ता
ण	■	मं	दा	र	गि	री	■	ल
क	ल्पा	दि	■	वी	र	■	■	ध्व
■	■	र	प	र	■	सु	र	ज
■	जी	■	ला	■	वि	म	■	गि
स	म	व	श	र	■	ति	व	री

ऊपर से नीचे:-

1- भ. महावीर की प्रथम आर्या--- (3)
3- दाम--- निर्धन दुःखी, तृष्णावश धनवान। कहूं न सुख संसार में, सब जग देख्यो जान (2)
4- जैन धर्म के तिरसठ शलाका पुरुषों में शामिल है 24 तीर्थंकर, 12 चक्रवर्ती, नौ वासुदेव, नौ प्रतिवासुदेव तथा नौ---व (3)
5- राजगिर स्थित पांच पहाड़ियों में से एक--- गिरि (3)
7- मंदिर की परिक्रमा करने को--- करना भी कहा जाता है (5)
8- प्रथम तीर्थंकर का प्रथम भव---ठ (3)
9- खेडब्रम्हा के निकट अमीझरा पार्श्वनाथ भगवान का तीर्थ (3)
11-जैनम--- शासनम (3)
13-भगवान महावीर के ससुर का नाम--- र (4)
14-जैन धर्म के--- तीर्थंकर है भ.श्री आदिनाथ (3)
15-खूशबू, सुवास का पर्याय--- (3)
17-श्री सिद्धगिरिराज की यात्रा में करते है पांच चैत्यवंदन, जिसमें तीसरी वंद--- ण पादुका की करते हैं (1,2)
18-माउंट आबू राजस्थान की--- ली पर्वतमाला अंतर्गत आता है (3)
20-नीमच के कुकड़ेश्वर में बिराजे है श्री कुर्कु--- पार्श्वनाथ भगवान (3)
22-इक्कीसवें तीर्थंकर के पिता का नाम है राजा--- य सेन (2)
23-भैसा लांछन वाले तीर्थंकर प्रभु की माता का नाम--- (2)

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-336

*** आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.**
नीचे दिये गये वाक्य किससे संबंध रखते है ?

1- पिताजी के द्वारा लिखे गए ग्रंथ को मैंने पूरा कंठस्थ कर लिया था।
2- मैंने पातरे की नांव बनाकर पानी में तिराया था।
3- सौभाग्य पाने के लिए सब मुझे याद करते है।
4- मैंने सिंह अणगार को बिजोरलाक व्होराया।
5- मैने मुनि वंदना से तीन महान लाभ प्राप्त किये।
6- स्तमंघस्वामी की साक्षात देशना सुननेवाली साध्वी।
7- सम्राट संप्रति के प्रतिबोधक गुरु।
8- अर्णिका पुत्र आचार्य की वैयावृत्य का लाभ मुझे मिला था।
9- मै मरुंगा लेकिन मेरा तिलक अमर रहेगा।
10- नलिनीगुल्य विमान जैसा जिनालय बनवाया।
11- ''याकिनी महत्तरा सुनु'' के उपनाम से प्रसिद्ध हुए आचार्यश्री।
12- सुलसा श्राविका के समकित की परीक्षा लेने वाला तापस।

विज्ञान शक्ति के सामने धर्म शक्ति

यंत्र शक्ति के सामने मंत्रशक्ति !
ऊर्जा शक्ति के सामने योगशक्ति !
अणु शक्ति के सामने आत्म शक्ति !
शस्त्र शक्ति के सामने अहिंसा शक्ति !
परिग्रहशक्ति के सामने परोपकार शक्ति !
राज्य शक्ति के सामने अनेकांत शक्ति !

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-5-2023 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

वर्ग पहेली क्रमांक-335 के परिणाम

विजेताः-

1- श्रीमती सरोज तलेरा, इन्दौर (म.प्र.) -प्रथम
2- स्नेहलता जैन, मन्दसौर (म.प्र.) - द्वितीय
3- श्रीमती प्रभा जैन, देवास (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे-

सुधा लोढ़ा, उज्जैन, भारती जैन, देवास, शशि भाण्डावत शाजापुर।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-335 के परिणाम

विजेताः-

1- ऋषभ जैन, शाजापुर (म.प्र.) -प्रथम
2- शिखा धारीवाल,शुजालपुरसिटी(म.प्र.)- द्वितीय
3- ग्रंथ भाण्डावत, शाजापुर (म.प्र.) - तृतीय

सही उत्तर-

1-कोहिनूर, 2- कश्मीर, 3- नंदीश्वर, 4- कुतुब-मीनार, 5- प्रहर, 6- श्री सम्मेत शिखर, 7- रविन्द्रनाथ टैगोर, 8- जीव विचार, 9- मातर, 10- इच्छकार, 11-वल्लभीपुर।

इनके भी उत्तर सही थे-

भारती जैन, देवास, प्रभा जैन, देवास, स्नेहलता जैन मन्दसौर, सुधा लोढ़ा, उज्जैन।

**** परमार्थ मार्ग का लक्षण यह है कि अपरमार्थ का सेवन करते हुए जीव, सुख में या दुःख में सब प्रकार से कायर हुआ करें। दुःख में कायर होना, कदाचित दूसरे जीवों के भी संभव है, परन्तु संसार-सुख के प्राप्त होने पर भी कायरता, उस सुख में अरुचि और नीरसता परमार्थ मार्गरत पुरुष के ही होते हैं।***

सूचना- अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

।। श्री परमात्माय नमः ।।

शेठ नगीनचंद कपुरचंद झवेरीना प्रयासथी

जीवदया फंड

श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी

सुभाष चौक, गोपीपुरा, सुरत - 1
मो.: 09825414470 / 9820078772
स्थापना वि. सं. 1962
इ.स. 1906 रजि. नं.- 1744
PAN : AAATS8024L

पैसा भेजने का पता :

प्रफुल अमीचंद झवेरी

26, खटाऊवाडी, गोरेगांवकर लेन,
सेन्ट्रल सिनेमानी पाछळ,
मुंबई - 400 004.
ऑफिस फोन : 2387 8476
मोबाईल : 98200 78772

धर्मप्रेमी सद्‌गृहस्थश्री, सादर प्रणाम !

जीवदया फंड संस्था सुरत के दानवीर शेठ श्री नगीनचंद कपुरचंद झवेरी के प्रयासो के द्वारा स्थापित एक रजीस्टर्ड ट्रस्ट है। यह जीवदया फंड संस्था के द्वारा कतल के लीये जानेवाले ओर बीन उपयोगी जीवो को छुडवाकर के सुरत की पांजरापोल में भेजा जाता है। यह कार्य पीछले ११४ सालो से यह संस्था कर रही है। ओर शेठश्री के उत्तम पुण्यबल की वजह से यह कार्य के अंदर लगातार प्रतिवर्ष प्रगति हो रही है। **जैसे की पीछले पांच सालो के दौरान (एप्रील - २०१४ से मार्च - २०१९) १०७९८ जीवो को छुडाया / बचाया गया है।**

हमारे आंगन में आनेवाले बेझुबान जीवो को पांजरापोल के अंदर ट्रस्टीओ के द्वारा नीगरानी करके सोंपा जाता है। ओर पशु के संपूर्ण जीवनकाल तक उनको संभालकर रखा जाता है।

अनंत दया के सागर भगवान श्री महावीर प्रभु के शासन के दो स्तंभ है। अहिंसा ओर जीव के उपर मैत्री। सर्वज्ञश्री के यह संदेश को सार्थक करने के लिये दीनो का भी बहुत बडा महत्व है। जैसे की

आपके परिवार के कोई भी सभ्य का जन्मदिन
पशु परिवार के एक सभ्य को जीवनदान देकर मना सकते है।

आपके परिवार मे आये हुए शुभ लग्नोत्सव के दीन
एक पशु युगल को जीवनदान देकर उनका जीवन उत्सवमय बना सकते है।

कर्मसंयोग के कारन आई हुई बीमारी का दुःख ओर अशाता को टालने के लीये
कोई पशु को अभयदान प्रदान करके महाशाता का सुख प्रदान करे।

अपने स्वजन के मृत्यु के दुःखद समय में एक पशु को
मृत्यु के मुखमें से छुडवाने से आपश्री को सांत्वना भी प्राप्त होती है ओर आपके स्वजन की सदगति प्राप्ती की प्रार्थना भी कर सकते है।

पवित्र पर्व के धर्मोत्सव के समय एक जीवको
जीवनदान देकर पर्व उपासना को दया ओर करुणामय बनाये।

आपश्री हंमेशा के लीये तिथि का भी चयन कर सकते है। यह तिथि के दीन दान में दी गई रकम का जो ब्याज मीलता है उसमें से जीव को छुडवाया जायेगा।

यह संस्था के द्वारा एप्रील २०२० से मार्च २०२१ के एक वर्ष के समय जो की लोकडाउन था, उस समय में कुल २५५३ जीवो को छुडवाया गया है।

आपश्री चेक या ड्राफ्ट जीवदया फंड के नाम का बनाए। रोकड रकम में भी आप योगदान दे सकते है। (आपश्री का अनमोल योगदान सुरत ओर मुंबई में उपर दिये गये पते पर भीजवा सकते है।)

आपश्री आपका योगदान हमारे बेन्क खाते के अंदर भी जमा करवा सकते है। जीसकी जानकारी नीचे दी गई है। हमारी संस्था का 80-G नंबर AAATS 8024 LF 20210 है।

Bank Name	: AXIS BANK LTD.	Bank Name	: BANK OF INDIA
A/c. Name	: JIVDAYA FUND	A/c. Name	: JIVDAYA FUND
IFSC	: UTIB0002274	IFSC	: BKID000001
A/c. No.	: 921010033621820	A/c. No.	: 00120100001219
Branch	: Charni Rd, Mumbai	Branch	: Mumbai Main Branch

जीवदया की शुभ भावना से कीये हुए कार्य से अक्षय सुख ओर मोक्षमार्ग की प्राप्ति होती है ओर नरकगति के कर्म का ओर अनेक भवो के पापो का क्षय भी जीवदया का कार्य करने से होता है। जीवदया का कार्य तीनो लोकमें श्रेष्ठ ओर सर्वोत्तम कार्य है।

लि. ट्रस्टीगण

प्रफुल अमीचंद झवेरी
पुष्पसेनभाई पानाचंद झवेरी
विरेन्द्र नेमचंद झवेरी

जतीनभाई फकीरचंद
शरदभाई गुलाबचंद कांटावाला
उषाकांत साकेरचंद झवेरी

दान अेज सफल जीवन

गुरु कृपा पात्र युवा जैनाचार्यश्री आदि ठाणा का चार्तुमास मुंबई के ठाकुरद्वारा श्री संघ में होगा

109 चंदन पार्श्व पद्मावती महाशक्ति पीठ की अंजन प्रतिष्ठा का महोत्सव युवा जैनाचार्य की निश्रा में हुआ

✻ हाड़ौति क्षेत्र में स्थित लोकप्रिय धर्मानुरागी राजस्थान केबिनेट मिनिस्टर श्री प्रमोद जैन भाया के द्वारा बांरा नगर में निर्मित भव्य जिनालय की प्राण प्रतिष्ठा अंजनशलाका महोत्सव में निश्रा उपस्थिति- दिनांक 25 मई 2023 ।✻ अनेक शासन प्रभावक कार्यो के साथ मई में दीक्षा प्रतिष्ठा के भव्य आयोजन हुवे ✻ अनेक प्रांतों से चार्तुमास की विनंती के बाद निर्णय मुंबई के पक्ष में हुआ । ✻ जून माह के प्रथम सप्ताह में उज्जैन आने की संभावना है । ✻ मुंबई चार्तुमास के बाद दिसंबर में मेरु महोत्सव में पूना पहुंचने की संभावना । ✻ 21 अप्रेल को जोधपुर में प्रथम बार महामांगलिक हुई । ✻ युवा शिष्य मंडली के द्वारा मालवा और अन्य श्रीसंघों में शासन प्रभावना की गई ।

जोधपुर- गुजरात के बाद मालवा में आने के बाद निरंतर मालवा और राजस्थान के श्री संघों में अंजन-शलाका प्रतिष्ठा, गुरु मंदिर प्रतिष्ठा, गुरु गुणानुवाद, संयमी आत्मन् को श्री वीर प्रभु के शासन से जोड़ने के लिये दीक्षा प्रदान और महा मांगलिक के द्वारा तन-मन की शक्ति प्रदान करने वाले श्लोक मंत्रों से धर्मिष्ठों को आत्मीय शांति प्रदान करने स्व पर आत्म कल्याण के मार्ग की ओर ले जाने के शुद्ध मंगलकारी भाव के साथे परमात्मा प्रभुवीर के शासन में चार चांद लगाकर गुरु श्री नवरत्न का नाम जैन जगत में रोशन करने वाले युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. स्वयं और अपने शिष्य परिवार के साथ श्रमण जीवन का जोरदार निर्वाहन कर रहे हैं । गुरु मैया श्री चंदनप्रभा श्रीजी म.सा. के द्वारा प्रस्थापित 109 चंदन पार्श्व पद्मावती तीर्थ महाशक्ति पीठ का अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन 26 अप्रेल से 3 मई तक आयोजित किया गया। प्रतिष्ठाचार्य के रुप में युवा जैनाचार्य श्रीविश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा रही। 15 अप्रेल को आचार्यश्री का प्रवेश जोधपुर में हुआ था, विभिन्न संघों में शासन प्रभावना करते हुए आप पार्श्व पीठ पधारे। यहां 26 अप्रेल को कुंभ स्थापना के साथ महोत्सव आरम्भ हुआ। वेदिका पूजन 28 अप्रेल को हुई । इसके साथ ही विभिन्न आयोजन पूजन महापूजन हुई । माँ श्री पद्मावतीदेवी की प्रतिमा प्रतिष्ठा 3 मई को धूमधाम के साथ सम्पन्न हुई। युवा जैनाचार्यश्री की अपने गुरुकुल के युवा मुनि भगवंत प.पू. मुनि श्रीकीर्तिरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू. मुनि श्रीतीर्थ रत्नसागरजी म. सा. प.पू. मुनि श्रीउदय रत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तमरत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उज्ज्वलरत्न सागर जी म. सा.,प.पू. मुनि श्रीप.पू. मुनि श्रीरम्यरत्नसागरजी म.सा.,प.पू. मुनिश्रीलब्धि रत्नसागरजी म. सा. मुनिश्री शौर्यरत्न सागरजी म.सा. मुनिश्री ऋषभरत्नसागरजी म.सा .मुनिश्रीसिध्दरत्न सागरजी म.सा. आदि ठाणा के द्वारा युवा शिष्य मंडली के द्वारा मालवा और अन्य श्रीसंघों में शासन प्रभावना की गई ।यहां से विहार राजस्थान जोधपुर 108 पार्श्वचंदन

मंदिर का प्रतिष्ठा महोत्सव 3 मई को है। दिनांक 23 मई को बांरा में अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव में निश्रा रहेगी। विहार यात्रा में अनेक श्रीसंघों, नगरों में विविध शासन प्रभावक कार्य भी निरतंर हो रहे है। अनेक श्रीसंधों की विभिन्न प्रांतों से आगामी चार्तुमास की विनंति थी। पर चार्तुमास का निर्णय मुंबई के पक्ष में रहा **श्री ठाकुरद्वारा श्री संध में आगामी चार्तमास होगा ।**युवा जैनाचार्य यहां से विहार कर उज्जैन जून के प्रथम सप्ताह में आने की संभावना है। **उज्जैन से मुंबई के लिये विहार होगा।**

सोलापुर में जिनालय शताब्दि महोत्सव मना

सोलापुर- श्री आदिनाथ जिन मंदिर के शताब्दी महोत्सव के अंतर्गत जिन मंदिर की 101 ध्वजारोहण तथा आयंबिल भवन का उद्घाटन किया गया। दिनांक 23 से 27 अप्रेल तक आयोजित महोत्सव को पावन निश्रा पूज्य आचार्य श्री विजय रविशेखर सूरीजी म.सा. एवं श्री विजय ललित शेखर सूरीजी म.सा. आदि साधु-साध्वीजी की निश्रा में हुआ। श्री ऋषभदेव परमात्मा पर तीन कार्यक्रम होने के साथ विविध पूजन हुई। विशिष्ट अभिषेक एवं आयंबिल भवन का उद्घाटन हुआ। दिनांक 27 अप्रेल को 101 वीं ध्वजारोहण किया गया।

गच्छ गौरव उत्सव मनेगा

अहमदाबाद- गुरु प्रेम के चरणोपासक आचार्य भगवंत पूज्यपाद श्री विजय कुलचंद सूरीश्वरजी (के.सी.) म.सा. के गच्छाधिपति पर अर्पण महोत्सव का आयोजन 23 से 25 मई तक किया जायेगा। महोत्सव की तैयारी चल रही है।

बांरा में श्री जय त्रिभुवन विमल विहार तीर्थधाम का अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव मई में होगा

*** 17 से 28 मई तक महोत्सव प्रतिष्ठा 28 मई को होगी।**

बांरा- राजस्थान के हाडौती क्षेत्र के बांरानगर में प्रकट प्रभावी श्री गुण वर्धन पार्श्वनाथ प्रभु को विराजित करने के लिये नवनिर्मित श्री जय त्रिभुवन विमल विहार धाम का अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव मई की 17 से 28 तारीख तक भव्य रुप से आयोजित होने जा रहा है। प्रतिष्ठा महोत्सव गच्छाधिपति आचार्यदेव श्रीराजशेखार सूरीजी महाराजा, आचार्यदेव श्री वीररत्न विजय सूरीजी, आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नाकर सूरीजी म.सा. आचार्यदेव श्री पद्मभूषण सूरीजी एवं आचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा के साथ विशाल संख्या में साधु-साध्वी की अमृत निश्रा रहेगी। दिनांक 17 मई से आरंभ होनेवाले अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव के अंतर्गत दिनांक 24 मई को परमात्मा के दीक्षा कल्याणक का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित होगा, रात्री में अंजन विधान तथा 25 मई को प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी। दिनांक 26 मई को द्वारोद्घाटन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति होगी। तीर्थ संस्थापक श्री पाराव और कोठारी परिवार है।

मुमुक्षु त्रषभ का संसा रत्याग संयम अंगीकार 7 मई को

बोलिया- पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी म.सा. के गुरु कुल में बोलिया म.प्र. के श्री ऋषभ संघवी भगवती प्रवज्या ग्रहण कर श्री वीर प्रभु के श्रमण बनकर सागर समुदाय का गौरव बढ़ायेंगे। दिनांक 5 से 7 मई तक दीक्षा महोत्सव मनाया जायेगा। प.पू. मुनि श्रीउदय रत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उत्तम रत्नसागरजी म. सा. ,प.पू.मुनि श्री उज्ज्वलरत्न सागर जी म. सा.आदि ठाणा की निश्रा रहेगी दिनांक 6 मई को मुमुक्षु ऋषभ का वर्षीदान वरघोड़ा निकलेगा और 7 मई को प्रातः काल शुभ लग्नांश बेला में आपकी प्रवज्या का शुभारंभ होगा। दीक्षा की तैयारी चल रही है।

खीरियां में जिनालय की 25 वीं वर्षगांठ मनी

खीरियां- खीरियां स्थित श्री चंद्रप्रभु जिनालय की प्रतिष्ठा की 25 वीं वर्षगांठ की रजत जयंती महोत्सव के रुप में दिनांक 9 अप्रेल से 11 अप्रेल 2023 तक अत्यंत हर्ष, उल्लास व धूमधाम के साथ खीरियां में मनाने का सुअवसर खीरियां श्रीसंघ को प्राप्त हुआ है। भव्य महोत्सव में 9 अप्रेल को प्रातः 8.15 बजे पंचकल्याणक पूजा दिनांक 10 अप्रेल को प्रातः 8.15 बजे शक्रस्तव अभिषेक, दोपहर 11.15 बजे अट्ठारह अभिषेक पूजन, सायं 6.15 बजे आरती एवं भक्ति संध्या। दिनांक 11 अप्रेल को प्रातः 8.15 बजे ध्वजा वरघोड़ा, प्रातः 9.15 बजे सत्तर भेदी पूजन, प्रातः 10.15 बजे ध्वजारोहण व धर्मसभा एवं बहुमान तथा प्रातः 11.15 बजे सकल संघ का साधर्मिक वात्सल्य जैसे धार्मिक कार्यक्रमों के साथ सम्पन हुआ।

85 वें संयम वर्ष में 8 हजार 500 आयोजन देशभर के जैन श्री संघ में कर वर्ल्ड रिकार्ड बनेगा संयम मेरु महोत्सव 850 संधो में 85 दिवसीय आयोजन

✲ मेरु महोत्सव का आयोजन 7 से 18 दिसंबर तक होगा। ✲ महोत्सव में दीक्षा, 100 वीं ओली पारणा भी होगा। ✲ पूना में 200 साधु साध्वी भगवंत के साथ भव्य चार्तुमास का आयोजन। ✲ सम्पूर्ण देश से विहार कर साधु-साध्वी पूना पहुंचेंगे। ✲ संघ हितचिंतक जैनाचार्य श्री हर्षसागरसूरीजी के प्रयास की अनुमोदना।

सागर गच्छाधिपतिश्री की अमृत निश्रा में चार्तुमास प्रवेश 25 जून को होगा : बच्चों लिये अठारिया उपधान तथा शिविर लगा

पूना-परम पावन जिनशासन की शान सागर समुदाय के जैन जगत में सर्वोच्च रुप से वरिष्ठतम संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति गीतार्थ मूर्धनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्यपाद श्री दौलत सागरसूरीजी महाराजा के 85 वर्ष संयम जीवन के पूर्ण होने पर एक वर्ष तक संयम मेरु महोत्सव में 8 हजार 500 जिनशासन प्रभावक कार्यो से वर्ल्ड रिकार्ड बनेगा ऐसा युग प्रभावक मेरु महोत्सव मनाने की भव्य तैयारियां चल रही है। आगामी चार्तुमास उपरांत अति भव्य रुप से ऐसा परम शासन प्रभावक पूज्यश्री का 85 वां विराट संयमोत्सव मनाया जायेगा। यह आयोजन आगामी चार्तुमास की पूर्णाहुति के उपरांत 7-18 दिसबंर तक मनाया जायेगा कार्यक्रम को अंतिम स्वरुप दिया जा चुका है इसके पूर्व आपश्री की निश्रा में पूना में सागर समुदाय के लगभग 200 से अधिक गुरु भगवंतों, साधु-साध्वी जी का भव्य चार्तुमास होने के लिये व्यापाक तैयारियां चल रही है। चार्तुमास से जुड़ने के लिए भारत के चारों कोने से साधु-साध्वी भगवंतों 100 से 1000 किलोमीटर का विहार कर पूना पहुंचने के लिये तत्पर बने है। जैनत्व के इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित हो ऐसा ऐतिहासिक और भव्य चार्तुमास के साथ पूज्यपादश्री का 85 वां संयमोत्सव मनाने के भव्य संघ हित चिंतक पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरीजी महाराजा के मन में आया और अब वह क्रियान्वित भी होने जा रहा है। पूना के श्री संघ इस संयमोत्सव के लिये जी-जान से जुड़रहे है और तन-मन-धन से पूर्ण समर्पित जिन शासन संरक्षण हित की भावना से जाग्रत होकर तैयारी में जुड़ गये हैं। मुनिश्री मोक्षरत्नसागरजी एवं मुनिश्री पद्मकीर्तिसागरजी का 100 वीं ओली का पारणा भी मेरु महोत्सव में होगा।

18 दिवसीय उपधान तप

श्री वर्धमान जैन आगम मंदिर में 5 से 25 वर्ष की बालक-बालिकाओं के लिये 18 दिवसीय उपधान तप के आयोजन के द्वारा बच्चों को साधु जीवन परिचय देने के साथ जैन संस्कारों को भी दिया गया। दिनांक 9 से 27 मई तक अढ्ढारिया में बड़ी संख्या में बच्चों के लिये सात दिवसीय आवासीय शिविर का आयोजन भी किया गया। बच्चों के विभिन्न प्रकार के ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों से जोड़ा गया जैनोलॉजी, संस्कार, ध्यान जीवन जीने की कला, जैन इतिहास आदि से अवगत कराया गया।

त्रिदिवसीय आगम वाचना हुई

पूना- गुलटेकड़ी श्री संघ में त्रिदिवसीय आगम वाचना शिविर का दो सत्रों में आयोजन किया गया। सकल संघ हितचिंतक आगमवाचनदाता पूज्यपाद आचार्यश्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. के सुशिष्य मुनिराज श्री हितसागरजी एवं मुनि श्री हीर-सागरजी म.सा. के द्वारा दिनांक 12 से 14 अप्रेल तक आगम वाचना प्रदान की गई। आगम वाचना का आयोजन संघ स्थिवर गच्छाधिपति के संयम जीवन के 85 वें वर्ष की अनुमोदना में किया गया।

मालवा के संतों ने छ:रिपालित संघ की के बाद सूरत में मुमुक्षु मेंहदी चौकसी की भव्य प्रवज्या में निश्रा दी

✻ आगामी चार्तुमास पूना निश्चित हुआ।

सूरत-पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जितरत्नसागर सूरीजी महाराज 266 ओली आराधक श्री आचार्य श्रीचन्द्ररत्नसागरसूरीजी, मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी मुनि श्री चैत्यरत्न सागरजी, मुनि श्री गोयमसागरजी म.सा. आदि ठाणा पालीताना से 13 अप्रेल को विहार कर सूरत पधारे। यहां आपकी निश्रा में मुमुक्षु बहन मेंहदी चौकसी की भगवती प्रवज्या 30 अप्रेल को भव्य रुप से सम्पन्न हुई। भव्य दीक्षा मंडप में शुभ बेला में मेंहदी की दीक्षा क्रिया विधि पूज्यश्री ने सम्पन्न करवाई। उपकरणों की बोली अच्छी रही। यहां से आपश्री आदि ठाणा का विहार पूना की ओर होगा। यहां आप चार्तुमास करेंगे।

बड़ौदा में वर्षीतप पारणा वागड़ भूषण जैनाचार्य श्री मृदुरत्नसागर सूरी जी की निश्रा में

✻ आगामी चार्तुमास कांदिवली मुंबई में होगा।
✻ बड़ोदा से सूरत होते हुए चार्तुमास हेतु मुंबई विहार करेंगे।

बड़ौदा- श्री पाल मयणा सुन्दरी ने जिन परमात्मा के समक्ष नवपद आराधना की थी, ऐसे श्रीकेशरियाजी प्राचीन महातीर्थ में चैत्र मास की शाश्वती नवपद ओली आराधना का आयोजन केशरियाजी तीर्थ मेंसम्पन्न करवाने के बाद पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागरसूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवेश वागड़ नरेश श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म. सा., उपाध्याय प्रवर श्री वैराग्यरत्न सागर जी म.सा. पू. मुनिश्री मोक्षरत्न सागर जी म.सा. पू. मुनिश्री पदमरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा ने वर्षीतप पारणा में निश्रा प्रदान करने के लिये बड़ौदा की ओर विहार किया था, यहां आप अक्षय तृतीया पर विराजित रहेंगे। यहां से आपका विहार सूरत होते हुए **मुंबई की ओर होगा। यहां आपका चार्तुमास कांदिवली ईस्ट में होगा।**

✻ जिस विद्या से उपशम-गुण प्रक्ट नहीं हुआ, विवेक पैदा न हुआ या समाधि न हुई उस विद्या में भले जीव को आग्रह करना ठीक नहीं है।

जैनाचार्यश्री अशोकसागरसूरीजी का 80 वांजन्मदिन जीव दया अनुकंपा दिवस के रुप में मनाया गया

✻ इन्दौर 1-9 मई इन्दौर के श्रीसंघ में शासन प्रभावना करेगें।
✻ उज्जैन 12 - 15 मई के बीच पधारेगें।
✻ पूज्यश्री का आगामी चार्तुमास श्रीनागेश्वर तीर्थ में होगा।

इन्दौर- सिद्धचक्र आराधक समाज मार्गदर्शक पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अशोकसागरसूरीजी महाराजा आदि ठाणा की अमृत निश्रा में चैत्रमास की शाश्वत ओली आराधना का जोरदार आयोजन हुआ। 250 की संख्या में आराधक देश के विभिन्न प्रांतों से आराधना के लिये आये थे। मांडवगढ़ में तीर्थ का जीर्णोद्धार पूज्यश्री की निश्रा में हो रहा है। अप्रेल के अंतिम सप्ताह में परमात्मा सुपार्श्वनाथ प्रभु तथा अन्य जिन प्रतिमा और देवी-देवता की प्रतिमा का उत्थापन आपकी निश्रा में हुआ। इसके बाद आपश्री का विहार इन्दौर की ओर हुआ। 30 अप्रेल से 9 मई तक आपश्री ने इन्दौर के विभिन्न श्रीसंघों में शासन की प्रभावना की। आपश्री आदि ठाणा का उज्जैन आगमन 12-15 मई के मध्य होने जा रहा है।

आगमोद्धारक धानेरा भवन का उद्घाटन

सूरत- वेसू सूरत में नवनिर्मित भव्य आगमोद्धारक धानेरा भवन का उद्घाटन दिनांक 14 मई को होने जा रहा है। वेसु श्वेतांबर मूर्तिपूजक श्री संघ सूरत के द्वारा पूज्य आचार्य भगवंत श्री सागरचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. की प्रेरणा और मार्गदर्शन में इस भव्य आराधना भवन का निर्माण हुआ है।

सूरत वेसु में शिविर

सूरत- आगमोद्धारक धानौरा आराधना भवन में पूज्यपाद आचार्यदेव श्री सागरचंद्रसागर सूरीजी म.सा. की निश्रा में पारिवारिक एवं बाल शिविर का आयोजन किया गया। दिनांक 25 से 30 अप्रेल तक हुए शिविर में इतिहास, योग, चक्रध्यान, वर्तमान समस्याओं प्रश्नोत्तरी आदि हुए। श्रावक-श्राविका दोनों के लिये शिविर हुआ।

मुंबई के नवरोजी लेन घाटकोपर में मुमुक्षु केतन और धर्मेन श्री महावीर पंथगामी श्रमण बनेंगे

✻ दीक्षा वैशाख सुद 11 से 13 दिनांक 1 से 3 मई में सम्पन्न हुई।

मुंबई- नेमरम् दीक्षा महोत्सव के नाम से आयोजित प्रव्रज्या महोत्सव का आयोजन नवरोजी लेन घाटकोपर में होने जा रहा है। वैशाख सुदी- 11 से 13 दिनांक 1 से 3 मई तक आयोजित महोत्सव को पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य देवेश श्री कल्पतरु सूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणी के साथ विशाल संख्या में साधु-साध्वी की अमृत निश्रा रही। चौहान और मघाणी परिवार के श्री केतनकुमार और धर्मेनकुमार के प्रवज्या महोत्सव वैशाख सुद- 11, 1 मई को संयम वस्त्रों को रंगने और महेंदी रस्म हुई। वैशाख सुदी-12 को दोनों मुमुक्षु का भव्य बैठे हुए वर्षीदान का आयोजन किया तथा श्री नेमिनाथ जिन मंदिर में अष्ठोत्तरी महाअभिषेक हुए। वैशाख सुदी-13 दिनांक 3 मई को प्रातःकाल गुरु भगवंतों की अमृत निश्रा में दोनों मुमुक्षु आत्मन् की प्रवज्या का मंगल शुभारंभ शुभ लग्नांश वेला में हुआ।

लुधियाना दोराहा में श्री मणिलक्ष्मीधाम में अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव वल्लभ गच्छाधिपति की निश्रा में होगा

लुधियाना- यहां के समीप दोराहा में त्रिशिखरयुक्त भव्य जिनप्रसाद का निर्माण श्री मणिलक्ष्मीधाम नवनिर्मित तीर्थ में हुआ। यहां परमात्मा विराजमान करने के लिये भव्य अंजन प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन 30 मई से 6 जून के मध्य होने जा रहा है। वल्लभ समुदाय के गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय नित्यानंद सूरीजी म.सा. आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी की निश्रा में यह महोत्सव होगा। परमात्मा के पंच कल्याणक 1 जून से भव्य मंचीय प्रस्तुति के साथ होंगे। दिनांक 4 जून को परमात्मा का भव्य दीक्षा कल्याणक की रथयात्रा आयोजित होने के साथ रात्री में अंजन विधान होगा। दिनांक 5 जून को शुभ वेला में पावनकारी प्रतिष्ठा सम्पन्न होगी। श्री शांतिस्नात्र महापूजन पढ़ाई जायेगी। दिनांक 6 जून को द्वारोद्घाटन के साथ महोत्सव की पूर्णाहुति होगी।

सेमलिया में कन्या शिविर

सेमलिया- श्री शांतिनाथ दादा के प्राचीन तीर्थ से सेमलिया में पूज्य साध्वी वर्या की रत्नसिद्धि और साध्वी श्री रत्न वृद्धि श्रीजी म.सा. की निश्रा में कन्या शिविर का आयोजन होने जा रहा है। शिविर 5 से 9 मई तक होगा जिसमें 20 से 25 वर्ष की बालिकाओं को सम्मिलित किया जायेगा। शिविर की व्यवस्था गिरनार प्रेमी परिवार के द्वारा की जायेगी।

47 वीं ओलीजी पूर्ण हुई

सूरत-आयंबिल आराधक 267 ओली के भीष्म तपस्वी आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्नसागरसूरीजी म.सा. के सुशिष्य मुनिराज श्री चैत्यरत्नसागरजी म.सा. को 47 वीं वर्धमान तप की ओली विगत दिनों पूर्ण हुई। आगमोद्धारक परिवार की ओर से खूब-खूब अनु-मोदना।

प्रवर्तक पद प्रदान किया

मुंबई-श्री नाकोड़धाम महातीर्थ में पूज्यपाद राष्ट्रसंत श्री चन्द्राननसागर सूरीजी म.सा. के सुशिष्य मुनिप्रवर श्री हरीशचंद्रसागरजी म.सा. को प्रवर्तक पद पर आरुढ़ किया गया। दिनांक 7 से 9 अप्रेल तक हुए आयोजन के अंतर्गत श्री पार्श्व पंच कल्याणक पूजन, श्री गौतमलब्धि महापूजन का आयोजन हुआ। दिनांक 9 अप्रेल को प्रवर्तक पद प्रदान किया गया। इस अवसर पर साध्वीवर्या श्री चारुताश्रीजी के द्वितीय एवं साध्वीवर्या श्री अशीला श्रीजी के 5 वें वर्षी तपाराधना की भी भव्य अनुमोदना हुई।

मुंबई भायकला में वर्षीतप पारणा

मुंबई-सेठ मोतीशा जैन मंदिर भायकला में वर्षीतप पारणा निमित्त त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया। पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री पूर्णचंदसूरीजी म.सा. की निश्रा में दिनांक 21 से 23 अप्रेल तक आयोजित तप पारणा महोत्सव में तपोवंदनावली, पूज्य कलापूर्ण सूरीजी महाराजा के जन्म दिन एवं शताब्दि वर्ष के आरंभ पर गुणानुवाद सभा, अंत अक्षय तृतीया 23 अप्रेल को 23 तपस्वी और 3 साध्वी भगवंतों का वर्षीतप पारणा सम्पन्न हुआ।

श्री नागेश्वर में पारिवारिक शिविर लगेगा

नागेश्वर- पूज्य आचार्यश्री कुल बोधि सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में पारिवारिक शिविर का त्रि दिवसीय आयोजन दिनांक 12 से 14 मई तक किया गया। शिविर का आयोजन सम्बोधि परिवार मुंबई के द्वारा किया जा रहा है।

चार्तुमास.... चार्तुमास....

✻ श्रीमद् विजय पूर्णचंद्र सूरीश्वर जी महाराज, प.पू.पंन्यास श्री पूर्णरक्षित विजयजी म.सा. आदि श्रमण-श्रमणी भगवंतों का चार्तुमास प्रवेश संवत् 2079 अषाढ़ सुद-3 दिनांक 21-6-2023, बुधवार को चार्तुमास शुभ स्थल आदिश्वर जैन देरासर जैन श्वे. मू.पू. तपागच्छ संघ 263 मंडपेश्वर रोड़, बोरीवली-वेस्ट मुंबई-400092 (महा.) में होगा।

✻ साध्वीजी श्री प्रीतिदर्शना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश बड़नगर जिला उज्जैन (म.प्र.) में होगा।

✻ साध्वीजी श्री डॉ. अमृतरसा श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश खाचरौद जिला उज्जैन (म.प्र.) में होगा।

✻ साध्वीजी श्री विद्ववतगुणा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास प्रवेश थराद (गुज.) में होगा।

✻ साध्वीजी श्री विज्ञानलता श्रीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश इन्दौर (म.प्र.) में होगा।

✻ प.पू. मुनिराज श्री वीररत्न विजयजी, श्रीसंयमरत्नविजयजी, श्रीभवनरत्न विजयजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश राणापुर में होगा।

✻ प.पू. साध्वीजी श्री प्रिय दर्शना श्रीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश मंडाल (राज.) में होगा।

✻ प.पू.साध्वीजी श्री अचिल-द्रष्टा श्रीजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश भायंदर में होगा।

✻ मुनिराज श्री सिद्धरत्न विजय जी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश नेल्लोर (आं.प्र.) में होगा।

✻ मुनिराज वैभवरत्न विजयजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश चैन्नई (तमिलनाडु) में होगा।

✻ गच्छाधिपतिश्री का चार्तुमास प्रवेश नेनावा जिला बनासकांठा (गुज.) में होगा।

✻ पूज्य सम्राट राष्ट्रसंत श्रीमद् विजय जयंतसेन सूरिश्वरजी महाराजा के पट्टधर वर्तमान गच्छाधिपति श्रीमद् विजय नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का 2023 चार्तुमास प्रवेश नेनावा नगर जिला बनासकांठा (गुज.) में होगा। 6 अप्रेल गुरुवार पेपराल तीर्थ (गुज.) में घोषणा की गई। ज्ञात रहे पूर्व में पुण्य सम्राटश्री के तीन अधिमास वाले चार्तुमास नेनावा नगर में हुए।

खतरगच्छ चार्तुमास....

✻ प.पू. उपाध्याय प्रवर अध्यात्म योगी श्री महेन्द्रसागरजी म.सा. प.पू. उपाध्याय प्रवर युवामनीषी श्री मनीष सागरजी म.सा.आदि ठाणा का चार्तुमास -विचक्षण जैन विद्यापीठ, रायपुर (छ.ग.) में होगा।

✻ प.पू. उपाध्याय प्रवर युवामनीषी श्री मनीषसागरजी म.सा. के शिष्य रत्न प.पू.श्री विवेकसागरजी म. सा. आदि ठाणा-3 का चार्तुमास नागपुर (महा.) में होगा।

✻ प.पू. उपाध्याय प्रवर युवा मनीषी श्री मनीषसागरजी म.सा. के शिष्यरत्न प.पू.श्री ऋषभसागरजी म.सा. आदि ठाणा-2 का चार्तुमास दल्ली-राजहरा (छत्तीसगढ़) में होगा।

✻ प.पू.उपाध्याय प्रवर युवा मनीषी श्री मनीषसागरजी म.सा. के शिष्यरत्न प.पू. श्री विशुद्धसागरजी म. सा. आदि ठाणा-3 का चार्तुमास गांधीधाम (गुज.) में होगा।

बेटमा में चार्तुमास

उज्जैन- चैत्रा नवपद ओली आराधना के समय बेटमा श्री संघ का आगमन उज्जैन हुआ था। श्री संघ ने सागर समुदायवर्तीय साध्वी श्री स्वर्ण-ज्योति श्रीजी म.सा.आदि ठाणा के बेटमा चार्तुमास की जोरदार विनंती की। पूज्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा., श्री अक्षतरत्न सागरजी म. सा.ने सागर संघ गच्छाधिपतिश्री अनुज्ञा के अनुसार बेटमा श्री संघ में साध्वीश्री आदि ठाणा के चार्तुमास की स्वीकृति प्रदान की।

जैनाचार्यश्री का चार्तुमास बैंगलोर में

मुंबई- श्रमणी गणनायक पूज्य आचार्य श्री अभयशेखर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा का आगामी चार्तुमास बैंगलोर के श्री आदिनाथ जैन संघ, चिकपेठ एवं श्री संभवनाथ मंदिर, वी.वी.पुरम् में होगा। 26 मार्च को उक्त घोषणा मुंबई दादर में हुई।

चार्तुमास- पूज्य पंन्यास प्रवर श्री लब्धिवल्लभविजयजी म.सा. का वर्ष 2023 का चार्तुमास ईटला जैन संघ मुंबई में होगा।

बैंगलोर में चार्तुमास

बैंगलोर में पूज्य शंखेश्वर प्रेमी आ. महा सेनसूरीजी ठाणा-4 का वि. सं. 2079 का चार्तुमास विनंति अनेक संघों की, इसमें अक्की पेठ बैंगलोर श्री वासुपूज्य संघ की जय बुलाई गई।

✻ ज्ञानी पुरुष की जो आज्ञा है वह भवभ्रमण के मार्ग में आड़े प्रतिबंध समान है।

सागर समुदाय के भावी आचार्यश्री का चार्तुमास आदिश्वर सोसायटी पूना में होगा

संघ स्थिवरश्री 14 दिसंबर को को आचार्य पद कात्रज में प्रदान करेगें

पूना-अलकापुरी श्री आदिनाथ जैन सोसायटी जैन श्री संघ की विनंती परपरम पावन जिन शासन की शान सागर समुदाय के जैन जगत में सर्वोच्च रुप से वरिष्ठतम संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति गीतार्थ मूर्घनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्यपाद श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा पूज्य नंदिवर्धनसागर सूरीश्वर जी म.सा. सकल हित चिंतक पू. आ.श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा के शुभ सानिध्य शत्रुंजय सेवक क्रांतिकारी पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विराग सागरजी म.सा. एवं मुनि श्री विरलसागर जी म.सा. आदि ठाणा-2 तथा साध्वीवर्या श्री सिद्धिपूर्णा श्रीजी आदि ठाणा के चार्तुमास की जय बोलाई गई। आपश्री जून माह में मुंबई से पूना पधारेंगे। इसके साथ ही पूज्य पंन्यासजी को दिनांक 14 दिसंबर 2023 मगसर सूद-2 के दिन कात्राज में ही 36 गुण भण्डारी आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया जायेगा। पूज्यश्री के भक्तों ने तैयारी आरंभ कर दी है। पूज्य पंन्यासश्रीजी आचार्य भगवंत श्री हर्षसागरजी म.सा. के सुशिष्य है।

चार्तुमास....

✻ पूज्य आचार्य श्री राजशेखर सूरीजी म.सा. की आज्ञा से एवं आचार्य श्री रत्नाकरसूरीजी म.सा. की निश्रा में सांचोर में दिनांक 12 फरवरी को पूज्य आचार्य श्री राजरत्न सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास श्री गोठीवाला ओसवाल जैन संघ- पूना में होने की घोषणा की गई है।

श्रीशत्रुंजय महासभा

पूज्य पंन्यास प्रवर की निश्रा में फोर्ट मुंबई के श्री शांतिनाथ जैन संघ में श्री शत्रुंजय महासभा का आयोजन दिनांक 16 अप्रेल को किया गया। आयोजन में आसपास के क्षेत्र के 8-10 श्री संघ के अनेक श्रावक-श्राविका सम्मिलित हुए। पूज्यश्री का प्रभावी प्रवचन हुए।

आचार्यश्री रत्नचंद्र सूरीजी का चार्तुमास नवसारी में

नवसारी- दक्षिण गुजरात की डायमंड नगरी नवसारी नगर की पावन धरा पर श्री महावीर नगर जैन श्री संघ एवं श्री चिंतामणी जैन श्री संघ नवसारी के तत्वावधान में वर्ष 2023 व विक्रम संवत् 2079 का चार्तुमास परम गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री राम सूरीश्वरजी म.सा. (डहेला वाला) के शिष्यरत्न परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रत्नचंद्र सूरीश्वरजी म. सा., परम पूज्य आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय उदयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. आदि विशाल श्रमण-श्रमणीवृंद का होगा।

तीन मासक्षमण का पारणा हुआ

नासिक- तप सम्राट पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री हंसरत्नसूरीजी म.सा. को 97-98-99 वें मासक्षमण का भव्य पारणा 23 अप्रेल को भव्य तपोत्सव के साथ सम्पन्न हुआ।

साध्वीश्री हेमेन्द्रश्रीजी का चार्तुमास जोधपुर में

जोधपुर- सागर समुदाय के वरिष्ठ साध्वी श्री हेमेन्द्रश्रीजी म.सा., साध्वी श्री चारुदर्शना श्रीजी आदि ठाणा का चार्तुमास जोधपुर मुथा के मंदिर में होगा।

पूज्य जैनाचार्य श्री कुलबोधिसूरीजी का चार्तुमास रतलाम में

रतलाम- पूज्य आचार्य भगवंत श्री कुलबोधि सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में यहां 150 के लगभग वर्षीतप आराधकों का वर्षीतप पारणा महोत्सव का आयोजन किया गया। श्रेयांस राजा बन पारणा कराने की बोली के साथ अन्य चढ़ावें भी हुए। तपस्वियों की भव्य शोभायात्रा आयोजित की गई, इसके बाद आपश्री का विहार श्री नागेश्वर तीर्थ में हुआ जहां त्रिदिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में 400 धार्मिष्ठों ने भाग लिया।

चार्तुमास- पूज्य आचार्य श्री रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा. का चार्तुमास प्रवेश आषाढ़ सुदी-10 **दिनांक** 28-6-2023 **को मुनि-सुव्रतस्वामी जैन मंदिर-निगड़ी (पूना) (महा.) में होगा।**

साध्वीश्री सौम्यवंदना श्रीजी का चार्तुमास

उज्जैन- सागर समुदाय की साध्वीवर्या श्री सौम्यवंदना श्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चार्तुमास ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी पर होने की संभावना है। इस संदर्भ में दिनांक 26 जनवरी 2023 को रिंगनोद में होनेवाले दीक्षा महोत्सव में पूज्य ओली आराधक आचार्य श्री चंद्ररत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में घोषणा हुई।

निरव और अंकुर सागर श्रमण समुदाय में सम्मिलित होकर श्री वीरपथगामी बनेंगे

✻ मुंबई में दीक्षा महोत्सव 7 मई को लालबाग में होगा।

मुंबई-परम पावन जिनशासन की शान सागर समुदाय के जैन जगत में सर्वोच्च रुप से वरिष्ठतम संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधिपति गीतार्थ मूर्धनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्यपाद श्री दौलत सागरसूरीजी महाराजा पूज्य नंदिवर्धन सागर सूरीश्वरजी म.सा. पू.आ.श्री हर्ष सागर सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में **युवा मुमुक्षु निरव और अंकुर** त्याग के मंगल मार्ग दीक्षा का आलंबन लेने को तत्पर बने है।संघ हितचिंतक, प्राचीन तीर्थोद्धारक पूज्य पाद आचार्य भगवंत श्री हर्षसागर सूरी जी महाराज के शिष्य-प्रशिष्य गुरु कुल के मुनिश्री विनीतसागरजी म.सा., मुनि श्री विनम्र सागरजी म.सा. को अपना जीवन समर्पण करेंगे। प्रवज्या 7 मई को मुबंई के लालबाग में होगी, दीक्षा महोत्सव की व्यापक तैयारियां आरंभ हो गई है। प्रवज्या महोत्सव में देशभर के धर्मिष्ठों के साथ बड़ी संख्या में श्रेष्टिवर्य, राजनेता, समाजसेवी सम्मिलित होंगे।

15 दिन का संस्कार शिविर लगा

अंतरिक्ष तीर्थ-यहां पूज्य पंन्यास प्रवर श्री चन्द्रशेखरविजयजी म.सा. के सुशिष्य एवं साध्वीश्री के सानिध्य में 15 दिवसीय संस्कार शिविर का आयोजन हुआ। 23 अप्रेल से 7 मई तक आयोजित शिविर में 10 से 20 वर्ष के बालक-बालिकाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

सुव्रत उदय उपधान महोत्सव

चैन्नई- पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री उदयप्रभ सूरीश्वर जी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में चैन्नई में श्रावक से श्रमण बनने धर्म क्रिया आराधना का आयोजन होने जा रहा है। उपधान तप में प्रवेश का प्रथम मुर्हूत 23 अप्रेल 2023 को हुआ। उपधान तप की माल दिनांक 11 जून 2023 को होगी। उपधान तप के लाभार्थी संघवी सरोज बहन कोठारी परिवार है।

मुनिश्रीविशुद्धरत्नसागर जी का वर्षीतप पारणा हिमालय की वादियों में

उज्जैन- पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्यदेवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा के गुरुकुल के रत्न मुनिश्री विशुद्धरत्न सागरजी एवं मुनिश्री समकितरत्न सागर जी म.सा. हिमालय की यात्रा पर है, नाम के अनुरुप शुद्ध सात्विक चारित्रा का पालन करने वाले मुनिश्री एकांत में रहते हुए साधना करते रहे है, मोबाईल आदि से सम्पर्क से दूर रहने वाले मुनिश्री हिमालय के दुर्गम पर्वतों पर आराधना कर रहे है। मुनिश्री विशुद्ध सागरजी म.सा. का वर्षीतप पारणा हिमाचल की वादियों में लगभग 15000 फीट ऊपर हिमालय की पर्वत श्रृंखलाओं की उपस्थिति में हुआ।

लंदन में प्रतिष्ठा महोत्सव

मुंबई- पूज्य आचार्य भगवंत श्री नयप्रभसागरसूरीजी म.सा. के वरद हस्ते अंजनशलाका की गई। श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की प्रतिष्ठा का आयोजन लंदन के जैन सेन्टर में स्थित जिनालय में किया जायेगा। दिनांक 23 से 28 अगस्त तक प्रतिष्ठा का आयोजन होगा। प्रतिष्ठा 27 अगस्त को होगी। लंदन में निर्मित जैन सेन्टर में भोजनशाला, उपाश्रय, पठन-पाठन आदि की सुन्दर व्यवस्था की गई है, यह प्रति वर्ष महापर्व पर्युषण, ओली आराधना जैसे सभी आयोजन आयोजित होंगे।

भूमि पूजन का आयोजन हुआ

शंखेश्वर- श्री शंखेश्वर महातीर्थ में निर्माण होने वाले श्री पार्श्व भैरव सुशीलधाम का भूमि पूजन 3 मई को सम्पन्न हुआ। पूज्य आचार्य भगवंत श्री जिनोत्तमसूरीजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंत की निश्रा रही। जहाज मंदिर के सामने 36000 फीट में विशाल धर्म संकुल का निर्माण होने जा रहा है।

साध्वी श्री सूर्यकांताश्रीजी की स्मृति में महोत्सव मना

खाडोतिया- इन्दौर जिले के खाड़ोतिया में पूज्य साध्वी श्री सूर्यकांता श्रीजी के स्मरण में पंचान्हिका महोत्सव का आयोजन किया गया। दिनांक 12 से 16 अप्रेल तक आयोजन महोत्सव के अंतर्गत श्री आदिनाथ पंचकल्याण पूजन श्री माणिभद्र हवन पूजन, 18 अभिषेक, श्री भक्तामर महापूजन, स्नात्र महोत्सव तथा श्री सिद्धचक्र महापूजन पढ़ाई गई।

वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी का जन्म दिन देपालपुर में जीवदया दिवस के रुप में मनाया

✻ गोशाला में 82 किलो नुक्ती गाय को खिलाई गई। ✻ मोती अक्षत से बधाया गया, 90 रुपये श्रीफल की प्रभावना हुई। ✻ गुणानुवाद सभा, साधर्मिक वात्सल्य हुआ। ✻ पूज्यश्री का चार्तुमास पूना में होगा।

देपालपुर- सागर समुदाय के वरिष्ठ जैनाचार्यपूज्यपाद वचनसिद्ध जैनाचार्य श्री नरदेवसागरसूरीजी महाराजा एवं आयंबिल तपाराधक मुनिराज श्री पद्मकीर्तिसागरजी म.सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में पूज्यश्री का 82 वां जन्म दिन बहुत उत्साह उमंग के साथ मनाया गया। श्री संघ ने 11 बजे तक व्यवसाय बंद रखकर गुरुदेव के जन्म कार्यक्रम में सम्मिलित हुआ। भव्य गुणानुवाद सभा में पूज्यश्री के चारित्रिक गुणों के गुणगान किये गये। डॉ. सुभाष जैन ''आगमोद्धारक'' ने पूज्यश्री के प्रसंगों का स्मरण कर पूज्यश्री के अपरिग्रह गुण की विवेचना की। बाद में पूज्यश्री का मोती और अक्षत से बधाया गया। गुरुपूजन और बधाने की बोली अच्छी हुई। श्री सिरपुर जैन संघ महाराष्ट्र में पूज्यश्री की निश्रा में दिनांक 22 से 26 अप्रेल तक जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव मनाया गया। दिनांक 22 अप्रेल को प्रवेश के बाद धर्मसभा में ध्वजा और अतिथि भवन के उद्घाटन के चढ़ावे हुए। दिनांक 23 अप्रेल को पूज्यश्री के 67 संयम वर्ष पर गुणानुवाद हुई। श्री सुमतिनाथ प्रभु जिनालय का ध्वजारोहण हुआ। दिनांक 24 अप्रेल को 108 पार्श्वनाथ महापूजन तथा 25 अप्रेल को श्री ऋषिमंडल पूजन हुई। दिनांक 26 अप्रेल को आचार्यश्री के 31 वें आचार्य पद वर्ष पर सामुहिक सामायिक, आयंबिल और पूजन का आयोजन किया गया।

पूज्य जैनाचार्य श्री नरदेवसागर सूरीजी महाराजा ने उज्जैन में वर्षीतप आराधना का शुभांरभ करवायाहै **पूज्यश्री की प्रेरणा सेडॉ.सुभाष जैन ''आगमोद्धारक'' परिवार ने मुख्य लाभार्थी बनने का सौभाग्य प्राप्त किया।** मुनिराज श्री पद्मकीर्तिसागर जी म.सा. को वर्धमान तप की 98 वीं ओलीजी दिनांक 22 मई को पूर्ण होगी। आपका 100 वी ओली जी का पारणा मेरु महोत्सव पूना में होगा।

सलोनी संसार त्याग प्रभुवीर की श्रमणी परम्पराओं को स्वीकार कर संयम लेगी

उज्जैन- उज्जैन के श्री विमलजी भण्डारी परिवार की सलोनी उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बाद भी मुक्ति का दर्शन करानेवाली साध्वी श्री मुक्तिदर्शना श्रीजी की प्रेरणा और मार्गदर्शन में श्रमणी जीवन स्वीकार करने जा रही है। सलोनी भंडारी भंडारी ने एमबीए किया है। उनका एक भाई शुभम और बहन तनषी है। पिता विमल भंडारी सराफा व्यापारी है। भंडारी तीन साल से संतों के सानिध्य में है। सलोनी का प्रवज्या महोत्सव 29 अप्रेल से 3 मई तक मनाया जायेगा। पूज्य आचार्य श्री मतिचंद्रसागर सूरीजी म.सा. एवं गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा. के साथ विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की अमृत निश्रा में यह प्रवज्या महोत्सव मनाया जायेगा। दिनांक 29 अप्रेल को श्री माणिभद्रवीर हवन अनुष्ठान और बांदोली हुई। दिनांक 30 अप्रेल को शुक्रस्तव अभिषेक, सांस्कृतिक कार्यक्रम जम्बु स्वामीनायक तथा 1 मई को वस्त्र रंगोत्सव वर्षीदान का आयोजन हुआ। दिनांक 2 मई को वर्षीदान वरघोड़ा निकला, बिदाई उत्सव मना, 3 मई पूज्य गुरु भगवंतों की निश्रा में शुभ लग्नांश वेला में दीक्षा क्रियाविधि आरम्भ हुई। नूतन साध्वीश्री के पगले संसारी परिवार में 4 मई को हुए।

आगम मंदिर में आवसीयसंस्कार शिविर

पूना-संघ स्थविर सुविशाल सागर समुदाय के गच्छाधि पति गीतार्थ मूर्धनय जिनागाम सेवी आचार्य भगवंत श्री पूज्यपाद श्री दौलतसागरसूरीजी महाराजा पूज्य नंदिवर्धन सागर सूरीजी म.सा. पू.आ.श्री हर्षसागर सूरीजी म. सा.आदि ठाणा की अमृत निश्रा में बच्चों और युवाओं लिये शासन स्पर्श शिविर का आयोजन 7 दिवस के लिये किया गया। 23 अप्रेल से 1 मई तक हुए शिविर में जिन शासन के प्रति समर्पण भाव लाने के लिये शासन की अनेक विशेषताओं से अवगत कराया गया। बालमन में शासन के प्रति अनुराग पैदा करने के लिये अरिहंत परमात्मा और जैन साधु जीवन के साथ जैन संस्कारों के सम्मिलित समन्वय के द्वारा बच्चों और युवाओं में जैन संस्कारों के आचरण में लाने के लिये प्रयास किया गया।

हमारे तीज-त्यौहार

1- वैशाख सुद-11	सोमवार	1-5-2023	श्री गौतम स्वामी आदि-11 गणधर की दीक्षा- श्री संघ स्थापना दिन
2- वैशाख सुद-13	बुधवार	3-5-2023	पंन्यास श्री अभ्युदयसागरजी म.सा. की दीक्षा तिथि
3- वैशाख सुद-15	शुक्रवार	5-5-2023	श्री गिरनार तीर्थ वर्षगांठ, चन्द्रग्रहण
4- ज्येष्ठ वदी-5	बुधवार	7-5-2023	आगमोद्धारक श्री सागरानंद सूरीजी का कालधर्म दिन (संवत् 2007)
4- ज्येष्ठ वदी-6	गुरुवार	8-5-2023	श्री सिद्धाचल महातीर्थ दादा श्री आदिश्वर प्रभु की 492 वर्षगांठ (वि.सं. 1587)
5- ज्येष्ठ सुदी-2	रविवार	21-5-2023	रोहिणी

पंचक :- **आरम्भः**- ज्येष्ठ वदी-8, शनिवार, दिनांक 13/5/2023, समय- 00.19 बजे से
समाप्तः- ज्येष्ठ वदी-13, बुधवार, दिनांक 17/5/2023, समय- 07.39 बजे तक

पुष्प नक्षत्र :- **आरम्भः**- ज्येष्ठ सुदी-5, बुधवार, दिनांक 24/5/2023, समय- 15.06 बजे से
समाप्तः- ज्येष्ठ सुदी-6, गुरुवार, दिनांक 25/5/2023, समय- 15.06 बजे से

आगमोद्धारक के आगामी विशेषांक
✻ जुलाई 2023- चार्तुमास, श्री आगमोद्धारकश्री जन्म विशेषांक
✻ सितम्बर 2023- महापर्व पर्युषण विशेषांक।
✻ अक्टूबर 2023- दीपावली विशेषांक।

✻ नवम्बर 2023- मेरु महोत्सव विशेषांक- सागर गच्छाधिपति को समर्पित। आपकी रचनाएं भेजिए।

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चार्तुमास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

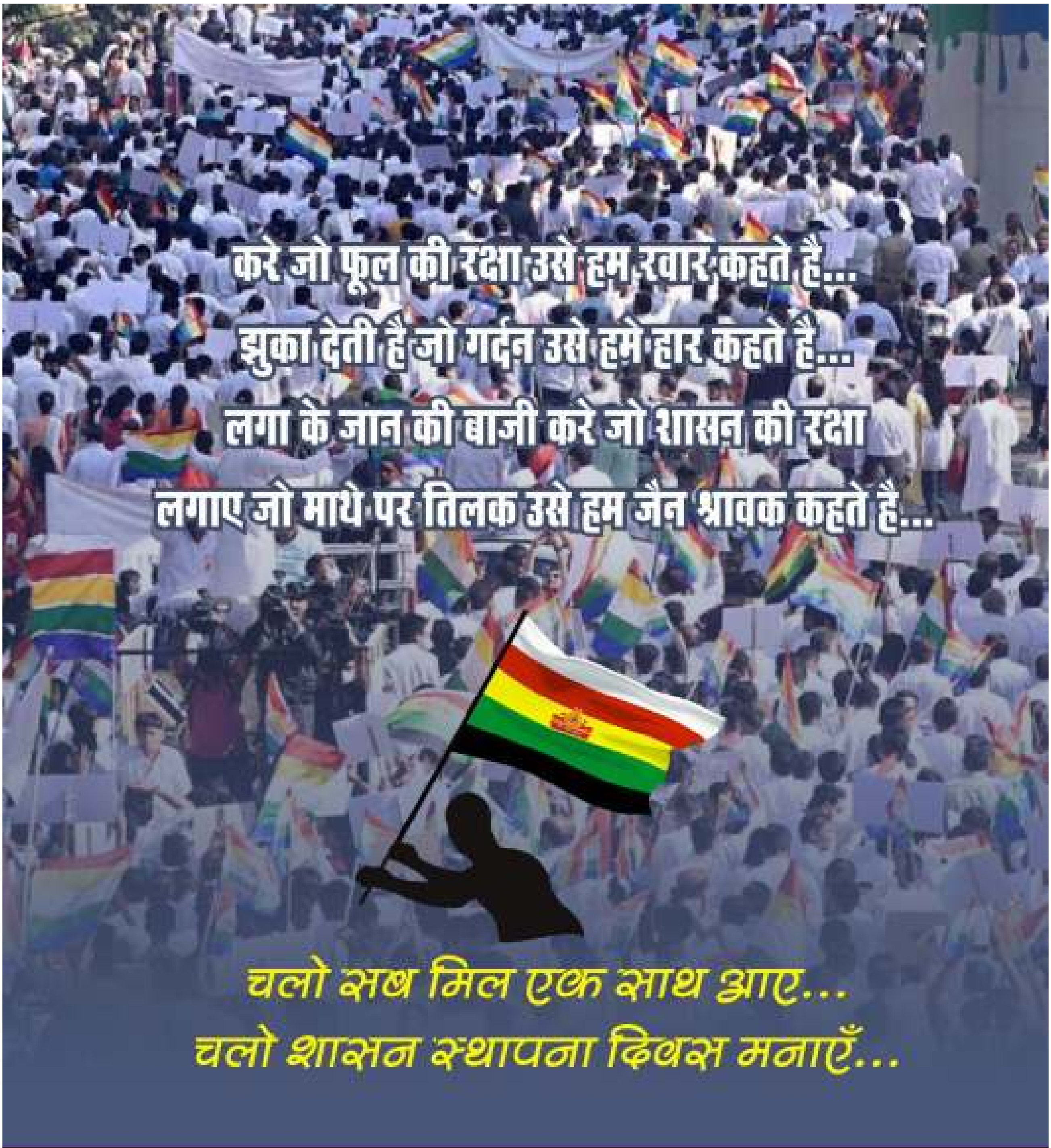

वर्ष 28 | वैशाख-आषाढ | मई-2023 | अंक 5 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

प्राप्त न होने पर कृपया लौटायें-

डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

प्रति, बुक पोस्ट

श्रीमान् ....

....

....

स्टाम्प टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स, 285, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897